प्रकाशकः—
जिनदत्तसूरि-ज्ञानभंडार, कार्यकर्ता-श्री. फकीरभाई
पानाभाई झवेरी, गोपीपुरा, सुरत.

मुद्रकः—
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी,
निर्णयसागर प्रेस, २६।२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २

प्राप्तिस्थान—
जिनदत्तसूरिज्ञानभण्डार ठि० गोपीपुरा, सीतलवाडी
उपाश्रय, मु० सुरत, (गुजरात)

पंचप्रतिक्रमणका हिसाब

कुलजमा ४४३७)

२९७६) फॉर्म नग इकतीस कागजसहित छपाई
१०००) एक हजार पुस्तक की जिल्द बंधाई
२३०) विधि-ब्लॉक-निर्माण और छपाई
१२४) संशोधन-दक्षिणा
१५) विधि-चित्र बनवाने का
९२) पारसल, पॅकिंग वगैरह

४४३७) कुल खर्च

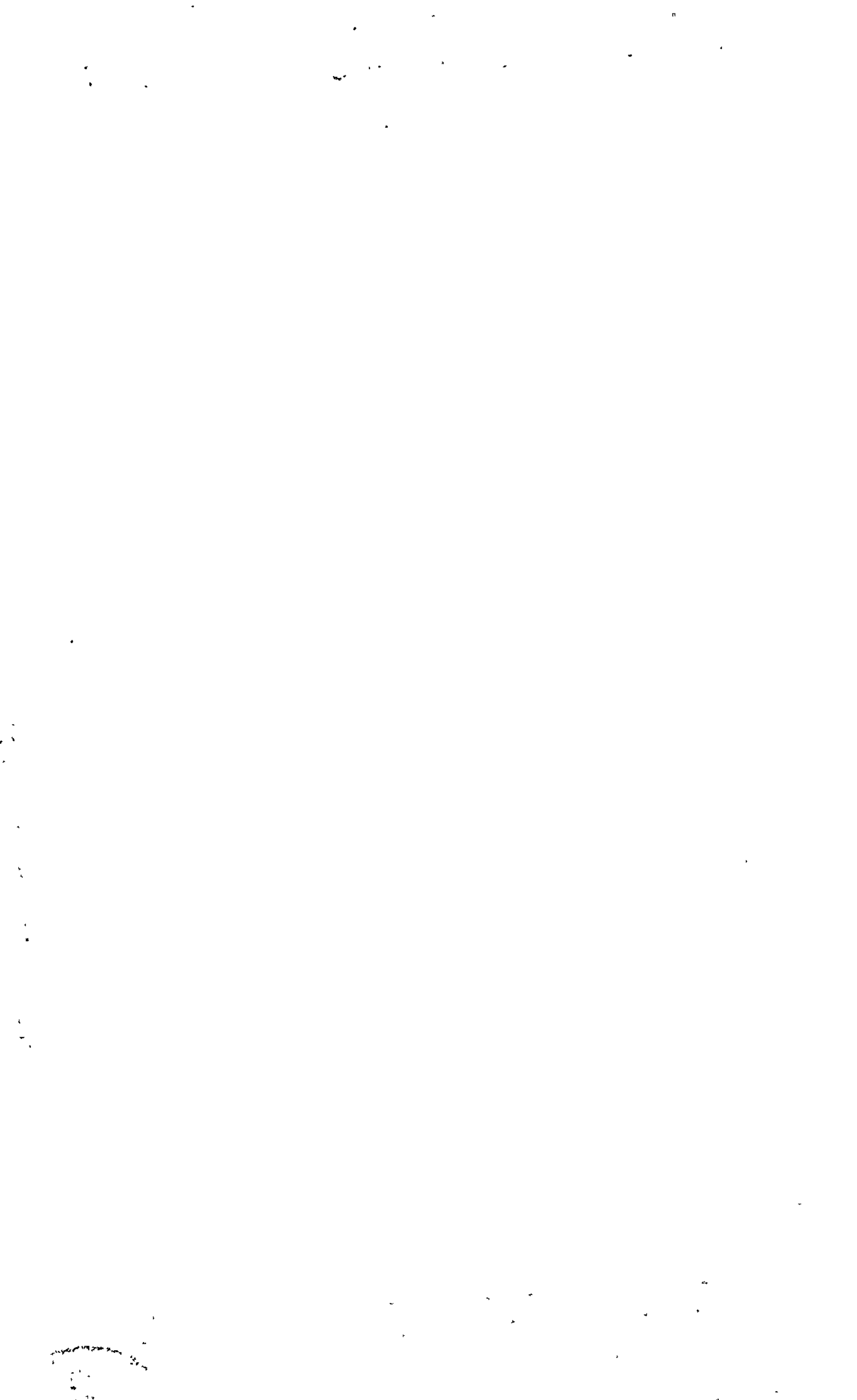
नोटः—।=) स्टंप भेजनेपर यह पुस्तक भेंट भेजी जायगी।

आचार्य श्री १००८ श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजके शिष्यरत्न

उपाध्यायपदविभूषित मुनिराज श्री सुखसागरजी महाराज



शिष्य मुनि श्री मंगलसागरजी, शिष्य मुनि श्री कान्तिसागरजी



प्रथमावृत्ति का

निवेदन

संवत् २००० वर्षमें पूज्य गुरुवर्य्य उपाध्याय मुनिश्री सुखसागरजी महाराजने राजनांदगांवमें चातुर्मास किया था, उस वख्त में श्रीसंघने उपधान तप महोत्सव करवाया था, जिसमें कई नगरनिवासी श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ था। उस समय पूज्य गुरुमहाराजने पंचप्रतिक्रमण प्रकशित करनेकी प्रेरणा की, जो कि यहां पर ऐसे धार्मिक ग्रंथों का सर्वथा अभाव था, जिससे कई लोग आवश्यक ज्ञानसे वंचित रह जाते थे। उक्त प्रेरणाके फलस्वरूप उनके द्वारा प्रदत्त अर्थिक साहायता से कार्य चालु हो गया और रायपुर, महासमुद, नवापारा आदि नगरों के निवासीओंने प्रदत्त द्रव्यद्वारा सम्पूर्ण हुवा जिसके फलस्वरूप प्रस्तुत पंचप्रतिक्रमण प्रकाशित किया गया है। (सं. २००२)

द्वितीयावृत्ति का

निवेदन

प्रस्तुत ग्रंथमें प्रथम आवृत्ति की अपेक्षया कुछ आवश्यक सामग्री अधिक मिलाई गई है। और साथमें धार्मिक क्रियाओंके चित्र डालकर ग्रंथ सुशोभित करनेका प्रयत्न किया गया है। यों तो धार्मिक क्रियाओंके चित्र प्राचीन कालसे आबू के जैन मन्दिरों में सविस्तृत रूपसे खुदे हुए हैं। उसी के अनुकरणरूप अर्वाचीन धार्मिक चित्रोंसहित पंचप्रतिक्रमणकी पुस्तकें बहुतसीं प्रकाशित हो चुकी हैं, उसी प्रकार यह भी चित्रोंसहित धर्मप्रेमी सज्जनों के लिये आवश्यकीय ज्ञानलाभार्थ प्रकाशित हो रहीं है। इस ग्रंथ के प्रकाशन में पूज्यगुरुवर उपाध्याय श्री. १००८ मुनिसुखसागरजी महाराज के सदुपदेशसे जिन जिन श्रावक-श्राविकाओंने आर्थिक सहायता अर्पण कर ज्ञान-भक्ति का परिचय दिया है उनकी नामावली पृष्ठ ४ पर दी है वे सभी धन्यवादके पात्र हैं। इस ग्रंथ का संशोधन निर्णयसागर का संशोधन-विभागके प्रधानशास्त्री पं० नारायण राम आचार्य जी ने किया है, तथापि दृष्टि-दोषसे कोई त्रुटि रह गई हो तो सज्जनगण क्षमा करें।

सं. २००९ पो. व. १
मु. सिवनी (म. प्र.)

सर्वजनशुभाकांक्षी,
मुनि मंगलसागर

श्री पंचप्रतिक्रमण-सूत्र-प्रकाशनमें द्रव्यसहायकों की

नामावली

४०१ देवीचन्दजी नेमीचन्दजी मालू मु. सिवनी
४०१ कस्तुरचन्दजी डागाकी धर्मपत्नी सौ. लक्ष्मीवाई मु. वैतूल
३०१ तुलसीवाई नाजुवाई पारख मु. राजनांदगांव
२५१ श्री महावीरस्वामी जैनदेरासरसे (पायधुनी)
ट्रस्टीमंडलद्वारा, हस्ते झवेरभाई मु. वम्बई
२५१ रामचन्दजी भूराकी धर्मपत्नी सौ. मीरावाई मु. सिवनी
१५१ हमीरमलजी दुग्गड मु. रायपुर
१५१ जोगराजजी ललवानीकी धर्मपत्नी हाऊवाई मु. राजनांदगांव
१०१ मगनमलजी चोपड़ा की धर्मपत्नी सौ. रतनवाई ,, ,,
१०१ वावूलालजी पारख की धर्मपत्नी सौ. झंकारवाई ,, ,,
१०१ धनराजजी सुराना की धर्मपत्नी सुन्दरवाई मु. हट्टा
१०१ रूपावाई कांकरीया मु. राजनांदगांव
१०१ रतनचन्दजी गोलेच्छा माता श्रेयार्थ मु. जवलपुर
१०१ शिखरचन्दजी मालू की धर्मपत्नी सौ. पद्मावतीवाई मु. सिवनी
१०१ माणकचन्दजी घेवरचन्दजी मालू ,, ,,
१०१ सौ. रतनवाई तरफसे ,, ,,
१०१ शिवराजजी गोलेच्छा की धर्मपत्नी
७५ गुलावचन्दजी वैद्य की धर्मपत्नी सौ. जतनवाई मु. छिन्दवाडा
५१ लाभुजी गोलेच्छा की धर्मपत्नी सुरमावाई मु. राजनांदगांव
५१ पूनमचन्दजी कोचर मु. सिवनी
५१ मनोहरवाई वांगानी मु. राजीम
५१ धापूवाई छाजेड मु. राजनांदगांव
५१ मोतीलालजी लूनावतकी धर्मपत्नी पद्मवाई ,, ,,
५१ चंपालालजी वैद्य की मातुश्री लूनीवाई ,, ,,
५१ दीपचन्दजी वैद्य ,, ,,
५१ गुलराजजी वैदकी धर्मपत्नी सौ. जमनावाई मु. राजनांदगांव
५१ चंद्रभाणजी नाहट्टा माताजी मु. मंडला

५१ आसीबाई बेगानी ,, रायपुर
५१ अमरचन्दजी गोलेच्छा की धर्मपत्नी जमनाबाई ,, राजनांदगांव
५१ दीपचन्दजी चोपडा की धर्मपत्नी सौ. कृश्निबाई ,, ,,
५१ सम्पत्तलालजी छाजोडकी धर्मपत्नी सौ. हरकुबाई ,, ,,
५१ छोगमलजी नाहटा की धर्मपत्नी ,, सिवनी
५१ मगनमलजी चोरडीया की धर्मपत्नी अंचिबाई मु. नागपुर
५१ कस्तूरचन्दजी चोपडा की धर्मपत्नी चन्दाबाई ,, गौंदिया
५१ रीखबचन्दजी भूरा की धर्मपत्नी भवरीबाई ,, जबलपुर
५१ जीयाँबाई सिंघई ,, बालाघाट
५१ चम्पालालजी कोचर ,, कटंगी
५१ पूनमचन्दजी गुलाबचन्दजी गोलेच्छा ,, बम्बई
५१ राघवजी माधवजी की कम्पनी ,, बम्बई
५० चुन्नीलालजी नाहटा धर्मपत्नी सौ. रुखमीबाई ,, सिवनी
५० केसरीचन्दजी वैद्य ,, अर्जुनी
४० कन्हैयालालजी छाजेड की ध० सौ. पानीबाई ,, राजनांदगांव
४० गुलाबबाई पारख ,, ,,
२५ केसरबाई भन्साली ,, ,,
२५ मानकचन्दजी सुराना ,, बारा सिवनी
२५ सम्पत्तलालजी जन्दानी की धर्मपत्नी ,, भाटापारा
२५ जोगराजजी सुराना की धर्मपत्नी कमलाबाई ,, बारा सिवनी
२५ लूणकरणजी वैद ,, राजनांदगांव
२५ कमलाबाई बाफना ,, बालाघाट
२५ सम्पत्तलालजी लूनिया की धर्मपत्नी केसरबाई ,, राजनांदगांव
२५ हीरालालजी लूनावत की धर्मपत्नी सोनीबाई ,, ,,
२५ बदामबाई चोराडीया ,, जबलपूर
२५ राजमलजी सुराना की धर्मपत्नी सौ. चम्पाबाई ,, बारा सिवनी
२५ हरीचन्दजी सुराना की धर्मपत्नी चम्पाबाई ,, ,,
२० नेमीचन्दजी गोलेच्छा की धर्मपत्नी मु. राजनांदगांव

रु. ४४३७ जमा कुल जोड़

विषयानुक्रमणिका ।

विषय पृष्ठ

अर्हम्

श्रीस्तंभनपार्श्वनाथाय नमः ।

श्रीखरतरगच्छीय श्रावकों का

श्रीप्रतिक्रमणसूत्र ।

विधिसहित ।

प्राभातिक सामायिक लेने की विधि ।

(सबसे प्रथम श्रावक और श्राविका पडिलेहन किये हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, पट्टा प्रमुख उच्च स्थान की प्रमार्जना करके ठवणी-स्थापनाचार्यजी, पुस्तक, माला आदि को स्थापन करे । बाद में कटासना, मुँहपत्ति, चरवला पास में ले सामायिक करने की जगह पूंज कर बैठे, वाद बाँये हाथ में मुँहपत्ति ले कर मुँहके सामने रखे । और जमना हाथ स्थापन की हुई पुस्तक आदि के सामने करके तीन नवकार गिने)—

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं ।

णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं ।

णमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच णमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥[1]

(इस प्रकार तीन नवकार गिने । यदि प्रतिष्ठित स्थापनाचार्यजी-हो तो तेरह बोल से स्थापनाजी की पडिलेहना करे)

शुद्ध स्वरूप धारे (१), ज्ञान (२), दर्शन (३), चारित्र (४), सहित सद्दहणा-शुद्धि (५), प्ररूपणा-शुद्धि (६), दर्शन-शुद्धि (७), सहित पांच आचार पाले (८), पलावे (९), अनुमोदे (१०), मनोगुप्ति (११), वचनगुप्ति (१२), कायगुप्ति आदरे (१३)

(पीछे चरवला मुँहपत्ति हाथ में ले कर गुरुजी को या स्थापनाचार्यजी को खडे हो कर वंदन करे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

---

१ अरिहंत के १२ गुण, सिद्धभगवान् के ८ गुण, आचार्यमहाराज के ३६ गुण, उपाध्याय महाराज के २५ गुण, साधुमहाराज के २७ गुण, सब मिलाने से १०८ गुण होते हैं, और नवकरवाली में १०८ मणके होते हैं । माला जपने से पंच परमेष्ठी के गुणों का स्मरण होता है ।

(इस प्रकार तीन खमासमण देना, पीछे खडे ही रह कर)

इच्छकार भगवन्! सुहराइ, सुहदेवसि सुखतप शरीर निराबाध सुखसंयमयात्रा निर्वहो छो जी? स्वामी साता छे जी?

(ऐसा कह कर, नीचे बैठ कर, दहिने हाथ को चरवले पर या नीचे रख कर, मस्तक नीचे नमा कर नीचे का सूत्र [1]बोले—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं इच्छं, खामेमि राइअं॥ जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(इस प्रकार बोल कर पीछे नीचे लिखे अनुसार बोलना)

---

१ त्यागी और क्रियावान् गुरुवंदन करने योग्य हैं, पासत्था (शिथिलाचारी) गुरुको वंदन करने से कर्मों की निर्जरा नहि होती, केवल कायक्लेश और कर्मबंधन होता है। आगम में कहा है "पासत्थाई वंदमाणस्स नेव कित्ती न निज्जरा होइ, कायकिलेसं एमेव कुणई तह कम्मबंधं च॥ १॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुहपति पडिलेहुं ? 'इच्छं'। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(ऐसा बोल कर मुँहपत्ति की पडिलेहना नीचे लिखे पचीस बोल मन में बोलते हुए करे ।)

१ सूत्र अर्थ साचो सद्दहूं, २ सम्यक्त्वमोहनीय, ३ मिथ्यात्व-मोहनीय, ४ मिश्र-मोहनीय परिहरूं। ५ कामराग, ६ स्नेहराग, ७ दृष्टिराग परिहरूं।

(ये सात बोल मुहपत्ति खोलते समय कहने चाहिये)

१ ज्ञानविराधना, २ दर्शनविराधना, ३ चारित्रविराधना परिहरूं । ४ मनोगुप्ति, ५ वचनगुप्ति, ६ कायगुप्ति आदरूं। ७ मनोदंड, ८ वचनदंड, ९ कायदंड परिहरूं ।

(ये नव बोल दहिने हाथ का पडिलेहन के समय कहना चाहिये)

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूं। ४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूं। ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरूं।

(ये नव बोल बाँये हाथ का पडिलेहन के समय कहना चाहिये। अब नीचे लिखे पचीस बोलों से अँग की पडिलेहना करे, अर्थात् जिस अँग का नाम आवे उसी अंग को मुँहपत्ति से स्पर्श करे)—

१ कृष्णलेश्या, २ नीललेश्या, ३ कापोत-लेश्या, ये तीन निलाडें मस्तके परिहरूं। १ ऋद्धि-गारव, २ रसगारव, ३ सातागारव ये तीनुं मुखे परिहरूं। १ मायाशल्य, २ नियाणशल्य, मिथ्यादंशनशल्य ये तीन हृदये परिहरूं। १ क्रोध, २ मान, ये दोनों दहिने कंधे परिहरूं। १ माया, २ लोभ ये दोनों बांये कंधे परिहरूं। १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ये तीन बांये हाथे परिहरूं। १ भय, २ शोक, ३ दुगंछा ये तीन

दहिने हाथे परिहरूं । १ पृथ्वीकाय, २ अप्-काय, ३ तेऊकाय ये तीन बांये चरणे परिहरूं । १ वायुकाय, २ वनस्पतिकाय, ३ त्रसकाय ये तीन दहिने चरणे परिहरूं ।

(इस प्रकार मुँहपत्ति की पडिलेहना करे । पीछे खडे हो कर)-

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसावुं ? 'इच्छं' ॥ इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? 'इच्छं' ॥ इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(अब यहां हाथ जोड मस्तक नीचे नमा कर तीन नवकार गिने ।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच णमुक्कारो । सव्वपाव-

प्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

तीन वार नवकार मंत्र बोले। पीछे 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी'। ऐसा कहकर स्वयं तीन वार 'करेमि भंते' उच्चरे। यदि गुरुमहाराज या कोई बडे हो तो वे तीन वार उच्चरावे।)

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। (तीन वार कहना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा

विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं वि-सोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवं-ताणं, णमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहाँ एक लोगस्सका या चार नवकार का काउस्सग्ग करे।[1] पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहे।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीणजरमरणा। चउविसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

---

[1] इरियावहि मे अढार लाख चौवीस हज़ार एकसौ वीस (१८२४१२०) मिच्छामि दुक्कडं की संख्या है।

(फिर खमासमण दे कर)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो संदिसावुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो ठाउं 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसावुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि! इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(इस प्रकार खमासमण दे कर आठ नवकार गिने। शीतकालमें वस्त्र की आवश्यकता हो तो)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पांगुरणो संदिसावुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पांगुरणो पडिग्गहुं? 'इच्छं'।

(इस प्रकार दो खमासमण दे कर वस्त्र ग्रहण करे। पीछे दो घडी (४८ मिनिट) स्वाध्याय ध्यान करे या प्रतिक्रमण करे। सामायिक में वा पौषध में सामायिक और पौषधवाला व्रती श्रावक आपस में वन्दन करे तो 'वंदामो' कहे और अव्रती वन्दन करे तो 'सज्झाय करेह' ऐसा कहे।)

॥ इति सामायिक लेने की विधि ॥



राइय-प्रतिक्रमण-विधि।

(प्रथम पूर्वोक्त रीति से सामायिक ले कर पीछे[1])

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं? 'इच्छं'।

(ऐसा कह कर बायां घुटना ऊंचा करके नीचे लिखे अनुसार "जयउ सामिय०" बोलना)

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण। भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागयसंपइअ, वंदुं जिण सव्वेवि ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ। नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहू

---

[1] पौषध में रहा हुआ श्रावक कुसुमिण दुसुमिण का काउस्सग्ग करके पीछे चैत्यवन्दन करते हैं।

गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुंकोडिहिं वरनाण, समणह कोडिसहस्स दुअ थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ । चउसय छायासीया, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना । अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्म-

दयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर - चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव - मयल - मरुअ - मणंत - मक्खय-मवाबाह - मपुणराविति सिद्धिगइ - नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सवाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय - महाविदेहे अ । सवेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड - विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवस्सग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगल-कल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामर ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ! ॥ ५ ॥

जय वीयराय ! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूया परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! कुसुमिण - दुसुमिण - राइयपायच्छित्त - विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं? "इच्छं" कुसुमिण - दुसुमिण - राइयपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहाँ चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग पारके नीचे मुजब प्रगट 'लोगस्स' कहना)।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च

सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सी-अलसि-ज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि-थुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्य-जीमिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए, मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्याय-जीमिश्र' ॥ २ ॥

(यहां पर धर्माचार्य का नाम ले कर।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगम-युगप्रधान भट्टारक वर्त्तमान....मिश्र' ॥ ३ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्व-साधुजीमिश्र' ॥ ४ ॥

(कह कर दहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, गोडाली आसन से वैठ कर, मस्तक नमा कर, वायें हाथ से मुहपत्ति मुख के आगे रख कर सव्वस्सवि० वोले।)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं,

पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जो-अगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं। बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय—मव्वाबाहमपुणराविति, "सिद्धिगइ"—नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

[१ सामायिकावश्यक]

(अब खडे होकर बोलना।)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं

पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे राइयो अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं

छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि॥

(चारित्र विशुद्धि निमित्तं यहां एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे काउस्सग्ग पार करके "लोगस्स०" कहना।)

[२ चतुर्विंशतिस्तवावश्यक,]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल - सिज्जंस - वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं

नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए; निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं,

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दर्शनविशुद्धिके निमित्त एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना। पीछे नीचे मुजब "पुक्खरवरदीवड्ढे" कहना।)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम - तिमिर - पडल - विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण - पुक्खल - विसाल - सुहावहस्स । को देव - दाणव - नरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ

सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्डउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(ज्ञानविशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग में 'आजूणा चउप्रहर रात्रिसंबंधी' इत्यादि आलोयणा का चिंतवन करें । यदि न आता हो तो आठ नवकार का काउस्सग्ग करें । पीछे नीचे मुजब "सिद्धाणं बुद्धाणं" कहना ।)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपर-गयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउवीसं। परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

[३ वंदनावश्यक]

(बाद प्रमार्जन पूर्वक बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहन करे, पीछे नीचे लिखे मुजब दो बार वांदणा देवे।)

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे

किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राइवइ-
क्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि
खमासमणो राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए
पडिक्कमामि, खमासमणाणं, राइआए आसाय-
णाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मण-
दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए
माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-
मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसाय-
णाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमा-समणो।
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसि-
रामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि,
अहो-कायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो
अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे, राइवइक्कंता ?
जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो
राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि

मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए, सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

[४ प्रतिक्रमणावश्यक]

(फिर खडे होकर बोलना।)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राइअं आलोउं? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे राइयो अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

आजुणा चार प्रहर रात्रिमें जे में जीव विराध्या होय, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति-काय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, दोय लाख बेइंद्रिय, दोय लाख तेइंद्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चउद लाख मनुष्य, एवं चार गतिके चोरासी लाख *जीवायोनिमें, माहारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सर्वें हुं मन वचन कायाएं करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति-

अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे मायामृषा-वाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य; ए अढार पाप स्थानकमांही माहारे जीवे जे कोई पाप सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सर्वे हु मने, वचने, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देव गुरु धर्म की आशा-तना करी होय, पन्नरे कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्त-कथा करी होय, और जो कोई पाप परनिंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन, वचन, कायाये करके, रात्रिक अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणामें आलोउं। तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(नीचे बैठके दहिना हाथ चरवले या आसन पर रखके बोलना ।)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चि-

ट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! 'इच्छं' तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अव दहिना गोडा ऊँचा करके 'भगवन् सूत्र पढ़ें' 'इच्छं' कहकर तीन वार 'नवकार' तीन वार 'करेमि भंते' और 'इच्छामि पडिक०' कहकर 'वंदित्तु सूत्र' बोले।)

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचणमुक्कारो, सव्व पावप्पणा-सणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवि-हेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइ-आरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुवि-

चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ वंदित्तु-सूत्र ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ३ ॥ ज बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ

निओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अतट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयम्मी, थूलगपाणाइवाय-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयम्मी, परिथूलग-अलिअ-वयणवि-रईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-संगेणं ॥ ११ ॥ सहसा-रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयम्मी, थूलग-परदव्वहरण-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडि-

रूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदार-गमण-विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे । चउत्थ वयस्स-इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणु-व्वए पंचमंमि, आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाण-परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरि-माणे । दुपए चउप्पयम्मिय, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरियं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उव-भोग-परिभोगे, वीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि-दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे

राइअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी,-भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत-लक्ख रस-केसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसलजंतग, तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासणआभरणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए । पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खा-

वए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस-मच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए, परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपओगे । पंच-विहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु-सन्ना-कसाय-दंडे-सु । गुत्तीसु अ समिईसु अ; जो अइयारो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सप-डिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं

उवसामेइ, वाहिं व्व सुसिक्खओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कय-पावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचि-रेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ,

तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय-पावपणासणीइ, भवसयसहस्स-महणीए। चउ-वीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चा-णमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीय-परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिय दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय-संफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइ वइक्कंता? जत्ता भे! जवणिज्जं च भे?

खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि । खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए असायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे ? राइवइक्कंता ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्-

डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सवकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमासि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(अव "अब्भुट्ठिओमि" सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगा कर पढ़े)

अब्भुट्ठिओ-सूत्र-

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठि-ओमि अब्भिंतरराइअं खामेउं ? 'इच्छं' खामेमि राइअं । जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चा-सणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहमं वा वायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर नीचे मुताबिक दो वांदना देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-

डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(अब "अब्भुट्ठिओमि" सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगा कर पढ़े)

अब्भुट्ठिओ-सूत्र-

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भितरराइअं खामेउं ? 'इच्छं' खामेमि राइअं । जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर नीचे मुताबिक दो वांदना देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-

ज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे ? राइ-वइक्कंता ? जत्ता भे ! जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाण, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सवकालिआए सवमिच्छोवयाराए सवधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स मासखमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे ? राइअ

वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्न-यराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वय-दुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(अब मस्तक उपर अंजलि लगा कर बोलना)

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो। सव्वं खमाव-इत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

चन्द्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चौज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम्। नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे। ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ८ ॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कोण्डले मानुषाङ्के। इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्[illegible]र्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवनवल[illegible] लयानि ॥ ९ ॥ इत्थं [illegible]

ये पठन्ति प्रवीणाः, [illegible]

मलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम् [illegible]

तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते [illegible]

डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(अब "अब्भुट्ठिओमि" सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगा कर पढ़े)

अब्भुट्ठिओ-सूत्र-

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरराइअं खामेउं? 'इच्छं' खामेमि राइअं। जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उव जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहमं वायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि मिच्छामि दुक्कडं॥

(फिर नीचे मुताबिक दो वांदना देना

इच्छामि खमासमणो!

खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सि-आए पडिक्कमामि। खमासमणाणं राइआए आसा-यणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए असाय-णाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमास-मणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे? राइवइक्कंता? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खा-मेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्न-यराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्क-

डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(अब "अब्भुट्ठिओमि" सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगा कर पढ़े)

अब्भुट्ठिओ-सूत्र-

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरराइअं खामेउं ? 'इच्छं' खामेमि राइअं। जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर नीचे मुताबिक दो वांदना देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-

ज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे? राइ-वइक्कंता? जत्ता भे! जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! राइअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स मासखमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे? राइअ

वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्न-यराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वय-दुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व-धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(अब मस्तक उपर अंजलि लगा कर वोलना)

आयरिय-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो । सव्वं खमाव-इत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

(५ काउस्सग्ग आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे राइओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामा-इए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खाव-याणं, वारसविहस्स, सावग्गधम्मस्स जं खंडियं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं वि-सोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

"श्री महावीर स्वामी छम्मासी तव चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं" अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि॥

(काउस्सग्ग में श्री महावीरस्वामीकृत छम्मासि तपका चिंतवन करना। छह लोगस्स या चोवीस नवकार गिनना और जो पच्चक्खाण करना हो वह मन में धारकर काउसग्ग पारना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ २॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-

पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(६ पच्चक्खाण आवश्यक)

(अब छट्ठा आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना, फिर नीचे मुजब दो वंदना देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह, मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे,

राइवइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहो कायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राइ वइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नय-

राए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

सकल-तीर्थ-नमस्कार ॥

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्तराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसान्द्रान्धकारे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले हस्तिदन्ते, वक्खारे कूटनन्दीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवन्ते । चैत्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ २ ॥ श्रीशैले विन्ध्यशृङ्गे विपुल-

गिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले। सह्याद्रौ वैजयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे देवकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा। डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जङ्गले वाढमाले, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ५ ॥ अङ्गे वङ्गे कलिङ्गे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलङ्गे गौडे चौण्डे मुरण्डे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे। आद्रे माद्रे पुलिन्दे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ६ ॥ चम्पायां

चन्द्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चौज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम् । नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नाग-लोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे । ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ८ ॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुच-कनगवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कोण्डले मानुषाङ्के । इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-लयानि ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुकलि-मलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम् । तेषां श्री-तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां,

कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारी ॥ १० ॥

(पीछे)

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसायकरी पच्चक्खाण करूँ जी"

(ऐसा कह कर गुरुमुखसे या वृद्ध साधर्मिक के मुख से या स्वयं स्थापनाचार्य के सामने अपनी इच्छानुसार नवकारसहिअं आदि का पच्चक्खाण कर ले।)

जो सज्जन चौदह नियम स्मरण नहीं करते उनके लिये 'नमुक्कारसहिअं' का पच्चक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरामि।

जो सज्जन चौदह नियम प्रतिदिन स्मरण करते हैं उनके लिये 'नमुक्कारसहिअं' का पच्चक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खामि, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं,

खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ।

(पोरसी का पच्चक्खाण करना हो तो 'नवकारसहिअं' के स्थान पर 'पोरिसि' कहो । और उपवास एकासनादि पच्चक्खाण करना हो तो एक साथ लिखे हैं, वहांसे देख लो. पीछे)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(यहाँ पर स्त्रियाँ प्रतिक्रमण करती हों तो 'संसारदावानल' नी अनुसार कहे)—

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं

गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाऽहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम्। चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

(अगर पुरुष प्रतिक्रमण करते हों तो नीचे मुताबिक 'परसमयतिमिरतरणिं' की तीन गाथा कहें)—

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम्। रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसार-विहारकारि-दुरन्तभावारिगणा निकामम्। निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ सन्देहकारिकुनयागमरूढगूढ-संमोहपङ्कहरणामलवारिपूरम्। संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइ-गराणं, तित्थयराणं; सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहि-आणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयद-याणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्क-वट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछ-उमाणं; जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वा-बाहमपुणराविक्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संप-त्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।

(अब खडे होकर बोलना ।)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाभवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुइ कहना)—

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नन्द । नव करतनु निरुपम, नील वरण सुखकन्द ॥ अहि

लंछन सेवित, पउमावई धरणिंद । प्रह ऊठी प्रणमुं, नितप्रति पास जिणंद ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्म-लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउ-स्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसं-चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरि-हंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुइ कहना)—

कुलगिरि वेयड्ढ, कणयाचल अभिराम । मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखठाम । भुवणे-

सर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम । वर्त्ते ते जिनवर, पूरो मुझ मनकाम ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदम- हियस्य । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोह- जालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव- दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकि- न्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भग- वओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअ- णवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । स-

द्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ५ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भग-वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना)

जिहां अंग इग्यारे, बार उपांग छ छेद । दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउ भेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सत्त पदारथ जुत्त । सांभली सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥

जो देवाण वि देवो, जं देवा, पंजली नमंसंति।
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्ध-
माणस्स । संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं
वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसी-
हिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं
नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, अ वंदि-
आ जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठनिट्ठिअट्ठा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिट्ठिसमाहि-
गराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-
एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-
ग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसं-
चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-
संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अवि-
राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं

भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकारका काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुई कहना)—

पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष। सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष॥ समरो जिन भक्ति-सूरि कहे इक चित्त। सुख सुजस समप्पे, पुत्र कलत्र बहु वित्त॥ ४॥

(अब नीचे बैठ कर बाँया घुटना खडा कर बोलना।)

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहि-दयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनाय-गाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवर-नाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं;

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिवि-हेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्य-जीमिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्याय-जीमिश्र' ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजी-मिश्र' ॥ ३ ॥

(पूर्व में मुख कर पीछे उत्तर दिशा के सामने मुख करके तीन खमासमण दे कर श्रीसीमंधरस्वामि का चैत्यवंदन करे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि! इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं? इच्छं,
जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामी।
जय जय करुणाशांत दांत, भविजन हितकामी॥
जय जय इन्द्र नरिंद वृंद, सेवित शिर नामी।
जय जय अतिशयानंतवंत, अन्तर्गत यामी॥
पूरव विदेह विराजता ए, श्री-सीमंधर स्वाम।
त्रिकरण शुद्ध त्रिहु कालमें, नित प्रति करूं प्रणाम।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणविंबाइं ताइं, सव्वाइं वंदामि॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंवुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं; पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं; सवन्नूणं, सवदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मवाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिवि-हेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्य-जीमिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्याय-जीमिश्र' ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजी-मिश्र' ॥ ३ ॥

(पूर्व में मुख कर पीछे उत्तर दिशा के सामने मुख करके तीन खमासमण दे कर श्रीसीमंधरस्वामि का चैत्यवंदन करे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि! इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं? इच्छं,

जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामी।
जय जय करुणाशांत दांत, भविजन हितकामी॥
जय जय इन्द नरिंद वृंद, सेवित शिर नामी।
जय जय अतिशयानंतवंत, अन्तर्गत यामी॥
पूरव विदेह विराजता ए, श्री-सीमंधर स्वाम।
त्रिकरण शुद्ध त्रिहु कालमें, नित प्रति करूं प्रणाम।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं ताइं, सव्वाइं वंदामि॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं; पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं

चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं; बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय - मव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ - नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेणं तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

श्री सीमंधर-जिन-स्तवन ।

श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लालरे॥ परमपुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लालरे॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरू, भांगे सादि अनन्त लालरे । भाषक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनन्त लालरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र चंद्र चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लालरे । पद पंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लालरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरण कमल पिंजर वसे, मुझ मन हंस नितमेव लालरे । चरण शरण मोहि आसरो, भव भय देवाधिदेव लालरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ संवत अढार सत्यासीये, उत्तम मास आसाढ लालरे । सुद दसमी सुभ वासरे, वीकानेर मझार लालरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अधम उद्धारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लालरे । कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लालरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

जय वीयराय । जगगुरु ! होउ मम तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवस-ग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-लेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अवि-राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर "**नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः**" कह कर श्रीसीमंधरजी की थुई कहे।)

महीमंडणं पुण्णसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलनाणगेहं । महाणंदलच्छी वहुबुद्धिरायं सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥

(पीछे नीचे लिखे तीन खमासमणपूर्वक सिद्धाचलजी के सामने मुख करके सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन करे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं? 'इच्छं' ॥

जय जय नाभिनरिंद नंद सिद्धाचल मंडण । जय जय प्रथम जिणंदचंद, भवदुःख विहंडण ॥ १ ॥ जय जय साधु सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर । जय जय जगदानंद कंद, श्रीऋषभ जिनेसर ॥ २ ॥ अमृत सम जिन-

धर्मनो ए, दायक जग में जाण । तुझ पदपंकज प्रीतिधर, निशदिन नमत कल्याण ॥ ३ ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणविंबाइं, ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं; आइग-राणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहि-आणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभय-दयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्क-वट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछ-उमाणं; जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं; बुद्धाणं, वोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सवदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयम-व्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं

संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं । जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ।

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ-लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

सिद्धाचलगिरि भेट्यारे, धन्य भाग्य हमारा सिद्धा० (टेर) ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेता न आवे पारा । रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वारारे ॥ धन्य० ॥ सि० ॥१॥ मूलनायक श्री आदिजिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा । अष्टद्रव्य सुं पूजो भावे, समकित मूल आधारा रे ॥ धन्य० ॥ सि० ॥ २ ॥ दूर देशां-तरथी हूं आयो, श्रवणे सुणी गुण ताहरा । पतित

उद्धारण विरुद् तुमारो, एह तीरथ जग सारारे ॥ धन्य० ॥ सि० ॥ ३ ॥ भाव भगति सुं प्रभु-गुण गावे, अपना जनम सुधारा। यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यंच गति वारारे ॥ धन्य० ॥ सि० ॥ ४ ॥ संवत अठार त्र्यासी मास आषाढे, वदि आठम भौमवारा। प्रभुजीके चरण परतापके संघमें, "क्षमारतन" प्रभु प्यारारे ॥ धन्य ॥ सि० ॥ ५ ॥

जय वीयराय! जगगुरु!, होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुव-

सग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं, दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां एक नवकारका काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर श्रीसिद्धाचलजीकी थुई कहना ।)

शत्रुंजयगिरि नमियें, ऋषभदेव पुंडरीक ।
शुभतपनो महिमा, सुणि गुरुमुख निरवीक ।
सुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ।
करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥

इति राइयप्रतिक्रमणविधिः ॥



अथ पडिलेहनविधिः ।

(अब स्थिरता हो तो नीचे लिखी विधि के अनुसार पडिले-हन करें। और स्थिरता न हो तो दृष्टि पडिलेहन तो अवश्य करें।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहन संदिस्साउं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहन करूं ? 'इच्छं' ॥

(यहां मुँहपत्ति की पडिलेहन करें)—

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अंगपडिलेहण संदिसाउं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अंगपडिलेहण करूं ? 'इच्छं' ॥

(मुँहपत्ति, आसन, चरवला, धोती और कंदोरा की पडिले-हन करके फिर)

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी पडिलेहण पडिलेहाओजी ।

(ऐसा बोलकर स्थापनाचार्य की पडिलेहन करे । पीछे)—

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कह कर यहाँ मुँहपत्ति पडिलेहना । पीछे)—

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहन संदिस्साउं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि० । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उपधि पडलेहन करूं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कह कर कंबल वस्त्र आदि सब की पडिलेहन करे। पीछे पौषधशाला की प्रमार्जना करके काजा (कचरा) निरवद्य भूमि पर परठव कर नीचे लिखे अनुसार इरियावहियं करे।)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहाए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरिया-वहियं पडिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्-

मिउं, इरियावहिआए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे-ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया । एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो. जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट 'लोगस्स' कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

अथ सामायिक पारनेकी विधि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'॥

(यहां मुँहपत्ति पडिलेहना। पीछे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारेमि? 'तहत्ति'।

(ऐसा कह कर आधा अंग नमा कर 'तीन नवकार' गिने। पीछे घुटने टेक कर, शिर नमा कर, दहिना हाथ नीचे स्थापन करके नीचे मुताबिक 'भयवं दसण्णभद्दो' बोले)—

भयवं दसण्णभद्दो सुदंसणो थुलिभद्द वइरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेण, नासइ पावं असंकिया

भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण-माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय-मित्तंपि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं, वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसह संठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोद्धवो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधे लीधुं विधे कीधुं विधि करतां अविधि अशातना लगी होय, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, बत्तीस दूषणमांहि जो कोई दूषण लगो होय, सो सहु-मन वचन कायायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

॥ इति सामायिक पारनेकी विधि ॥

इति प्राभातिक-सामायिक-प्रतिक्रमण-विधिः संपूर्णः ॥

अथ संध्याकालीन सामायिक लेने की विधि ।

(दिनके अंतिम प्रहरमें पौषधशाला आदि में अथवा गृह के किसी एकान्त स्थानमें जा कर, उस स्थानका तथा वस्त्र का पडिलेहन करें । देरी हो गई हो तो दृष्टि पडिलेहन करें । साधुजी न हो तो तीन नवकार गिन कर स्थापना करे । पीछे स्थापनाचार्य के सामने बैठ कर, भूमि प्रमार्जन करके, बाँयी ओर आसन रखके और बाँयें हाथमें मुँहपत्ति लेकर नीचे का पाठ कहे)—

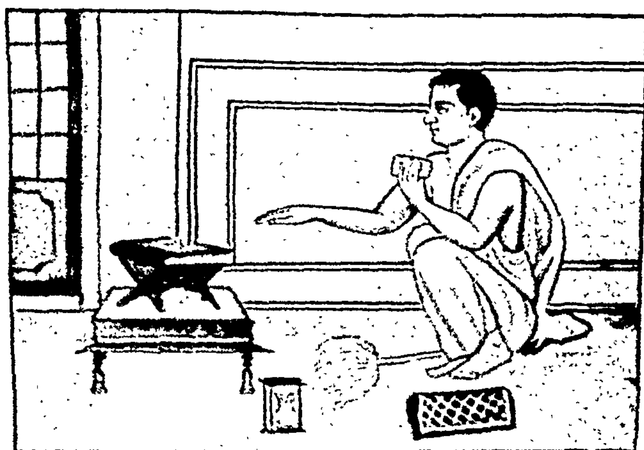
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कह कर मुँहपत्ति पडिलेहना, पीछे)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाउं ? 'इच्छं' ।

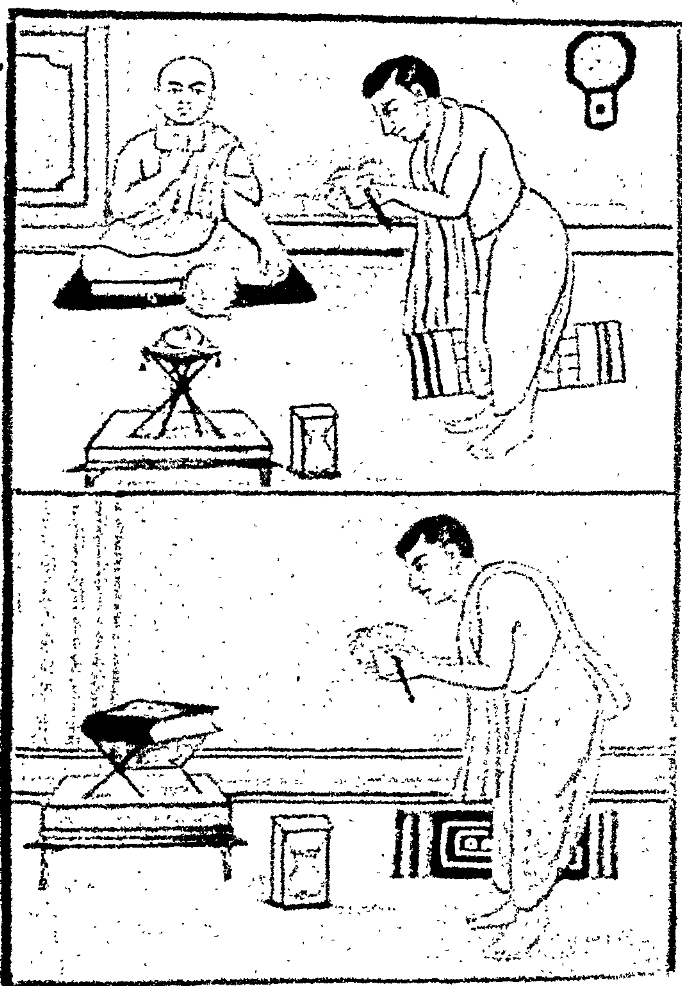
इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए

पुस्तक आदि स्थापन करने की विधिः—



तीन नवकार गिनकर स्थापना करे। [दाहिने हाथको स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापनाके सम्मुख करके तीन वार नवकार पढ़े.] (पृष्ठ ५६)

सामायिक उच्चरने की विधि :—



"इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावो" तीनबार "करेमि भंते" गुरु उच्चरावे। गुरु न हो तो स्वयं उच्चरे। (पृष्ठ ३७)

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? 'इच्छं' ॥

(खडे होकर तीन नवकार गिने पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावो" (ऐसा बोल कर तीन बार "करेमि भंते" उच्चरे।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते !। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ (यह तीन वार कहना।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

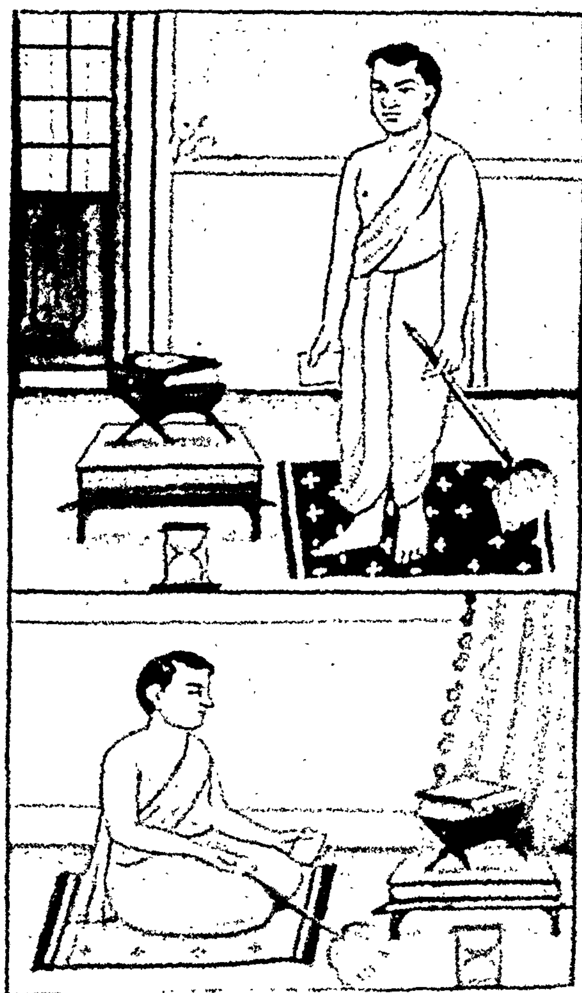
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ?। 'इच्छं'। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंगपणग-दग-मट्टीमक्कडासंताणा-संकमणे । जे

मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

काउस्सग्ग करने की विधिः—



यहाँ पर एक लोगस्सका या चार नवकारका काउस्सग्ग करना। खड़े होकर अथवा बैठकर काउस्सग्ग करें।

(पृष्ठ ५९)

(यहाँ पर एक लोगस्सका या चार नवकारका काउस्सग्ग करना, पार कर पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

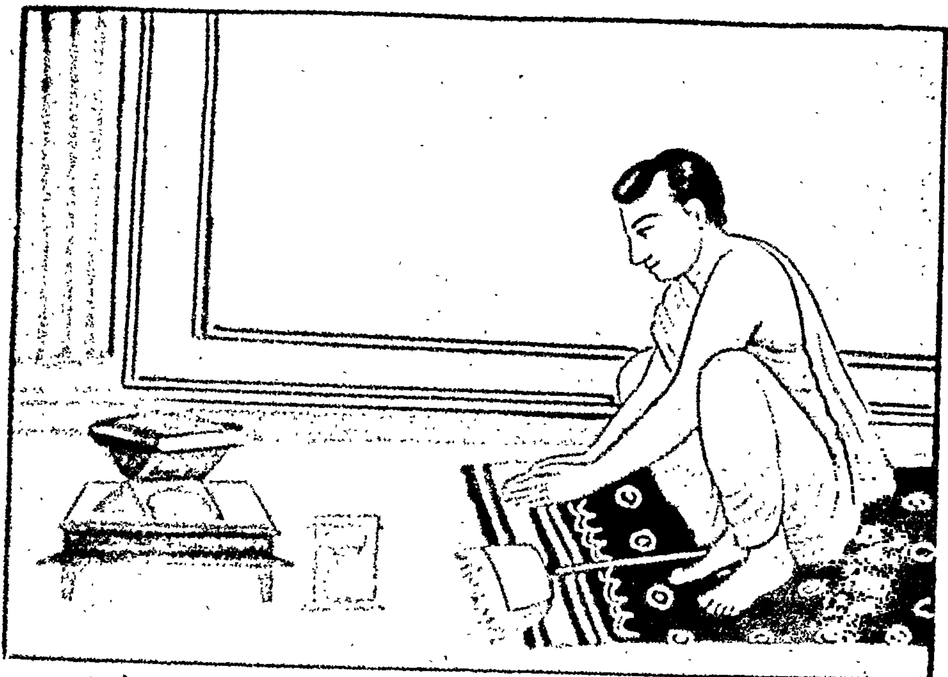
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहियाए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ॥

(अब नीचे बैठ कर मुँहपत्ति पडिलेहन करें और दो बार वांदणा दें । यदि चउविहार उपवास हो तो मुँहपत्ति नहीं पडिलेहना और वांदणा भी नहीं देना, परन्तु तिविहार उपवास हो तो मुँहपत्ति पडिलेहे, वांदणा नहीं दें ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसा-यणाए, तित्तिसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालि-आए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,

वांदणा देणे की विधि :—



अब नीचे बैठ कर मुँहपत्ति पडिलेहन करें और दो बार वांदणा दें। (पृष्ठ ८०)

आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व - मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । "इच्छाकारि भगवन्! पसाउ करी पच्चक्खाण करूँजी" ।

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना।)

(१) चउविहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, चउविहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं, वोसिरामि ।

(२) दुविहार का पच्चक्खाण[1] ।

दिवसचरिमं पच्चक्खामि, दुविहं पि आ-हारं असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सह-सागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआ-गारेणं, वोसिरामि ।

(एकासणा आयंबिल तिविहार उपवास आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना—)

---

१ खरतरगच्छकी परम्परामें दुविहारके पच्चक्खाणमें कभी पानीके सिवाय और कुछ भी पीनेकी छूट नहीं है, और रात्रि में तिविहारके पच्चक्खाण भी नहीं होते ।

(३) पाणहार का पच्चक्खाण—

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

(नियम चितारनेवाले देशाव० का पच्चक्खाण करे।)

(४) देसावगासिय पच्चक्खाण—

देसावगासियं भोग-परिभोगं पच्चक्खामि, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सिज्झाय संदिसाउं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सिज्झाय करूं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(कह कर खडे खडे आठ नवकार गिने पिछे।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणो संदिसाउं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणो ठाउं ? 'इच्छं'।

(अब आसन बिछा कर बैठ जाय और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोल कर वस्त्र ग्रहण करें।)

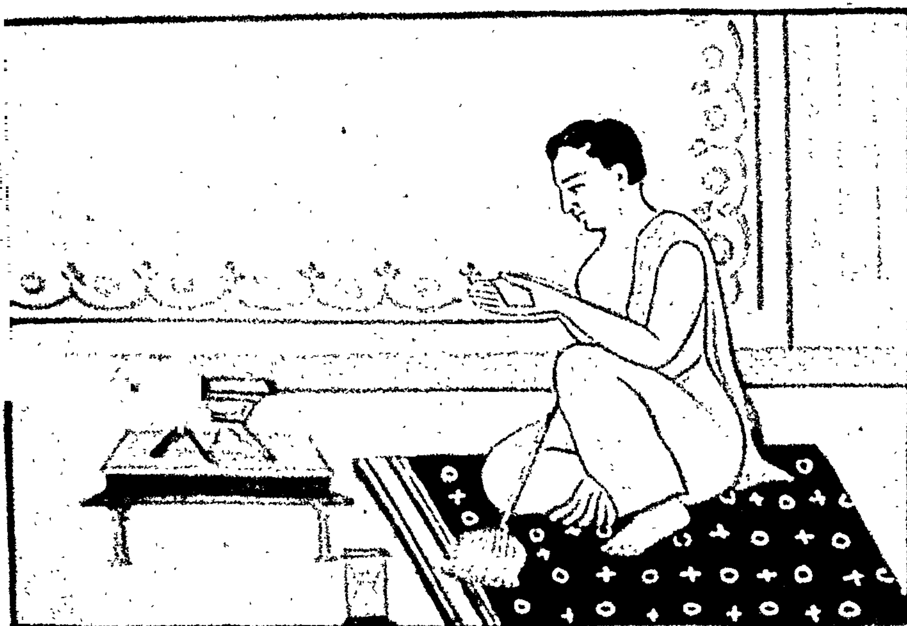
इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पंगुरणं संदिसाउं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पंगुरणं पडिग्गहुं ? 'इच्छं'।

(पीछे दो घडी [४८ मि०] स्वाध्याय करे या प्रतिक्रमण करे।)

इति सन्ध्याकालीन-सामायिकविधिः ॥

चैत्यवन्दन करने की विधि :—



इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं' [जयतिहुअणका चैत्यवंदन करें]

(पृष्ठ ८५)

दैवसिक-प्रतिक्रमण-विधि।

(पहले विधिपूर्वक सामायिक लेकर तीन खमासमण देना)–

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं'।

(बायाँ घुटना खडा कर जय तिहुअणका चैत्यवन्दन करें।)

जय तिहुअण वरकप्परुक्ख ! जय जिण-धन्नंतरि !, जय तिहुअण कल्लाणकोस ! दुरिअक्करिकेसरि ! । तिहुअणजण-अविलंघिआण ! भुवणत्तयसामिअ !, कुणसु सुहाइ जिणेस ! पास थंभणयपुरट्ठिअ ! ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्तइ, धण्ण-सुवण्ण-हिरण्णपुण्ण जण भुंजइ रज्जइ । पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास ! पसाइण, इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख ! सुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण । चक्खुक्खीण खएण

खुण्ण नर सल्लिय सूलिण। तुह जिण! सरण-रसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धन्नंतरि! पास! मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जा-जोइस-मंत-तंत-सिद्धीउ अपयत्तिण। भुवण-ब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण। तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ। तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास! निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपउत्तइ मंत-तंत-जंताइं विसुत्तइ। चरथिरगरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउवग्ग विगंजइ। दुत्थिअ-सत्थ अणत्थ-घत्थ नित्थारइ दय करि। दुरियइ हरउ स पास देउ दुरियकरिकेसरि ॥ ६ ॥ जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलवियउ, तु-वि जाणउ जिण-पास तुम्हि हउं अंगीकरि-उ। इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहा-वणु, रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥ ६ ॥ एव महारिय जत्त देव एहु न्हवण-महुसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणि-जणअणिसिद्धउ। एम पसीह सुपासनाह

थंभणयपुरट्ठिय ! इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ आणिंदिय ॥ ७ ॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय, जय समत्थ-परमत्थ जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण, भवियह भीम भवुत्थु भय अवणिंताणंतगुण, तुज्झ तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपई-वाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं। धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं। अप्पडिहय-वरनाण-दंसण-धराणं, वियट्टछउमाणं, जिणाणं,

जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ सवन्नूणं, सवदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमवाबाहमपुणरा-वित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं । जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदामि ।

(अब खडे होकर बोलना ।)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्ति-आए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्मा-णवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्ति-आए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणु-प्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं; उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं;

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुइ कहना)—

मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय। सिद्धारथ नंदन, त्रिशला देवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान। दिन दिन सुखदायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-

माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहं-ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

सुर नरवर किन्नर, वंदित पद अरविंद ।
कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥
भवियणने तारे, प्रवहण सम निशदिश । चोवीसे
जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ।
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥
तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स सुरगण-नरिंद-महियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे देवं नागसुवन्नकि-

माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, ख। एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, ग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,

दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहं-ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

सुर नरवर किन्नर, वंदित पद अरविंद । कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणने तारे, प्रवहण सम निशदिश । चोवीसे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं-सणस्स सुरगण-नरिंद-महियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकि-

ऩरगणस्सऽभूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ५ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना ।)

अरथें करी आगम, भाख्या श्री भगवंत। गणधरने गुंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनन्त ॥ सुर-गुरु पण महिमा, कही न शके एकन्त। समरूं सुखसायर, मन सुद्ध सूत्र सिद्धान्त ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाण, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमं-संति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्ध-माणस्स। संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो अ, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमा-हिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं; जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुइ कहना)—

सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष। सहु संकट चूरे पूरे आश अशेष॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद। जंपे गुणगण इम, श्रीजिनलाभसूरींद ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ कर बाँया घुटना खड़ा कर बोलना।)

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं,

पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग-हिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभ-यदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवर-नाण-दंसणधराणं विय-ट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तार-याणं, वुद्धाणं, वोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं; सवन्नूणं, सवदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंत-मक्खय-मवावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदामि॥

(यहाँ चार एक एक 'खमासमण' देकर बोलना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए

निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजी मिश्र' ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजी मिश्र' ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगमयुगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक⋯मिश्र' ॥ ३ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजी-मिश्र' ॥ ४ ॥

(ऐसा कह कर दहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर, बांया हाथ मुँहपत्ती सहित मुख के आगे रख कर सिर झुका कर 'सव्वस्स वि' का पाठ बोलना)

सव्वस्स वि देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब खड़े होकर बोलना ।)

(१ सामायिक आवश्यक)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवि-हेणं मणेणं, वायाए, काएणं; न करेमि न कार-वेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि, गरि-हामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असा-वग-पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते; सुए, सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

('आजुणा चार प्रहर दिवस में' का पाठ मनमें चिन्तन करे या आठ नवकार का काउस्सग्ग करे। पीछे प्रगट लोगस्स कहे।)

(२ चतुर्विंशतिस्तव आवश्यक.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं,

पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय, वंदिय, महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(३ वंदन आवश्यक)

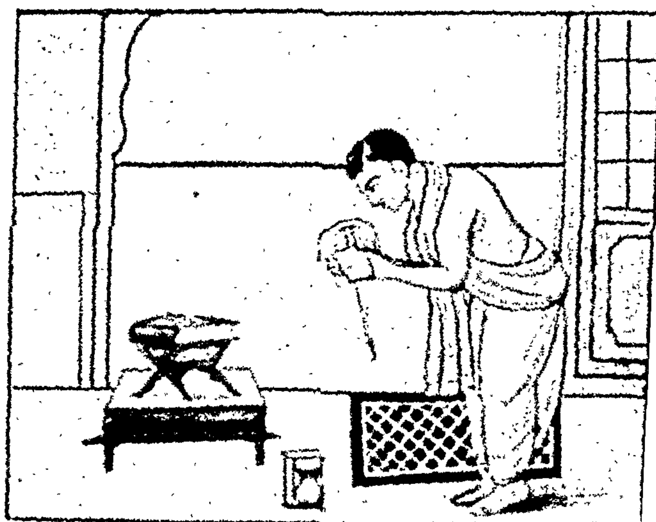
(अब नीचे बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना और नीचे मुताबिक दो बार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण-

दुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए; कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए; जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

आलोचना पाठ बोलने की विधि:–



इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं 'इच्छं' आलोएमि. [इत्यादि पाठ बोलना] (पृष्ठ १०१

(अब खडे होकर बोलना)

(४ प्रतिक्रमण आवश्यक)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे देवसिओ अइआरो कओ काईओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

आलोयण पाठ।

आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय, दोय

लाख बेइंद्रिय, दोय लाख तेइंद्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चउदे लाख मनुष्य, एवं चार गतिके चोरासी[1] लाख जीवायोनि में, म्हारे जीवे जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

पहले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, तीजे

---

१ चोरासी लाख जीवाजोनी वर्णादि मूलभेद, कुलभेद,

सात लाख	पृथ्वीकाय	२०००	३५०	७ लाख
सात लाख	अपकाय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	तेउकाय	२०००	३५०	७ ,,
सात लाख	वायुकाय	२०००	३५०	७ ,,
दश लाख	प्र० वनस्पति.	२०००	५००	१० ,,
चौद लाख	सा० वनस्पति.	२०००	७००	१४ ,,
दो लाख	बेइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	तेइन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
दो लाख	चउरिन्द्रिय	२०००	१००	२ ,,
चार लाख	देवता	२०००	२००	४ ,,

अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे मायामृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य; ए अढारे पाप स्थानक-मांही म्हारे जीवे जे कोई पाप सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सवे हुं मन, वचन, कायायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

चार लाख	नारकी	२०००	२००	८ लाख
चार लाख	तिर्यंच पं.	२०००	२००	८ ,,
चौद लाख	मनुष्य	२०००	७००	१४ ,,

प्रथम (५) पांच वर्ण हैं, उन्हें (२) दो गंध से गुणने से १० हुए, उन्हें (५) पांच रस से गुणने से ५० हुए, उन्हें (८) आठ स्पर्श से गुणने से ४०० हुए, उन्हें (५ आकृति) पांच संस्थान से गुणने से २००० हुए, उन्हें (३५० मुखांक) तिनसो पचास पृथ्वीकाय के मूल भेदसे गुणने के बाद पृथ्वीकाय की कुल (७०००००) सात लाख जीवायोनि होती हैं। इसी प्रकार अन्य भी समझना। इति चोरासी लाख जीवायोनि भेद।

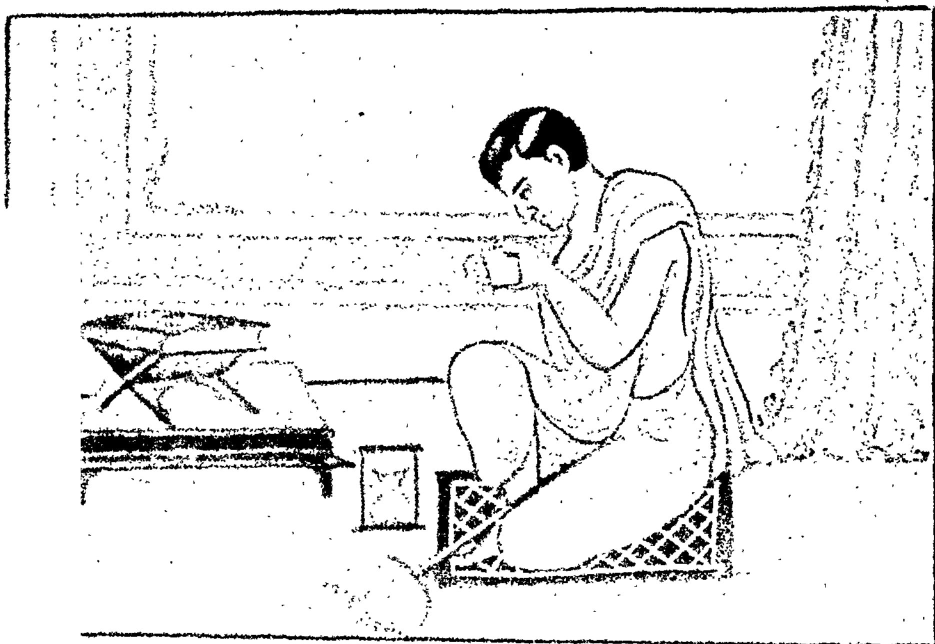
ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पन्नरे कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परनिंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय, सो सर्व मन, वचन कायायें करके, देवसिक अतिचार आलोयण करके पडिक्कमणामें आलोउं । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(नीचे बैठके दाहिना हाथ चरवले वा आसन पर रखके सव्वस्सवि बोलना ।)

सव्वस्स वि देवसिअ-दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! 'इच्छं' । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब दाहिना गोडा खडा करके 'भगवन् ! वंदित्तु सूत्र भणुं ?' 'इच्छं' ऐसा कहे । पीछे तीन नवकार और तीन बार 'करेमि भंते०' इच्छामि ठामि० कह कर वंदित्तु० कहे ।)

वंदित्तु-सूत्र बोलने की विधि:—



भगवन्! वंदित्तु सूत्र भणुं ? 'इच्छं' ऐसा कहे। पीछे तीन नवकार और तीन करेमि भंते०' 'इच्छामिठामि०' कह कर 'वंदित्तु०' कहे। (पृष्ठ १०४)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच-णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं; न करेमि न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ; उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ; अणायारो; अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो; नाणे तह दंसणे, चरित्ताचरित्ते; सुए, सामाइए; तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

वंदित्तु (श्रावकप्रतिक्रमण) सूत्र ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो नाणे, तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिँ अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं, च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥

पढमे अणुव्वयम्मी, थुलगपाणाइवायविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए ।
पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १० ॥
बीए अणुव्वयम्मी, परिथूलगअलिअवयणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहस्सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयम्मी, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ ।
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥
चउत्थे अणुव्वयम्मी, निच्चं परदारगमणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ

पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोगपरीभोगे, वीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत-लक्ख-रसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुवट्टण-वन्नग-विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २५ ॥

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण-भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ-वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासियम्मी, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसहविहिविवरीए, तइए, सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते

॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइ-आरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा- रवेसु सण्णा-कसायदंडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइ-आरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससम-ज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलो-इअ निंदिअ य गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खा-णमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥

आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरि-हामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराह-णाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउ-वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू भरहेर-वयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिवि-हेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणा-सणीइ, भवसयसहस्समहणीइ। चउवीसजिण-विणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीअपरूव-णाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं

मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं । तिविहे पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

(इसके बाद दोनों गोडे खडे कर गुहपति फैलाकर जमी पर या चरवले पर रखकर दो वांदना देवे ।)

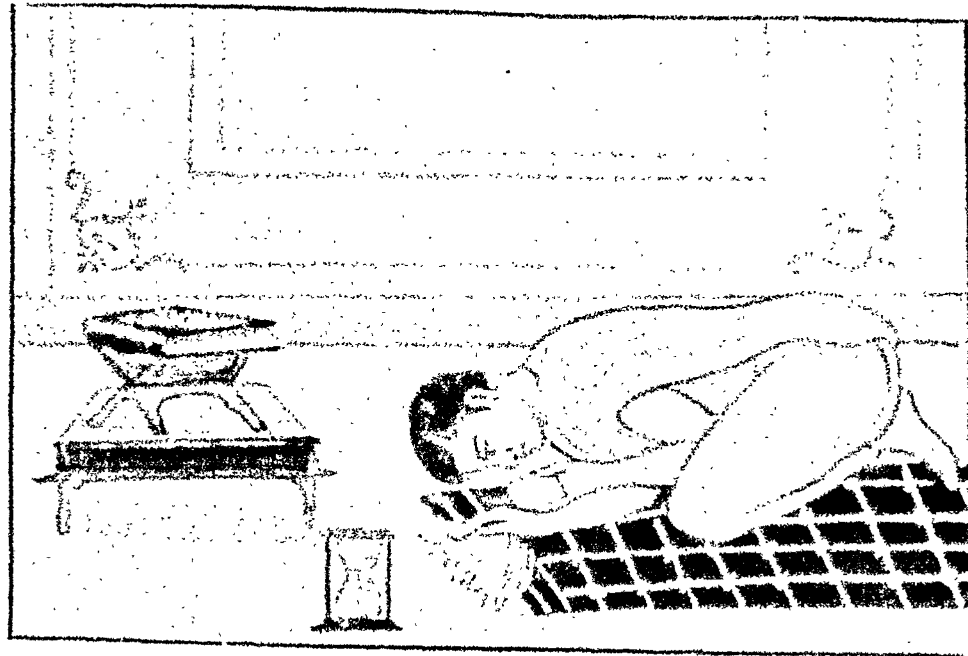
इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

मज्झं न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिउं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

(इसके बाद दोनों गोडे खडे कर मुहपति फैलाकर जमीन पर या चरवले पर रखकर दो वांदना देवे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो; अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

अब्भुट्ठिओमि खामने की विधि :—



'स्थापनाचार्यजीको या गुरुमहाराज हों तो उनको घुटने टेक कर शिर झुका कर 'अब्भुट्ठिओ' खमावे। (पृष्ठ ११६)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए ! अणुजाणह मे मिउग्गहं; निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(इसके बाद स्थापनाचार्यजीको या गुरुमहाराज हों तो उनको घुटने टेक कर सिर झुका कर ‘अब्भुट्ठिओ’ खमावे ।)

अब्भुट्ठिओ सूत्र—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर-देवसिअं खामेउं ? ‘इच्छं,’

खामेमि देवसिअं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासमणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(फिर दो वांदणा देवे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,

आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खडे होकर मस्तकमें अंजली लगाकर बोलना।)

आयरिय - उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म - निहिअ - निअ - चित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

(५ काउस्सग्ग आवश्यक)

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवि-हेणं मणेणं वायाए कारणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते!। पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो। अकरणिज्जो दुज्झा-

ओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहियं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं,विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स या आठ नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहना)—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउ-स्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्का-रवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्ति-आए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-लेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अवि-राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे "पुक्खरवरदीवड्ढे" कहना ।)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायईसंडे अ जंबुद्दीवे अ ।

भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदम- हिअस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोह- जालस्स ॥ २ ॥ जाइजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव- दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकि- न्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भग- वओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअण- वत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । स- द्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ४ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं,

छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कहना)—

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार-सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं

नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ-दस दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ-निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एव-माइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना, पीछे "नमोऽर्ह-त्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कहकर 'सुअदेवया' की थुई कहना ।)

सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेषश्रुतसम्पदम् ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइ-एहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमु-क्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना, पीछे 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कह कर 'खित्तदेवता-' की थुइ कहना)—

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावका-दयः। जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्र-देवताः ॥ १ ॥

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए

सव्वसाहूणं । एसो पंच-नमुक्कारो सव्वपावप्प-णासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

(६ पच्चक्खाण आवश्यक)

(अब बैठकर छट्ठा आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना, पीछे दो वंदना देना।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं; निसीहि; अहो-कायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वय-दुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइ-

यारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं; निसीहि; अहो-कायं काय-संफासं, खमणिज्जो मे किलामो; अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसाअणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए; माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ; तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(पच्चक्खाण न किया हो तो यहाँ पर कर लेना चाहिये ।)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(कह कर बायाँ घुटना खड़ा कर पुरुष "नमोऽस्तु वर्द्धमानाय" कहे और स्त्रियें 'संसारदावानल' की तीन थुइ कहे ।)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावाप्त-मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः-क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषाय-तापार्दित-जन्तु-निर्वृतिं, करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्र-मासोद्भव-वृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली-हरणे समीरम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनाम-सुरदानव-मानवेन,-चूलाविलोल-कमलावलि-मालितानि । संपूरिताभिनतलोक-समीहितानि, कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद-

पदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा-विरललहरी-संगमागाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं; जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं; बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(कह कर बायाँ घुटना खड़ा कर पुरुष "नमोऽस्तु वर्द्धमानाय" कहे और स्त्रियें 'संसारदावानल' को तीन थुइ कहे ।)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावाप्त-मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः-क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषाय-तापार्दित-जन्तु-निर्वृतिं, करोति यो जैन-मुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्र-मासोद्भव-वृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली-हरणे समीरम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावावनाम-सुरदानव-मान-वेन, -चूलाविलोल-कमलावलि-मालितानि । सं-पूरिताभिनतलोक-समीहितानि, कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद-

पदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा-विरललहरी-संगमागाहदेहम्। चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; आइग-राणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहि-आणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभय-दयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्क-वट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछ-उमाणं; जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं; बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंतमक्खयम-व्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं

संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं । जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! स्तवन भणुं? 'इच्छं'। नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(यहाँ पर बड़ा स्तवन कहे और ग्यारह गाथा से कम कहे तो स्तवन के बाद 'वरकनक' कहे।)

श्री चिन्तामणि-पार्श्वजिन-स्तवन ।

भविका श्री जिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारिखी जाणो, न करो शंका कांई । आगम वाणीने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब [illegible] न जाणे, ते कहिये [illegible] नहीं किम जाणे । भूला [illegible] अम्बड तिहाँ [illegible] पिछाणे [illegible] । श्राव[illegible] [illegible]

विविध परें जिनभक्ति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगते जोतां, होय निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्रकुमार रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर, छे बहु जलधि मझार । ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरति प्रकार रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ पाँचमें अङ्गे जिन प्रतिमानो, प्रगटपणे अधिकार । सूरि-याभसुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ दशमे अङ्गे अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज । एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ समकित धारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मण रंगे । जो जो एहनो अरथ विचारी, छट्ठे ज्ञाता अङ्गे रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी । द्रव्य भाव बिहुं भेदे कीनी, जीवाभिगम ते साखी

रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो। जिन प्रतिमा देखी नित नवलो। प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ १० ॥ चिन्तामणि प्रभु पास पसाये, सरधा होजो सवाई। श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशे, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ भ० ॥ ११ ॥

ॐ वरकणय-संख-विद्रुम-मरगय-घण-सन्निहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामर-पूइअं वंदे स्वाहा ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिजाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि। श्रीआचार्य-जीमिश्र।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिजाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि। श्री उपाध्याय-जीमिश्र।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिजाए,

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री सर्वसाधु-जीमिश्र ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? 'इच्छं,' देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना, पश्चात् काउस्सग्ग पारकर प्रगट 'लोगस्स' कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए,

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! खुद्दोपद्दव-उड्डावण-निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना, पश्चात् काउस्सग्ग पार कर प्रकट 'लोगस्स' कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं

च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ।

(बाकी सब क्रिया करके 'श्रीसीमं०' कहना ।)

श्रीसेढी-तटिनी-तटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधा-धीशैः समारोपितः। संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां, नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो देवो, जीरावल्ली-शिरोमणिः। पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नत-नाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; आइगराणं, तित्थयराणं; सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्क-

वट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं; जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति - सिद्धिगइ - नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

भगवन् ! जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ सव्वेसिं । तेसिं पणओ, तिविहेणं तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगल - कल्लाण-

आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंते, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण। ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥ ५ ॥

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं !। भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वय-णसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

सिरिथंभणयट्ठिय - पाससामिणो, सेसतित्थसामीणं । तित्थसमुन्नइ - कारण - सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसि - महं सरणत्थं काउस्सग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नयनिमित्तं ॥ २ ॥ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजिन आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

(अब खडे होकर बोलना चाहिये ।)

वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं;

एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

(चार 'लोगस्स' या सोलह नवकार का 'काउस्सग्ग' करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।

आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री चौरासी गच्छ शृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना निमित्त करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्म-लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए,

निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री चौरासी गच्छ शृङ्गार-हार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडामणि दादा श्री जिनकुशल-सूरिजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं; जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए; सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं; एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि; ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च

सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च। एवं मए अभिथुआ, विहुयरय-मला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

(अब बाँया गोडा ऊँचा करके चैत्यवंदन करे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं'।

चउकसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमु-

सुमूरणू । सरसपिअंगुवन्नुगयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति-कडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ । नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउं ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवरगंध-हत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहि-दयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्म-

नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवर-नाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं; तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं; सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं; सिवमयलमरुअमणंत-मक्खय-मव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ-नाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

भगवन्! जावंत के वि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेणं तिदंड-विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥ ५ ॥

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अथ लघुशान्तिस्तवः।

शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य। स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शान्ति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा-सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय। त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामर-सुसमूह-स्वामिकसंपूजिताय निजिताय। भुवनजनपालनो-द्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय। दुष्ट-ग्रहभूत-पिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा। विजया कुरुते जनहितमिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति! विजये! सुजये! परापरैरजिते!। अपराजिते! जगत्यां,

जयतीति जयावहे ! भवति ! ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे । साधूनां च सदा शिव - सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् । अभय - प्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्ति - प्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे ! नित्यमुद्यते ! देवि ! । सम्यग्दृष्टीनां धृति - रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिन-शासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जन-तानाम् । श्रीसम्पत्कीर्तियशो - वर्द्धनि ! जय देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधर-दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः । राक्षसरिपुगणमारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति ! शिवशान्ति-तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति

नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जया देवी। कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शितमंत्र-पद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः। सलिलादिभय-विनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम्। स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥

(प्रतिक्रमण में दीपक, बीजली आदि अग्नि का प्रकाश अपने शरीर पर आगया हो, या वरसाद आदि के पानी की बूंद लग गई हो, इत्यादि कोई दोष लगा हो तो 'इरियावहियं०' 'तस्स उत्तरी०' 'अन्नत्थ०' कह कर एक 'लोगस्स' का काउस्सग्ग करके, प्रगट 'लोगस्स' कह कर पीछे सामायिक पारें।)

सामायिक पारने की विधि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ।

(ऐसा कहके मुँहपत्ति की पडिलेहन करे । पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? 'यथा-शक्ति ।'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारेमि 'तहत्ति' ।

(कहकर आधा अंग नमा कर 'तीन नवकार' गिने । पीछे शिर नमा कर दहिना हाथ नीचे स्थापन करके 'भयवं दसन्नभद्दो' बोले ।)

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थुलभद्द वइरो य ।
सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥

साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो । जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ भासियं किंचि । असुहं काएणं कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसह-संठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधे लीधुं, विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लागी होय, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, बतीस दूषणमाहि जो कोई दूषण लागा होय, सो सहु मन वचन कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं ।

इति दैवसिक-प्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥

॥ इति संध्याकालीन-सामायिक-प्रतिक्रमणविधिः समाप्तः ॥

अथ पच्चक्खाण-सूत्राणि ॥

१. नवकारसहिअं—पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं। देसावगासियं भोगोपरिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१ यह पच्चक्खाण इसलिये दिये हैं कि प्रतिदिन कोई नियम धारण करना है। प्रत्येक पच्चक्खाण में जहां जहां 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' पद आते हैं वहां वहां यदि पच्चक्खाण स्वयं लेना हो तो 'पच्चक्खामि' और 'वोसिरामि' और दूसरों को पच्चक्खाण कराना हो तो 'पच्चक्खाइ' और 'वोसिरइ' बोले। [illegible] 'देसावगासियं' [illegible]

२. नवकारसहिअं पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ, चउ-व्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरइ ॥

३. पोरिसी - साड्ढपोरिसी - पच्चक्खाण ।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्च-क्खाइ । उग्गए सूरे, चउव्विहं पि आहारं - असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सह-सागारेणं, पच्छन्न - कालेणं, दिसामोहेणं, साहुव-यणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

४. पुरिमड्ढ - अवड्ढ - पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, अवड्ढं, वा पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छ-

१ [illegible]

न्नकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

५. एकासण-विआसण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं विआसणं वा पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

---

१ यहां पर साधु के लिए एकासण, विआसण, आयंबिल, नीवि और तिविहार उपवास के पचक्खाण में छह आगार और होते हैं—पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा ।"

६. एगलठाण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं एगट्ठाणं, पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहं चउव्विहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

७. आयंबिल-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ,

अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागरिआगारेणं आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

८. निव्विगइय—पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउविहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, निव्विगइयं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-

समाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाइ तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

९. चउविहार-उपवास-पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउविहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१०. तिविहार-उपवास-पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाणहारपोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं,

दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

११. विगइ-पच्चक्खाण ।

विगईओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं वोसिरइ[1] ॥

१२. देसावगासिक-पच्चक्खाण ।

देसावगासियं, भोगोपरिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१३. दत्ति-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं वा पच्च-

---

१ ११-१२ ये दोनों पच्चक्खाण प्रत्येक पच्चक्खाण के अन्तिम पद 'वोसिरइ' के पहले जो चौदह नियम धारता हो तो उच्चरे। जो चौदह नियम नहीं धारता हो तो ये दोनों पच्चक्खाण न उच्चारे।

क्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सह-सागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहु-वयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं एगट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खाइ, तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्न-त्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं वोसिरइ ॥

१४. दिवसचरिम-चउविहार-पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं वोसिरइ ॥

१५. दिवसचरिम-दुविहार-पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसा-

दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-
गारेणं वोसिरइ ॥

११. विगइ - पच्चक्खाण ।

विगईओ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं,
सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं,
उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणि
यागारेणं वोसिरइ[1] ॥

१२. देसावगासिक - पच्चक्खाण ।

देसावगासियं, भोगोपरिभोगं पच्चक्खाइ
अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

१३. दत्ति - पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं वा प॰

---

१ ११-१२ ये दोनों पचक्खाण प्रत्येक पचक्खाण के अन्तिम 'वोसिरइ' के पहले जो चौंदह नियम धारता होतो उचारे। जो चौं नियम नहीं धारता हो तो ये दोनों पचक्खाण न उचारे।

अथ थुइ-स्तवनसंग्रहः

॥ द्वितीया की स्तुति ॥

वासुपूज्यजिन अंतरजामी, मनविशरामी स्वामीजी।
भविजन तारण शिवसुख कारण, निजगुणना प्रभु कामीजी॥
बीज दिवस जिनवर शिव सुखकर, चंद्रविमाने पामीजी।
नगर बुहारि मां मनुहारि, सेवो जिन सुखधामीजी॥ १॥
वासुपूज्य पद्मप्रभु राता, चंद्रसुविधि जिन धवलाजी।
मल्लिपास दोय नीला जाणो, मुनिसुव्रत नेमि कालाजी॥
आठ द्विगुण जगनायक लायक, सोवनवरण सुहायाजी।
बीज दिवस नव नव चउद्विक, जिन वंदुं अहनिश पायाजी॥२॥
दुविध धर्म जिनवर प्रकास्यो, अर्थ अधिक सुखकारिजी।
सूत्रे करि गणधर गुरु भाख्यो, भविजनना उपगारिजी॥
दोय शिक्षा दोय नय निक्षेपा, चउभंगी मन आणोजी।
बीज आराधि सम्पदा साधी, परमारथ पहिचाणोजी॥ ३॥
बीज दिवस उपवास करीजे, पडिकमणादिक सारोजी।
ए तप सुरतरु सरिखो जाणो, निरुपम सुख दातारोजी॥
कुमार यक्ष तिम शासनदेवी, चंडा सानिध भूरिजी।
शुभफलदायक सङ्घने होज्यो, जिनकृपाचंद्रसूरिजी॥ ४॥

॥ पंचमीकी स्तुति ॥

नेमि जिनेसर जग परमेसर, पंचमी गतिना दाताजी॥

श्रावणसुदिपंचमी दिन जनम्या, त्रिभुवनमें विख्याताजी ॥
समुद्रविजयनंदन जगवंदन, शिवादेवी माताजी ॥
सहस वरस प्रभु आयुष पाली, पाम्या शिवसुख साताजी ॥ १ ॥
कातिवदी सम्भव केवल पाम्यो, मगसर सुविधि जायाजी ॥
चैत्र चंद्रजन्म अजित संभव, अनंत सुदि शिव पायाजी ॥
वैशाख वदि कुंथुजिन दीक्षा, पंचमी जगत सुहायाजी ॥
धर्म धवल जैठ पंचमी सीधा, सुरनर मिल जस गायाजी ॥ २ ॥
पंचमितपविधि भाखे जिनवर, अर्थ अधिक सुखकारिजी ॥
सूत्रे गणधर गुरु सुभदाखे, आगममांहि सारिजी ॥
नंदिविधि करी देव वांदीने, काउसग्ग मन धारीजी ॥
इकावन ज्ञानना भेद नमीने, श्रुतज्ञान सेवो इकतारीजी ॥ ३ ॥
पडिक्कमणो दोय टङ्क करीने, ज्ञान आराधो प्राणीजी ॥
मगसरादि पट माससमां उचरो, आगममांहि बखाणीजी ॥
जिनआणा धारक सुखकारक, खरतरगण श्रुतखाणीजी ॥
श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिपभणे, शासनदेवी सुहाणीजी ॥ ४ ॥

॥ अष्टमीकी स्तुति ॥

आठ प्रातिहारज जसु सोहे, मोहे भविजन चंदाजी ॥
चंद्रप्रभु आठम दिन सेवो, अनुभवरसना कंदाजी ॥
आठ प्रमाद तजीने धारो, परमातमपद सारोजी ॥ द्वीपनंदिसर यात्रा करतां, अरिहंतध्यान प्रकारोजी ॥ १ ॥ रिषभ अजित

सुमति सुव्रतनमि, सुपारस सम्भव आयाजी ॥ आदीश्वरदीक्षा अभिनंदन, नेमिपास सिव पायाजी ॥ भिन्न मासअष्टमी, कल्याणक तीन कालमां जाणोजी ॥ आठ जातिना कलश लेइने, स्नात्र करे सुरराणोजी ॥ २ ॥ आठै प्रवचनमाता पालो, दोष सर्वने टालोजी ॥ वीरजिनेसर अर्थ प्रकासै, सूत्र रचै गणधारीजी ॥ आठम तप आराधि भविजन, आठ वरस अधिकारीजी ॥ ३ ॥ पर्वतिथिमें पोषध भाख्यो, सिद्धांत छे जसु साखीजी ॥ पडिकमणो तपजप आदरीयै, देववंदन विधि राखीजी ॥ आठ मंगल आराधतां पावै, सुखसंपत्ति गुणभूरिजी ॥ श्रुतदेवी सुपसाय लहीने, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ एकादशीकी स्तुति ॥

एकादशी आखी आदिदेवे । आराधिने भवि शिवशर्म लेवे ॥ धरो ध्यान श्रीजिनराज केरो । टले अनादिकालनो कर्म हरो ॥ १ ॥ मल्लिजन्मदीक्षाकेवलपहाणं । अरनाथ चारित्र नमि परमनाणं ॥ दश खेत्रना कल्याणक एम जाणो । दोढ सो ने वलि त्रणसो पिछाणो ॥ २ ॥ इग्यारे वरस तिममास कीजे । आराधि अंग इग्यारह सुजस लीजे ॥ मौन मनधारी-शुभधर्मकारी । श्रुतज्ञाननी भक्ति करिये विचारी ॥ ३ ॥ अठ पोहरी पोषह करि यथाशक्तें । तपजप करी उज्जमणो सुभक्तें ॥ इक चित्त ध्यावै सुयदेवीपसायें । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सदा सुख थायें ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयाका वृद्ध स्तवन ॥

(दुहा) वर्द्धमान जिन वंदिये, त्रिशलानंदन देव, सिंह-लंछन सेवित सदा, सुरपति सारे सेव ॥ १ ॥ जन्म समेथी जगगुरु, अतुलबलि वडवीर, तपउत्तम विधियुत कह्यो, जल-निधि जिम गंभीर ॥ २ ॥ (ढाल १) कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ ए देशी ॥ धर्म करो जिनराजनोजी, आणी उत्कृष्ट भाव, दोय भेदे आराधतांजी, पामो आत्मस्वभाव, भविकजन सेवो श्रीजिनवाणी, निज गुणमणिनी खाणी भ० ॥ १ ॥ तिथि आराधन फलतणोजी, शास्त्रमांहे अधिकार, बीज आराधो भवि जनाजी, तप किरिया विधिसार भ० ॥ २ ॥ दोय मास लघु दूजनेजी, जावजीव उत्कृष्ट, दोय वरस दोय मासनीजी, करो बीज सुभ द्रष्ट, भ० ॥ ३ ॥ पडिकमणा दोय टंकनाजी, देववंदन निरधार, विधि सेती फल नीपजेजी, पामे भवनो पार भ० ॥ ४ ॥ बीज दिवसनो सहु जुवेजी, चंद्रोदय सुप्रसिद्ध, वधति कला तिम जाणजोजी, धर्मथी वांछित सिद्ध भ० ॥ ५ ॥ दुविधधर्म जिनवर कह्योजी, देश ने सर्व-विरत्त, धर्म शुक्ल दोय ध्यानमांजी, होय सदा निरत्त भ० ॥ ॥ ६ ॥ अर्थप्रकासे जिनवरजी, सूत्रे रचे गणधार । तिहूं सेवे वाचंयमीजी, द्वादश अंग विचार भ० ॥ ७ ॥ (ढाल २) नमो रे नमो सेत्रुंजगिरि रे ॥ ए देशी ॥ बीज दिवसमां जानिये रे, कल्याणक सुविसाल रे, श्रावण सुदि बीजे चव्या रे, सुमतिनाथ दयाल रे, नमो रे नमो

जिन चंद्रने रे ॥ १ ॥ माघ मासनी ऊजली रे, वीज दिवसमां जाण रे, अभिनंदन जनम्या प्रभू रे, त्रिहुं जगनाम हिराण रे नमो रे० ॥ २ ॥ एहीज तिथी वासुपूज्यजी रे, पाम्यो केवलनाण रे, फागुण सुदि वीजे जानिये रे, अरनाथ चवन सुजाण रे नमो रे० ॥ ३ ॥ समेतसिखर पर सिव वर्या रे, सीतलजिनवर नाण रे, चैत्र वदि वीज सुंदरु रे, अविचल सुख मन आण रे नमो० ॥ ४ ॥ इम कल्याणक इन तिथि रे, काल अनंते होय रे, अणंत कल्याणक जाणजो रे, एह आगम विधि जोय रे नमो० ॥ ५ ॥ तप पूरण हुवा थकां रे, उज्झमणो सुविवेक रे, रत्नत्रयी आराधवा रे, धन खरचो बहु छेक रे नमो० ॥ ६ ॥ सीमंधरादि जिनवरा रे, विहरमान जिन वीस रे, मन मंदिरमां आवजो रे, जिनकृपाचंद्रसूरीस रे ॥ नमो० ॥ ७ ॥

॥ पंचमीका वृद्ध स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ सिद्धारथ कुल दिनमणि । त्रिसलादेवी सुजात ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करी परभात ॥ १ ॥ गुरु दरियो भरियो गुणे, किणविधि तरियो जाय । बलिहारी गुरुदेवनी, मोमन रह्यो लोभाय ॥ २ ॥ जिन वाणी पीयूष रस, पान करो निशिदीश ॥ पामो नाण सुहंकरु । भाखै जगना ईश ॥ ३ ॥ (ढाल १) कपूर हुवे अति ऊजलोजी ॥ ए देशी ॥ ज्ञान आराधो भवी जनाजी । आणि भक्ति अपार, पांच ज्ञान प्रगटायवाजी । पञ्चमी सेवो उदार रे प्राणि

जिनवाणी मन आण, अनुपम सुखनी खाण रे ॥ प्रा० जिन० ॥ १ ॥ ज्ञाण वडो संसारमांजी, ज्ञानथी सुगति थाय, ज्ञान दीपक सम जाणियेजी, सर्व लोक प्रगटाय रे ॥ प्रा० जिन० ॥ २ ॥ दिव्यज्ञानलोचन कह्योजी, लोकालोक देखाय ॥ ज्ञान विना पशु सारिखोजी, जाणे नहीं नर कांय रे ॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ ३ ॥ ज्ञान आराधक सर्वथीजी, किरिया देशविचार, भगवति सूत्रमां भाखियोजी, आठमे शतक मझार रे ॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ ४ ॥ अज्ञानी क्रोड वरसमांजी, तप करि निर्जरा जेह, ज्ञानी खासोखासमांजी, कर्मक्षय करे तेह रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ ज्ञानतणो अधिकार छेजी, नंदीसूत्र मझार, क्रिया सहित ज्ञान सुंदरूजी, मोक्षतणो दातार रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ जिम सोनो सुगंधथीजी-रत्नमुंडी ये जाण, संख सोहे दूधे भर्योजी, तीम किरयायुत, नाण रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ७ ॥ महानिसीथमां हे कह्योजी, पंचमी विधिविस्तार, वीरजिनंदे दाखियोजी, सूत्र श्रीगणधर रे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ८ ॥ (ढाल २) सखी आज अनोपम दीवालि ॥ ए देशी ॥ ज्ञानी आराधी संपदा साधी, निजगुणनो ए उपगारी, सखी नाण सुहंकर गुणकारी ॥ ९ ॥ पञ्चमी तप विधियुत भवि करके, नाणने सेवो इकतारी ॥ स० ॥ न० ॥१०॥ मगसर माह फागण वैशाख, जेठ अषाढने दिलधारि ॥ स० ॥ ना० ॥ ११ ॥ ए षट्मासे विधियुत लीजे, शुभदिन गुरु-मुखथी सारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १२ ॥ देववंदन देहरासर

करीने, पोथी पूजी सुविचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १३ ॥ गीतारथ गुरु चरण नमीने, नंदि विधिकरि हितकारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १४ ॥ गुरुमुख उपवास भावे करीने, पडिक्कमी टालो अतिचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १५ ॥ शास्त्र भणो श्री सद्गुरु पासे, पञ्चमी दिन आरंभ टारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १६ ॥ पांच वरस पांच मासने उत्कृष्ट, जावजीव करे इकतारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १७ ॥ पांचमास लघुपञ्चमी कीजे, स्तवन थुइ कहे ब्रह्मचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १८ ॥ (ढाल ३) पहलो अंग सुहामणो रे ॥ ए देशी ॥ ज्ञान नमो गुण-भविजना रे, नाणप्रकाशकजाण रे सुगुणनर, पञ्चमीतप विधियुत करी रे लाल, पामो अविचल नाण रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥ दोय भेदे नाण आणीये रे। निश्चय ने व्यवहार रे ॥ सु० ॥ त्रण अनुयोग व्यवहारमां रे ला० द्रव्यनिश्चय सुखकार रे ॥ सु० ज्ञा० ॥ २० ॥ पांच ज्ञानना भेद छै रे, इकावन सुविशेष रे ॥ सु० ॥ भिन्नभिन्न ते दाखव्या रे ॥ ला० ॥ तेह कहुं लवलेश रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २१ ॥ मतिज्ञानना जाणिये रे, अठावीश प्रकार रे ॥ सु० ॥ श्रुतना चवदे ने वीश छे रे, अक्षरादिक सुविचार रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २२ ॥ अवधि छ असंख भेद छे रे, मनपर्यव दुग जाण रे ॥ सु० ॥ लोकालोक प्रकाशको रे ॥ ला० ॥ केवल मनमें आण रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २३ ॥ तीन ज्ञान प्रत्यक्ष छै रे, देस-सर्व सुजगीश रे ॥ सु० ॥ अवधि मनपर्यव वलि रे ॥ ला० ॥ देश

प्रत्यक्ष कह्या ईश रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २४ ॥ केवल सर्व प्रत्यक्षने रे, ध्यावो परमपवित्र रे ॥ सु० ॥ दोय परोक्ष पिछाणिये रे ॥ ला० ॥ मतिश्रुतभेद विचित्र रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ चार ज्ञान ठप्पा कह्या रे, श्रुत अनुयोग विचार रे ॥ सु० ॥ उद्देशादिक जाणिये रे ॥ ला० ॥ अनुयोगद्वारम-झार रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २६ ॥ उपगारी श्रुतनाणथी रे, जाणे आज त्रिकाल रे ॥ सु० ॥ परबोधकश्रुत सेवियेरे लाल, सद्गुरुचरण निहाल रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ वायण प्रछना परावर्त्तना रे, अनुपेहा दिलधार रे ॥ सु० ॥ धर्मकथा कही कीजीये रे ॥ ला० ॥ सझाय पांच प्रकार रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ॥ २८ ॥ अंग इग्यार बार उपांग छे रे, दश पयण्णा नंदीश रे ॥ सु० ॥ छ छेद चउ मूल दिल धरो रे ॥ ला० ॥ अनुयोगद्वार पैतालीश रे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥

(ढाल ४) स्वामी शरीर सोसाइ गयो ॥ ए देशी ॥

ज्ञान भजो भवि प्राणीया, वंछित फलदातार, ज्ञाण दीपक सम कह्यो, सूत्रे श्री गणधार ॥ ज्ञा० ॥ ३० ॥ सुरतरु सुर-मणि सुरगवि, कल्पलता अनुकार, एहथी अधिको जाणिये, महिमा अगम अपार ॥ ज्ञा० ॥ ३१ ॥ काल अनादि लगे भम्यो, मिथ्यामति भवमांय, सम्यग्ज्ञान प्रगटे यदा, भवमें न रहाय ॥ ज्ञा० ॥ ३२ ॥ समकितगुण प्रगटायवा, त्रण करण करे जीव, समकित ज्ञान एक समे, लहे सुख अतीव ॥ ज्ञा० ॥ ३३ ॥ देशविरति पामे तदा, पल्यपृथुत्त

स्थिति जाय, संख्यातसागर गयां चरणधर, ज्ञानादिक चित्त लाय ॥ ज्ञा० ॥ ३४ ॥ घाति करमनो क्षय करी, केवलज्ञान प्रकाश, भव्य कमल प्रतिबोधता, विचरे भगवंत खास ॥ ज्ञा० ॥ ३५ ॥ ज्ञानचरण दोय भेद छै, मुक्ति कारण जाण, तप संजम बिहुं दाखिया, भाव ए मनमां आण ॥ ज्ञा० ॥ ३६ ॥ पांचमी आराधना करी, ज्ञान भगति करो सार; तप पूरण थयां किजीये, उज्जमणो सुविचार ॥ ज्ञा० ॥ ३७ ॥ पांच पांच ज्ञानादिना, उपगरण करो सार; धन खरचो बहु भावथी, लहो पुन्य संभार ॥ ज्ञा० ॥ ३८ ॥ देवो दान सुपात्रने, साहमीवछल सार, भगति करो साहमी तणी, रात्री जागो उदार ॥ ज्ञा० ॥ ३९ ॥ वरदत्त ने गुणमंजरी, ज्ञान आराधिने सुख, पामी अविचल पद लह्या, मेटीने भवदुःख ज्ञा० ॥ ४० ॥ कलश ॥ संवत् उगणीसैं पिचत्तर पोष वदि एकम भले, सुरत बंदर भविक सुखकर सीतलजिन सुपसाउलैं, श्रीवीर जिनवर पंचमी तप विधि प्रकाश्यो सुभमणे, सुविहित परंपर गच्छखरतर जिनकृपाचंद्रसूरि भणे ॥ ४१ ॥

॥ अष्टमी का वृद्ध स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ वर्द्धमान जिनवर नमुं । समरि शारदमाय अष्टमी तप विधि वरणवुं । आगमयुत संप्रदाय ॥ १ ॥ आठमतिथी आराधवा भाखें त्रिजगभाण ॥ विधिसेति तप कीजिये । पामे उत्तम नाण ॥ २ ॥ ढाल पहली ॥ संभवजिनवर वीनती ॥

ए देशी ॥ आठम तप आराधिये। अष्टमी गति दातारो रे॥ प्रवचन माता आठने। पालो निसदिन सारी रे॥ आठम०॥ १॥ अष्टसिद्धिकारक सदा। आठमतप उजमंता रे, सामायक पोसह करी, पर्वतिथि सेवंता रे आ०॥ २॥ पर्वतिथिमां बंधाय छे। प्रायें परभव आयु रे॥ तिणकारण तिथीतप करो। आगममांहि गवायुं रे॥ आ०॥ ३॥ बृहदावश्यक-वृत्तिमां। हरिभद्रसूरि बोले रे, तिम चूर्णि लघुवृत्तिमां, योग-शास्त्रमें खोले रे॥ आ०॥ ४॥ नवपद प्रकरणवृत्तिमां, दिन-कृत्य देवेंद्रसूरि रे॥ विधिप्रपा पंचाशक वलि। इम अधिकार छे भूरि रे॥ आ०॥ ५॥ सामयक पहिलां कह्यो। पाछल इरियानो पाठ रे॥ जाणे पण माने नहिं। एह कर्मनो ठाठ रे॥ आ०॥ ६॥ विधिथी सामायिक करो। जिम पामो भवपारो रे॥ अविधिथी किरिया करी। नवि छुटे भवनो लारो रे॥ आ०॥ ७॥ ढाल दुसरी॥ यतनी॥ परव-तिथिये पोषध करिये। शुद्ध आगमने अनुसरिये। वलि आठ कर्मने हरिये। सलूणा भाव भले आराधो। ए तो आराधि शिवसुख साधो। सलुणा आठम तिथी आराधो॥ १॥ आठम दोय चउदस कहीये। अमावास पूनिम लहिये। एह छ तिथी चारित्र वहिये॥ स०॥ भा०॥ २॥ वली कल्या-णक तिथी जाणो। पजुषण मनमां आणो। इत्यादिक पर्व पिछाणो॥ स०॥ भा०॥ ३॥ बीजे अंगे पांचमें अंगे। उपासकदशा सुसंगे। आवस्यक टीका उमंगे॥

स० ॥ भा० ॥ ४ ॥ इत्यादिक आगम साखे । पर्व तिथिये पौषध भाखे । विधियुत करतां फल चाखे ॥ स० ॥ भा० ॥ ५ ॥ जे नित्य पोषधने ताणे । आगम विधि ते नवि जाणे हरिभद्रवचन परमाणे ॥ स० ॥ भा० ॥ ६ ॥
॥ ढाल तीसरी ॥ जइने कहेजो मारा वालाजी रे-ए देशी ॥
आठम परव तिथि कही । मारा वालाजी रे । आराधो गुणगेह । जगगुरु वंदिये । मारा वालाजी रे । एह तिथि कल्याणक घणा । मारा वालाजी रे त्रिहुं काल नाणिणो तेह । जगगुरु वं० मारा वालाजी रे ॥ १ ॥ आचाराङ्गमां भाखिया ॥ मा० ॥ वा० ॥ भावना अध्ययन-सार ॥ ज० ॥ मा० ठाणांग ठाणे पांचमे ॥ मा० ॥ वा० ॥ कल्पसूत्र मनुहार ॥ ज० ॥ २ ॥ आगम प्रकरण चरित्र घणा ॥ मा० ॥ वा० ॥ एमां प्रकटपणे तू जोय ॥ ज० ॥ वं० ॥ षट्र कल्याणक वीरना ॥ मा० ॥ वा० ॥ आगम मांहे होय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ३ ॥ पजूसण कल्पे कह्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ पचास दिवस प्रमाण । तेह नवि माने मानथी ॥ मा० ॥ वा० ॥ जिन आज्ञा सुख खाण ॥ ज० ॥ वं० ॥ ४ ॥ इस अनेक कल्पना करी ॥ मा० ॥ वा० ॥ मन मान्यो माने कोय ॥ ज० ॥ वं ॥ तुज आगम मुज मन वस्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ एहिज भवभव होय० ॥ ज० ॥ वं० ॥ ५ ॥ विसंवाद घणो पड्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ केहने कहिये जाय ॥ ज० ॥ वं० ॥ अतिशय ज्ञानी तणो पड्यो ॥

मा० ॥ वा० ॥ विरह ते केम खमाय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ६ ॥ दुःषमकालमां ऊपनो ॥ मा० ॥ वा० ॥ दक्षिण भरत मझार ॥ ज० ॥ वा० ॥ प्रभुनो सरणो में ग्रह्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ प्रभु छो प्राण आधार ॥ ज० ॥ वं० ॥ ७ ॥ तारक तारो तातजी ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं छुं सेवक तुज्झ ॥ ज० ॥ वं० ॥ अपराधि घणा तारिया ॥ मा० ॥ वा० ॥ केम विसारसो मुज्झ ॥ ज० ॥ वं० ॥ ८ ॥ कलस ॥ श्री वीरजिनवर भविकसुखकर मात्र त्रिशला नन्दनो । में थुण्यो आगम भक्तिसंयुक्त दुरितकर्म निकंदनो । शुभ वरस उगणीसे चमोत्तर भाद्रव सुदि आठम समें, जिन कृपाचन्द्रसूरि स्तवन कीधो अनुभव ज्ञानप्रकाशमें ॥ ९ ॥

॥ इग्यारस का वृद्ध-स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्ति श्रीमंगलकरण, हरण ताप जिणचंद, वीरजिणंद दिनंदसम, प्रणमुं धरी आनंद ॥ १ ॥ गौतम आदि गणधरा, श्रुतकेवलि सुविहाण, त्रिकरणयोगे वंदता, पामे कोड कल्याण ॥ २ ॥ एकादशी तिथी वर्णवुं, शास्त्रतणे अनुसार, विधिपूर्वक आराधतां, पामे भवनो पार ॥ ३ ॥ (ढाल १) पणिहारीकी ॥ देशी ॥ नेमिजिनेसर उपदिशे, सुख-कारी रे लोय, सांभले कृष्णराजान, वाला छो द्वारिकानगरी समवसर्या ॥ सु० ॥ रैवताचल उद्यान ॥ वा० ॥ ४ ॥ पर्वा-राधन फल घणो ॥ सु० ॥ सांभले परषदा चार ॥ वा० ॥ पर्युषण चउमासा भला ॥ सु० ॥ नवपद ओलीसार वा० ॥ ५ ॥

पञ्चमी बीज आठम कही ॥ सु० ॥ जिनकल्याणक जाण ॥ वा० ॥ एकादशी इम जाणियै ॥ सु० ॥ पर्वाधिक मन आण ॥ वा० ॥ ६ ॥ मगसरसुदि एकादशी ॥ सु० ॥ पर्वमांहि श्रीकार ॥ वा० ॥ अरनाथ दीक्षा ग्रही ॥ सु० ॥ पाम्या भवनो पार ॥ वा० ॥ ७ ॥ मल्लिजन्म संजम लियो ॥ सु० ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ वा० ॥ नमिनाथने ऊपनो ॥ सु० ॥ केवल नाण प्रधान ॥ वा० ॥ ८ पांच कल्याणक अति भला ॥ सु० ॥ थया इण भरत मझार ॥ वा० ॥ तिमहिज ऐरवत खेत्रमां ॥ सु० ॥ भाखे जगदाधार ॥ वा० ॥ ॥ ९ ॥ पांच भरत ऐरवत वलि ॥ सु० ॥ पांच कल्याणक जाण ॥ वा० ॥ दश खेत्रना इम जाणियै ॥ सु० ॥ पचाश कल्याणक आण ॥ वा० ॥ १० ॥ तीन काल गिणतां थकां ॥ सु० ॥ दोढसै कल्याणक थाय ॥ वा० ॥ तिथीमांहि सिरोमणि ॥ सु० ॥ इग्यारस सुखदाय ॥ वा० ॥ ११ ॥ अनंत कल्याणक इण परे ॥ सु० ॥ अनन्त चोवीसी जोय ॥ वा० ॥ मौन करी आराधीवे ॥ सु० ॥ एहथी सिवसुख होय ॥ वा० ॥ १२ ॥ चोविहार उपवासथी ॥ सु० ॥ पोसह करीने सार ॥ वा० ॥ सुगुरु चरण सेवी करी ॥ सु० ॥ काउसग्ग दिलधार ॥ वा० ॥ १३ ॥ मौन करी मल्लिनाथजी ॥ सु० ॥ एक दिवस सुखकार ॥ वा० ॥ मौन प्रथा इण परि थई ॥ सु० ॥ लह्यो केवल श्रीकार ॥ ॥ वा० ॥ १४ ॥ (ढाल—२) माता त्रिशला झुलावे पुत्र

पालणे । ए देशी । सुखकर देवनिरञ्जन नेमजिनेंद्र इम उपदिसै ॥ ए आंकणी ॥ भविजन भाव धरीने सांभले श्री जिनवाण, अमीरस वयणे श्रवण अञ्जलीभर पीवतां, एतो जायै भव भव निर्मित कर्म निवाण ॥ सु० ॥ १५ ॥ भवियण अङ्ग इग्यार आराधवा, तप विधिए कही जेहथी पामे अनुपम, महिमा अतुल अपार, वरस इग्यारसें मास एकादश तप करो, संपूरण तप हुआ होवे मंगलकार ॥ सु० ॥ १६ ॥ भ० ॥ अङ्ग अग्यारे लिखावे सुवरण अक्षरे, पुस्तक पुट्ठाठवणी नवकरवाली सार, कवली झिल मिल पाटीने वली पाटली, वीटणा मखमल रेसम वरतणा मनुहार ॥ सु० ॥ १७ ॥ भ० ॥ डोरा लेखण झावी वासकुं पाटलि कोथली, चटचो सिंहासण ने चन्दरवा अधिकार, पूठीया चौपड़ रुमाल नाना भातिना, पाटा पाटलाने त्रिगडो रचे सुखकार ॥ सु० ॥ ॥ १८ ॥ भ० ॥ केसर सुखड समकूंची ने वाटकी, प्याला ने कलसा अंगलूहणा दिलधार, चामर छत्र त्रयने आभूषण रत्ने जड्या, रचियें वासखेपादि पूजा विविध प्रकार ॥ सु० ॥ १९ ॥ भ० ॥ देवपूजा तिम गुरुपूजा विधि आदरो, करियें साहमीवच्छल धरियें भाव विसाल, रात्रिजागो करि जिन गुण गावो प्रीतसुं, अधिको धन खरचीने लहिये रंग रसाल ॥ सु० ॥ २० ॥ भ० ॥ इग्यारसनो तप सेवो भले भावसुं, सुव्रत सेठे पोसधथी चित लाय, चोर अगनिना उपद्रवथी ते ऊगर्यां, ए तिथी सेव्यां सिव मारगमां सुखे जनाय

॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इम नेमि जिनवर स्यामसुखकर सिवादेवी नंदनो, एकादशीतप फल प्रकास्यो भविकजन आनंदनो, सर, नय, निधि, भू (१९७५) विक्रम वरसै पोप वदि एकादशी, जिनकृपाचंद्रसूरि पभणे सुगुरु सेवो उलसी ॥ २२ ॥

॥ श्री तीर्थमालास्तवन ॥

शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सीधा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ १ ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगते गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ २ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे । भरते भराव्यो बिंब ॥ ती०॥३॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे । विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ ४ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे । सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ ५ ॥ नयरी चंपा निरखीये, हिये हरखीये रे । सिद्धा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ६ ॥ पूर्वदिशे पावापुरी, ऋध्धे भरी रे । मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ ७ ॥ जेसलमेर जुहारीये, दुःख वारीयें । अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ८ ॥ बीकानेरज वंदीयें, चिरनंदियें रे । अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ ९ ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे । फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ १० ॥ अंतरीक अजावरो, अमीझरो रे । जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ ११ ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे । राणपुरे रिसहेस

॥ ती० ॥ १२ ॥ श्रीनाडुलाई जादवो, गोडी स्तवो रे। श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ १३ ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे। रुचक कुंडल चार चार ॥ ती० ॥ १४ ॥ शाश्वती अशाश्वती प्रतिमा छती रे। स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥१५॥ तीरथ यात्रा फल तिहां, होजो मुझ इहां रे। समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ श्री सीमंधर-जिन-स्तवन ॥

धन धन खेत्र महाविदेह जी, धन्य पुंडरिकणी गाम, धन्य तिहांनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम। सीमंधर स्वामी कइयें रे, हुं महाविदेहे आवीश, जयवंता जिनवर कइयें रे, हुं तुमने वांदिश ॥ १ ॥ चांदलीया संदेशडो जी, कहेजो सीमंधर स्वाम, भरतक्षेत्रना मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥ सीं० ॥ २ ॥ समवसरण देवे रच्युं तिहां, चौसठ इंद्र नरेश, सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर छत्र धरेश ॥ सीं० ॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहुंलीजी, मोतीनां चौक पूरेश, ललिललि लीये लुंछणांजी, जिनवर दीये उपदेश ॥ सीं० ॥ ४ ॥ एहवे समें में सांभल्युंजी, हवे करवा पच्चक्खाण, पोथी ठवणी तिहां कनेजी, अमृत वाणी वखाण ॥ सीं० ॥ ५ ॥ रायनें वालां घोडलाजी, वेपारीने वाला छे दाम, अमने वालां सीमंधर स्वामी, जेम सीताने श्रीराम

॥ सी० ६ ॥ नहि मांगु प्रभु राजरीद्धिजी, नहि मांगु गरथ भंडार, हुं मांगु प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ दैवे न दीधी पांखडीजी, केम करी आवुं हजूर, मुजरो मारो मानजोजी प्रह ऊगमते सुर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समयसुंदरनी विनतीजी, मानजो वारंवार, बे कर जोडी विनवुंजी विनतडी अवधार ॥ सी० ॥ ९ ॥ इति

॥ श्री गौतमस्वामीजी का रास ॥

वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कय वासो, पणमवि पभणिसुं सामीसाल, गोयम गुरु रासो । मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मंडण, मगध देस सेणिय नरेस, रिऊ दल बल खंडण । धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय, तेजहिं तारा चन्द्र सूरि, आकाश भमाडिय । रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरमें मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पेक्खवि निरूवम रूव जास, जण

जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या संचिय। अहवा निश्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गङ्ग, तिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो, पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो। करिय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥

वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरहवासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्बर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥

भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चौविह संघ पइट्ठा जाणी। पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामति छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जावे नाठा जिम दिन चोरा। देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि विरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसमरसभर

वर वरसंता, जोजन वाणि वखाण करंता। जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता। पेक्खवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर करंडक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहता। तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपे तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोइ जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दिजे ॥ १५ ॥

वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न, पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसार-तारण, तिहिं देवइ निम्महिय समवसरण वहु सुक्ख कारण, जिणवर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार, सिंहासण सामी ठव्यो हुओ सुजय जयकार ॥ १६ ॥

भास ॥ तो चढियो घण मान गजे, इद्रभूइ भूयदेव तो, हुंकारो करी संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो। जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो, दह दिसि देखे विवुध वधू, आवंती सुररम्भ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जंतुगण, प्राति-हारिज आठ तो। सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो, चित्त चमकिय चिंतवे ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिय रूप विसाल तो, एह असंभव

संभवे ए, साचो ए इंद्रजाल तो । तो बोलावइ त्रिजगतगुरु, इंद्रभूइ नामेण तो, श्रीमुख संसय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेलि मद ठेलि करी, भगते हिं नाम्यो सीस तो, पंचसयांसु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो । बंधव संजम सुणिवि करी, अगनिभूइ आवेय तो, नाम लेई अभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेसे भुवन गुरु संयम शुं व्रत बार तो । बिहुं उपवासे पारणो ए, आपणपे विहरंत तो, गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥

वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंत; जे जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो, बोधिबीज सज्झाय मने, गोयम भवहि विरत्त; दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥

भास ॥ आज हुओसुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो; दीठा गोयम सामि, जो निय नयणे अमिय झरो । समवसरण मझार, जे जे संसा ऊपजे ए; ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजे दीख, तीहां तीहां केवल ऊपजे ए; आप कने अणहुंत, गोयम दीजें दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय;

इणि छल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढी चउवीस जिण । आतम लब्धिवसेण, चरमसरीरी सो य मुनि । इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग, अम्हां सगति न ऊपजे ए । किम चढसे दढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ एणे अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए । तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्फन्न दंडकलश ध्वजवड सहिय; पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरहेसर महिय । निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह विंब । पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर-सामीनो जीव, तिर्यक्जृंभक देव तिहां, प्रतिवोध्या पुंडरिक, कंडरिक अध्ययन भणी । वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिवोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे । पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा गुरु संयोग, कवल ते केवलरूप हुआ ॥ २९ ॥ पञ्चसयां जिण-नाह, समवसरण प्राकारत्रय । पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे । जाणे जणवि पीयूप, गाजंतो घन मेघ जिम । जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥

वस्तु ॥ इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे नाण संपन्न, पन्नरह सय परिवरिय। हरिय दुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहनाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव। छेही जाइ आपण सही, होस्यां तुल्ला वेउ ॥ ३१ ॥

भास ॥ सामियो ए वीर जिणन्द, पुनमचन्द जिम उल्ल-सिय, विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस वहुत्तर संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय, आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखियो ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे, आपणो ए तिसला देवि, नंदन पुहतो परमपए। वलतो ए देव आकाश, पेखिवि जाण्यो जिण समे ए, तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कनासुं टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलुं ए कीधलुं सामि जाण्युं केवल मांगसे ए, चिन्तव्युं ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, भगतिहिं भोले भोलव्यो ए, आपणो ए अविहड नेह, नाह न संपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न जेणें लालियो ए, तिण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतुं ए जो उल्हट्ट, रहितुं रागे साहियो ए। केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमा-हियो ए। तिहुअण जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भवियण भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥

वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिह-वासें संवसिय, तीस वरस संजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुण नीलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥

भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमवने परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि । जिम गंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु वर कणय वतंसा, जिम महुयर राजीव वने । जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केलि वनें ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो । पञ्चानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुर तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए । जिम भूमिपति भुयबल चमके, जिम जिनमन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछित काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआए । कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे

थामी, सामी गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमती सोभा संभवे ए। देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनय पहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांई करीजे, देसदेसांतर कांई भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चउदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवंत विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा वित्तरो ए। गोयम सामीनो रास भणीजे, चउविह संघ रलियात कीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासन बेसणो ए। तिहां बेसी गुरु देशना देशी, भविक जीवना काज सरेशी, नित नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥ समाप्त ॥

श्रीशत्रुञ्जयरास।

दोहा—श्री ऋषहेसर पाय नमी, आणी मन आणंद। रास भणुं रलियामणो शत्रुंजयनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत

चार सत्तोतरे, हुवा धनेसरसूर। तिणे शत्रुंजय महातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीरजिणन्द समोसर्या, शत्रुंजय उपर जेम। इन्द्रादिक आगल कह्यो, शत्रुंजय महातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुंजय तीरथ सरिखो, नहीं छे तीरथ कोय। स्वर्ग मृत्यु पाताल में, तीरथ सघला जोय ॥ ४ ॥ नामे नवनिधि संपजे, दीठा दुरित पलाय। भेटंतां भवभय टले, सेवंतां सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार। सोरठ देश सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

ढाल पहली-(राग रामगिरि)-शत्रुंजय ने श्री पुण्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहुं तहतीक। विमलाचलने करूं परणाम, ए शत्रुंजयना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि ने महागिरि पुण्यरास, श्रीपद पर्वत इन्द्रप्रकास। महातीरथ पूरवे सुखकाम ए० ॥ २ ॥ शासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनीलो तिणे कीजे भक्ति। पुष्पदंत महापदम सुठाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश, पातालमूल अकर्मक तास। सर्व काम कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ ए शत्रुंजयना इकवीस नाम, जपेज वैठा आपणे टाम। शत्रुंजय जात्रानो फल लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ५ ॥

दोहा—शेत्रुञ्जो पहिले आरे, असी जोयण परमाण। पिहुलो मूल ऊंच पण, छव्वीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सित्तर

जोयण जाणवो, बीजे आरे विशाल। वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुज वंदन त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे आरे, पिहुलो तीरथराय । सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यान धरूं चित्त लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुल पण, चौथे आरे मझार । ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमे नरनार ॥ ४ ॥ बार जोयण पञ्चम आरे, मूल तणे विसतार । दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुञ्जो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ छट्ठे आरे, पिहुलो परवत एह, ऊंचो होसे सो धनुष्य, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

ढाल दूसरी–(जिनवर सुं मेरो मन लीनो, ए राग)–
केवलज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर, अनन्त सिद्धा इण ठाम रे । अनन्त वली सीझसे इण ठामे, तिण करूं नित्य प्रणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुञ्जे साधु अनन्ता सिद्धा, सीझसी वलीय अनन्त रे । जिण सेत्रुञ्ज तीरथ नहीं भेट्यो, ते गरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागण सुदि आटमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे । रायण रूंख समोसर्या स्वामी, पूरव निनाणुं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुञ्जय गिरि आयरे । पांच कोडीसुं पुण्डरीक सिद्धा, तिण पुण्डरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोडी संघात रे । फागण सुदि दशमी दिन सिद्धा, तिण प्रणमुं प्रभात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्र मास वदि चउदसने दिन, नमी पुत्री चौसट्ठ रे । अणसण करी

सेत्रुञ्ज गिरि ऊपर, ए सहु सिद्धा एकट्ठ रे ॥ से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकरकेरा, द्राविड ने वारिखिल्ल रे । काति सुदि पूनम दिन सिद्धा, दश कोडी सुं मुनि सिल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिरि सिद्धा, नव नारद ऋषिराय रे । शांब प्रद्युम्न गया इहां मुगते, आठे करम खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेमि विना तेवीस तीर्थंकर, समोसर्या गिरिश्रृंग रे । अजित शांति तीर्थंकर वेउ, रह्या चोमासो रंग रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चा सुक साथ रे । पांचसे साधु सुं सेलग मुनिवर, सेत्रुञ्जे शिव-सुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुञ्जे सिद्धा, भरतेश्वरने पाट रे । राम अने भरतादिक सिद्धा, मुक्ति तणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जाली मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडी रे । साधु अनन्ता सेत्रुञ्जे सिद्धा, प्रणमुं वेकर जोडी रे ॥ से० ॥ १२ ॥

ढाल तीसरी—(राग चौपाई)—सेत्रुञ्जेना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहु को सुविचार । सुणतां आनंद अंग न माय, जनम जनमनां पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर्या स्वामी हितकारी । भरत गयो वंदणने काज, ए उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा अरिहंत देव, चौसठ इन्द्र करे जसु सेव । तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवर राय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो

संघवी कह्यो, भरत सुणीने मन गहगह्यो । भरत कहे ते किम पामिये, प्रभु कहे सेत्रुञ्जे जात्रा किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवी पद मुझ थे, आपो हूं अंगज तुझ । इन्द्रे आण्या अक्षतवास, प्रभु आपे संघवी पद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा विहुंने माल । पहिरावी घर संप्रेडिया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ ऋषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्न तणी दीधी मन रलि । भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देश, भरत तेडायो संघ अशेष । आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम तीर्थंकर जात्रा करी ॥ ८ ॥ संघभक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो सेत्रुंजा भणी । गणधर बाहुबली केवली, मुनिवर कोड़ि साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तिनी सघली रिद्धि, भरते साथे लीधी सिद्धि । हय गय रथ पायक परिवार, तेतो कहेतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहिवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय । संघ आयो सेत्रुञ्जे पास, सहुनी पुगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे नीरख्यो शत्रुञ्जय राय, मणि माणिक्य मोत्यां सुं वधाय । तिण ठामे रही महोच्छव कियो, भरते आणंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुञ्जे ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिक झड पड्यो । केवलज्ञानी पगला तिहां, प्रणम्या रायण रूंख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेन्द्र आणी सुपवित्त । नदी शत्रुञ्जय सोहामणी, भरते दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥

गणधर देव तणे उपदेश, इन्द्र वली दीधो आदेश।
श्रीआदिनाथ तणो देहरो, भरते करायो गिरि सेहरो ॥ १५ ॥
सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग।
भरते श्री आदिसरतणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥
मरुदेवीनी प्रतिमा भली, माही पूनम थापी रली। ब्राह्मी
सुन्दरी प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥
इम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद।
भरत तणो पहिलो उद्धार, सगलो ही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी—(राग-सिन्धुडो-आशावरी)—भरत तणे पाटे आठमे, दण्डवीरज थयो रायोजी। भरत तणी परे संघ कियो, शत्रुञ्जय संघवी कहायोजी ॥ १ ॥ सेत्रुञ्जे उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारोजी। असंख्यात बीजा वली, तेहनो कहुं अधिकारोजी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिंब सारोजी। मूलगो बिंब भंडारियो, पच्छिम दिशि तिण वारोजी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जेनी जात्रा करी सफल कियो अवतारोजी। दंडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जिवारोजी। ईशानेन्द्र करावीयो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चौथा देवलोकनो धणी, माहेन्द्र नाम उदारोजी। तिण सेत्रुञ्जेनो करावीयो, ए चोथो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी,

ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी । तिण सेत्रुञ्जेनो करावियो, ए पांचमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपति इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारोजी । चक्रवर्ति सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुञ्जेनो अधिकारोजी । व्यंतर इन्द्र करावियो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ९ ॥ चन्द्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चन्द्रशेखर नाम मल्हारोजी । चन्द्रजस राय करावियो, ए नवमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १० ॥ शान्तिनाथनी सुणी देशना शान्तिनाथ सुत सुविचारोजी । चक्रधर राय करावियो, ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जग दीपतो, मुनिसुव्रत स्वामी वारोजी । श्रीरामचन्द्र करावियो, ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अम्हें पापीया, किम छूटां मोरी मायोजी । कहे कुन्ती सेत्रुंजतणो, यात्रा कियां पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचे पाण्डव संघ करी, सेत्रुञ्जे भेट्यो अपारोजी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी, प्रतिमा सुन्दर सरूपोजी । श्रीसेत्रुञ्जेनो संघ करी, थापी सकल स्वरूपोजी ॥ से० ॥ १५ ॥ अठोत्तर सो वरसां गयां, विक्रम नृपथी जिवारोजी । पोरवाड जावड करावियो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १६ ॥ संवत बार तिडोत्तरे, श्रीमाली सुविचारोजी । बाहडदे मुहते करावियो, ए चौदमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसल हर अधिकारोजी । समरेशाह करावियो, ए पनरमो उद्धारोजी

॥ से० ॥ १८ ॥ संवत पन्नर सत्यासीये, वैशाख वदि शुभवारोजी । करमे डोसी कराविये, ए सोलमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारोजी । नित नित कीजे वंदना, पामीजे भव पारोजी ॥ से० ॥ २० ॥

दोहा— वली सेत्रुञ्जे महातम कहुं, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी, सेत्रुञ्जे पूजनिक । भगवंतनो वेश वांदतां लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुञ्जा उपरे, चैत्य करावे जेह । दल परमाण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जा ऊपर देहरो, नवो नीपजावे कोय । जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे । नार चक्रवर्तिनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुञ्जे, चडीने करे उपवास । नारकी सो सागर समो, करे करमनो नाश ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सिद्ध दश कौड़ । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नांखे छोड ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेष । सेत्रुञ्जे साधु पडिलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

ढाल पांचमी-(धन २ अयवंती सुकुमालने, ए देशी)— सेत्रुंजे गयां पाप छूटीये, लीजे आलोयण एमो जी । तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तांसो जी ।

चैत्री दिने सेत्रुञ्जे चढ़ी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तु तणी चोरी करी, सात आंविल शुद्ध थायो जी । काती सात दिन तप कियां, रतन हरण पाप जायो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणे जी । सात दिवस पुरिमढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मूंगीया, जीण चोर्या नरनारो जी । आंविल करी पूजा करे, त्रण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ धान पाणी रस चोरीया, जे भेटे सिद्धक्षेत्रो जी । सेत्रुञ्जे तलहटी साधुने, पडिलाभे शुद्ध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छूटे इण मेलो जी । आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहु वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध थावे एमो जी । अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोड़ा मही, गजनो चोरणहारो जी । दीये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरां पारकां, तिहां लिखे आपणो नामो जी । छूटे छम्मासी तप कियां, सामायिक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारो जी । व्रत भांजे तिणने कर्यो, छम्मासी तप सारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ गौ विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी । प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप करी तेहो जी ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ से० ॥ १८ ॥ संवत पन्नर सत्यासीये, वैशाख वदि शुभवारोजी । करमे डोसी कराविया, ए सोलमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारोजी । नित नित कीजे वंदना, पामीजे भव पारोजी ॥ से० ॥ २० ॥

दोहा—वली सेत्रुञ्जे महातम कहुं, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी, सेत्रुञ्जे पूजनिक । भगवंतनो वेश वांदतां लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुञ्जा उपरे, चैत्य करावे जेह । दल परमाण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जा ऊपर देहरो, नवो नीपजावे कोय । जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे । नार चक्रवर्तिनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुञ्जे, चडीने करे उपवास । नारकी सो सागर समो, करे करमनो नाश ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सिद्ध दश कोड़ । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नांखै छोड ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुण्य विशेप । सेत्रुञ्जे साधु पडिलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

ढाल पांचमी–(धन २ अयवंती सुकुमालने, ए देशी)–
सेत्रुंजे गयां पाप छूटीये, लीजे आलोयण एमो जी । तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तांसो जी ।

चैत्री दिने सेत्रुञ्जे चढ़ी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तु तणी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध थायो जी । काती सात दिन तप कियां, रतन हरण पाप जायो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणे जी । सात दिवस पुरिमढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मूंगीया, जीण चोर्या नरनारो जी । आंबिल करी पूजा करे, त्रण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ धान पाणी रस चोरीया, जे भेटे सिद्धक्षेत्रो जी । सेत्रुञ्जे तल-हटी साधुने, पडिलाभे शुद्ध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छूटे इण मेलो जी । आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहु वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध थाये एमो जी । अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोड़ा मही, गजनो चोरणहारो जी । दीये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरां पारकां, तिहां लिखे आपणो नामो जी । छूटे छम्मासी तप कियां, सामायिक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारो जी । व्रत भांजे तिणने कह्यो, छम्मासी तप सारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ गौ विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहो जी । प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप करी तेहो जी ॥ से० ॥ १२ ॥

ढाल छठ्ठी—(कुमार भले आवीयो, ए देशी)—संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार। सेत्रुञ्जे यात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ से० ॥ १ ॥ छह री पालतां चालीये ए, सेत्रुञ्जे केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पहुंचीये ए, संघ मील्या वहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललिय सरोवर पेखीये ए, वलि सतानी वाव ॥ से० ॥ तिहां विसरामो लीजिये ए, वडये चोतरे आवि ॥ से० ॥ ३ ॥ पालीताणे पाजडी ए, चढ़ीए ऊठी परभात ॥ से० ॥ सेत्रुञ्जे नदीय सोहामणी ए, दूर थकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढ़िये हिंगुलाजने हडे ए, कलिकुंड नमीये पास ॥ से० ॥ वारीमांहे पेसीये ए, आणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवी ट्रंक मनोहरु ए, गज चढ़ी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शान्तिनाथ जिन सोलमा ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंश पोरवाड़ परगडो ए, सोमजी शाह मल्हार ॥ से० ॥ रूपजी संघवी करावीयो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमतीमांहि भला विंव ॥ से० ॥ पांचे पांडव पूजिये ए, अद्भुत आदि प्रलंव ॥ से० ॥ ८ ॥ खरतरवसही खांतिसु ए, विंव जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ चवरी नमुं ए, टालुं अलग उद्वेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरम दुवारमांहिं नीसरूं ए, कुगति करूं अति दूर ॥ से० ॥ आवुं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत ॥ से० ॥ देव जुहारुं देहरे ए, भमती-

मांहि भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ सेत्रुञ्जे उपर कीजिये ए, पांचे ठाम सनात्र ॥ से० ॥ कलश अट्ठोत्तर सो करी ए, निरमल नीरसुं गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदिसर आगले ए, पुंडरीक गणधर ॥ से० ॥ रायल तल पगला नमुं ए, शान्तिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १३ ॥ रायण तल पगला नमुं ए, चोमुख प्रतिमा चार ॥ से० ॥ वीजी भूमि विंबावलि ए, पुडरीक गणधार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरजकुण्ड निहालीये ए, अति भली उलका झोल ॥ से० ॥ चेलणा तलाई सिद्ध-शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ से० ॥ १५ ॥ आदिपुर पाजे उतरुं ए, सिद्धवड लहुं विसराम ॥ से० ॥ चैत्य-प्रवाडी इणपरि करी ए, सीधा वंछित काम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुञ्जातणी ए, सफल कियो अवतार ॥ से० ॥ कुशल खेमसुं आवियो ए, संघ सहु परिवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुञ्जारास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहु कोई ॥ से० ॥ घर वेठा भणे भावसुं ए, तसु जात्रा फल होई ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासीये ए, सावण वदि सुखकार ॥ से० ॥ रास भण्यो सेत्रुञ्जा तणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गच्छ खरतरतणो ए, श्रीजिनचन्द्रसूरीस ॥ से० ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना ए, सकलचन्द्र-सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ तास शिष्य जग जाणीए ए, समयसुन्दर उवज्झाय ॥ से० ॥ रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥ २१ ॥

इति शत्रुञ्जयरास ॥

॥ श्री सिद्धगिरि-स्तवन ॥

अंग उमाह्यो मन अतिघणो, भेटवा विमल गिरिंद रे पंथिडा । नाभिराया कुलचंदलो, जिहां वसे मरुदेवीनो नंद रे पंथिडा ॥ १ ॥ वहिलुं वोले रे वहिलु वोले, शत्रुंजो छे कितनीक दूर रे पंथिडा व० (आंकणो) पालीताणो नगर सोहामणो, रुडी रुडी ललतासररी पाल रे पंथिडा । जिहां आंवला वडला अति घणा, झुक रही चंपलारी डाल रे पंथिडा ॥ व० ॥ २ ॥ धन ते पंखी पारेवडा, शत्रुंजे वसिया जे मोर रे पंथिडा । उमाह्यो करीने जे घर रहे, माणस नहीं ते ढोर रे पंथिडा ॥ व० ॥ ३ ॥ शत्रुंजे वाटे चालतां, झीणी उंडे खेह रे पंथिडा । मैला रे थाय कापडा, निर्मल थाये देह रे पंथिडा ॥ व० ॥ ४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो रे, आगल चोक विशाल रे पंथिडा । जिहां विमला मिल मिल घणा मानवी, गावै जिन गुण माल रे पंथिडा ॥ व० ॥ ५ ॥ घस केसरना वाटका, पूजे जिनवर अंग रे पंथिडा । फुलत सो हे प्रभु सिर सेहरो, दिवलैरी ज्योत अभंग रे पंथिडा ॥ व० ॥ ६ ॥ गिरवर दीठां मांह्य रे उपजे दिलमां आणंद रे पंथिडा । म्हांरे भेटणारो कोड, छै प्रेम घणें जिनचंद रे पंथिडा ॥ व० ॥ ७ ॥ इति ॥

इति थुइ-स्तवनसंग्रह समाप्त ।

अथ

पाक्षिक-चातुर्मासिक-सांवत्सरिक-प्रतिक्रमणविधिः ।



दिन के अन्तिम प्रहर में पौषधशाला आदि किसी एकान्त स्थान में जाकर, प्रथम सामायिक लेनेके लिये उस स्थानका तथा वस्त्र का पडिलेहन करें । पीछे मुनिराज न हों तो उच्च स्थान पर पुस्तक या नवकारवाली आदि रख कर 'तीन नवकार' पढ़ कर स्थापनाजी स्थापन करे । बादमें (पृ० २ लिखे अनुसार) तीन खमासमण देकर 'इच्छकार भगवन् !०' (सुखपृच्छा) पूछ कर 'अब्भुट्ठिओमि०' खमाकर श्रीगुरु महाराज को या स्थापनाचार्यजी को वंदना करे । पीछे स्थापनाचार्य के सामने उकडु आसन (दोनों पैर पर) बैठ कर, भूमि प्रमार्जन कर के बायें ओर आसन रख कर, चरवला मुँहपत्ति हाथ में लेकर (सामायिक लेवे) खमासमण दे—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण, संदिसह भगवन् ! सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ॥

(कहकर मुँहपत्ति पडिलेहना, पचीस वोल कहके पीछे।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसावुं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं 'इच्छं' ॥

(हाथ जोड मस्तक नमा कर तीन नवकार गिने, पीछे।)

" इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावो जी " ॥

(ऐसा बोलकर स्वयं तीन वार 'करेमि भंते' उच्चरे।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरिया-वहियं पडिक्कमामि? "इच्छं"। इच्छामि पडिक्क-मिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परिया-विया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-

संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां पर एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट 'लोगस्स' कहना ।)—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-

वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं" ॥

(अब नीचे बैठ कर मुँहपत्ति पडिलेहे और दो वार वांदणा दें । परंतु चउवीहाहार उपवास हो तो मुँहपत्ति नहीं पडिलेहे और वांदणा भी नहीं दे । तीवीहाहार उपवास हो तो मुहपत्ति पडिलेहे, परन्तु वांदणा नहीं दे ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए,

पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे

अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना। तिविहाहार उपवास, आयंबिल, एकासणा आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना।)

इच्छकार भगवन्! पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी ॥

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥

(पाणी विलकुल न पीना होवे तो चउवीहाहार पच्चक्खाण करना।)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ।

(केवल पानी पीना होवे तो दुविहाहार पच्चक्खाण करना।)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिस्सावुं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? 'इच्छं' ॥

(इस प्रकार कह आठ नवकार गिनना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे संदिस्सावुं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणे ठाउं ? 'इच्छं' ॥

(अब आसन बिछा कर बैठ जाय और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोल कर वस्त्र ग्रहण करें ।)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरण संदिस्सावुं ? 'इच्छं' ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पांगुरणो पडिग्गहुं ? 'इच्छं' ॥

(अब नीचे लिखे विधि अनुसार प्रतिक्रमण करें। प्रथम तीन खमासमण देकर चैत्यवंदन करें अर्थात् 'जय तिहुअण०' बोले।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ॥

जय तिहुअणस्तोत्र ॥

जय तिहुअणवरकप्परुक्ख !
जय जिण ! धन्नंतरि !,
जय तिहुअण-कल्लाण-कोस !
दुरिअक्करि-केसरि ! ।
तिहुअणजणअविलंघिआण !
भुवणत्तयसामिअ !
कुणसु सुहाइं जिणेस ! पास !
थंभणयपुरट्ठिअ ! ॥ १ ॥

तइ समरंत लहंति झत्ति वर-पुत्त-कलत्तइ,
धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण जण भुंजइ रज्जइ।
पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास! पसाइण,
इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख! सुक्खइ कुण मह जिण॥२॥
जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण,
चक्खुक्खीण खएणखुण्ण नर सल्लिय सूलिण।
तुह जिण! सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जय धन्नंतरि! पास! मह वि तुह रोगहरो भव॥३॥
विज्जा-जोइस-मंत-तंत-सिद्धीउ अपयत्तिण,
भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअण कल्लाण-कोस तुह पास! निरुत्तउ॥४॥
खुद्द पउत्तइ मंत-तंत-जंताइ विसुत्तइ,
चर-थिर-गरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउवग्ग विगंजइ।
दुत्थिअ-सत्थ अणत्थ-घत्थ नित्थारइ दय करि,
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करि-केसरि॥५॥
तुह आणा थंभेइ भीम-दप्पुद्धुर-सुरवर,
रक्खस-जक्ख-फणिंदविंद-चोरानल-जलहर।

जल-थलचारि रउद्द-खुद्द-पसु-जोइणि जोइय,
इअ तिहुअणअविलंघिआण जय पास! सुसामिय६
पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमं-चंचिय-चारुकाय किन्नर-नर-सुरवर।
जसु सेवहि कमकमलजुयल पक्खालियकलिमलु,
सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु॥७॥

जय जोइयमणकमलभसल!
भयपंजर कुंजर!,
तिहुअणजणआणंदचंद!
भुवणत्तयदिणयर!।
जय मइमेइणिवारिवाह!
जयजंतुपियामह!,
थंभणयट्ठिय! पासनाह!
नाहत्तण कुण मह॥८॥

बहुविह वन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहिं,
मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहिं।
जं ज्झायहि बहुदरिसणत्थ बहुनामपसिद्धउ,
सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पवद्धउ॥९॥

भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिय सरीरय,
तरलियनयण विसुन्न सुन्न गग्गरगिर करुणय ।
तइ सहसत्ति सरंत हुंति नर नासियगुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइ पास ! भयपंजर कुंजर ! १०

पइं पासिवि वियसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय—
वाहपवाहपवूढरूढदुहदाह सुपुलइय ।
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुरनर,
इय तिहुअण आणंदचंद ! जय पास ! जिणेसर॥११॥
तुह कल्लाण-महेसु घंटटंकारवपेल्लिय,
वल्लिरमल्ल महल्लभत्ति सुरवर गंजुल्लिय ।
हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणे वि महूसव,
इय तिहुअणआणंदचंद जय पास ! सुहुब्भव ! ॥१२॥
निम्मलकेवल किरणनियरविहुरियतमपहयर !,
दंसियसयलपयत्थसत्थ ! वित्थरियपहाभर ! ।
कलिकलुसियजणघूयलोयलोयणह अगोयर !,
तिमिरइ निरु हर पासनाह ! भुवणत्तय दिणयर! १३

तुह समरणजलवरिससित्त माणवमइमेइणि,
अवरावरसुहुमत्थबोहकंदलदलरेहिणि ।
जायइ फलभरभरिय हरियदुहदाह अणोवम,
इय मइमेइणि वारिवाह दिस पास मइं मम ॥ १४॥
कय अविकलकल्लाणवल्लि उल्लूरिय दुहवणु,
दाविय सग्ग-पवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु ।
जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजंतु पियामहु॥१५॥
भुवणारण्णनिवास-दरिय-परदरिसणदेवय,
जोइणिपूयणखित्तवालखुद्दासुरपसुवय ।
तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुदट्ठु अविसंठुलु चिट्ठहि,
इय तिहुअणवणसीह ! पास ! पावाइं पणासहि १६
फणिफणफारफुरंतरयणकररंजियनहयल !
फलिणीकंदलदलतमालनीलुप्पलसामल ! ।
कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिय !,
जय पच्चक्ख ! जिणेस ! पास ! थंभणयपुरट्ठिय ! १७
मह मणु तरलु पमाणु नेय वायावि विसंठुलु,
ने य तणुरवि अविणयसहावु आलसविहलंघलु ।

तुह माहप्पु पमाणु देव ! कारुण्णपवित्तउ,
इय मइ मा अवहीरि पास ! पालिहि विलवंतउ १८
किं किं कप्पिउ न य कलुणु किं किं व न जंपिउ,
किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव ! दीणयमवलंबिउ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहिं दुहत्तिहिं,
तह वि न पत्तउ ताणु किं पि पइ पहु ! परिचत्तिहि १९
तुहु सामिउ तुहु मायबप्पु तुहु मित्त पियंकरु,
तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि ताणु तुहु गुरु खेमंकरु।
हउं दुहभरभारिउ वराउ राउल निब्भग्गह,
लीणउ तुह कमकमलसरणु जिण ! पालहि चंगह॥
पइ कि वि किय नीरोय लोय कि वि पाविय सुहसय,
कि वि मइमंत महंत के वि कि वि साहियसिवपय।
कि वि गंजियरिउवग्ग के वि जसधवलियभूयल,
मइ अवहीरहि केण पास ! सरणागयवच्छल ! २१

पच्चुवयारनिरीह !
नाह ! निप्पन्नपओयण !,
तुह जिणपास !
परोवयारकरणिक्कपरायण !।

सत्तुमित्तसमचित्तवित्ति !
नयनिंदयसममण !,
मा अवहीरि अजुग्गओ वि
मइं पास निरंजण ! ॥ २२ ॥

हउ बहुविहदुहतत्तगत्तु तुहु दुहनासण परु,
हउ सुयणह करुणिक्कठाणु तुहु निरु करुणायरु ।
हउ जिण पास ! असामिसालु तुहु तिहुअणसामिअ
जं अवहीरहि मइं झखंत इय पास ! न सोहिय ॥२३॥
जुग्गाऽजुग्गविभाग नाह ! न हु जोयहि तुह समा,
भुवणुवयारसहावभाव करुणारससत्तम ।
समविसमइं किं घणु नियइ भुवि दाह समंतउ ?,
इय दुहिबंधव ! पासनाह ! मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥
न य दीणह दीणयं मुयवि अन्नु वि किवि जुग्गय,
जं जोइ वि उवयारु करहि उवयारसमुज्जय ।
दीणह दीणु निहीण जेण तइ नाहिण चत्तउ,
तो जुग्गउ अहमेव पास पालहि मइ चंगउ ॥ २५ ॥
अह अन्नु वि जुग्गय विसेसु किवि मन्नहि दीणह,
जं पासि वि उवयारु करइ तुहु नाह समग्गह ।

सुच्चिय किल कल्लाणु जेण जिण ! तुम्ह पसीयह,
किं अन्निण तं चेव देव ! मा मइ अवहीरह ॥ २६ ॥
तुह पत्थण न हु होइ विहलु जिण जाणउ किं पुण,
हउ दुक्खिय निरु सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमण ।
तं मन्नउ निमिसेण एउ एउ वि जइ लब्भइ,
सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥ २७ ॥
तिहुअणसामिय ! पासनाह ! मइ अप्पु पयासिउ,
किज्जउ जं नियरूवसुरिसु न मुणउ बहु जंपिउ
अन्नु न जिण जग्गि तुह समो वि दक्खिन्नु दयासउ,
जइ अवगन्नसि तुह जि अहह कह होसु हयासउ २८
जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलंवियउ,
तुवि जाणउ जिणपास तुम्हि हउँ अंगीकरिउ ।
इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु,
रक्खतहं नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥२९॥
एह महारिय जत्त देव एहु न्हवणमहूसउ,
जं अणलियगुणगहण तुम्ह मुणिजण अणिसिद्धउ।
एम पसीह सुपासनाह थंमणयपुरट्ठिय !,
इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ अणिंदिय ३०

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय, जय समत्थ-परमत्थ जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण, भवियह भीम भवत्थु भव अवणिंताणंतगुण, तुज्झ तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरं-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं

मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयल-मरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(अब चरवला मुँहपत्ती लेकर खडे होकर बोलना।)

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुव-सग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसं-चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर पहली थुई कहना।)—

द्रें द्रें कि धपमप, धुधुमि धों धों, ध्रसकि धरधपधोरवं। दोंदोंकि दों दों, द्राग्डिदि द्राग्डिदिकि, द्रमकि द्रण रण द्रेणवं॥ झझिंझेंकि झेंझें, झणणरणरण, निजकि निजजनरञ्जनम्। सुरशैलशिखरे, भवतु सुखदं पार्श्वजिनपतिमज्जनम् ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं

संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउ-स्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्ति-आए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-

ग्गेणं, भमलीए पित्त-मुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं २ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(यहाँ पर एक नवकारका काउस्सग्ग करनेके बाद दूसरी थुई कहना ।)

कटरेंगिगिनि थोंगिगिनि, किटति गिगुडदां, धुधुकि धुटनट पाटवं । गुणगुणण गुणगण, रणकि णें णें, गुणणगुणगणगौरवम् ॥ झझि झें कि झें झें, झणणरणरण, निजकि निजजन सज्जनाः । कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश-महे जिनाः ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहि-

यस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइ-जरामरण-सोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं,

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना ।)

ठकि ठूं कि ठूं ठूं, ठर्हिं ठर्हिक, ठर्हि पट्टास्ताड्यते । तललोंकि लोंलों त्रेंषि त्रेंषिनि, डेंषि डेंषिनि वाद्यते ॐ ॐ कि ॐ ॐ । थोंगि थोंगिनि, धोंगिं धोंगिनि कलरवे । जिनमतमनंतं महिम तनुतां, नमति सुरनर मुच्छवे ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥

उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स॥
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५॥

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव ३ अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुई कहना ।)—

खुंदांकि खुंदां, खुखुड्दि खुंदां, खुखुड्दि दों दों अंबरे। चाचपट चचपट। रणकि णें णें, डणण डें डें डंबरे। इह सरगमपधुनि, निधपमगरस, ससस ससुर-सेविता। जिननाट्य-रंगे, कुशलमुनिशं, दिशतु शासनदेवता ॥ ४ ॥

(अब नीचे बैठ कर बायां घुटना खडाकर 'नमोऽत्थुणं' बोलना।)

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं;

बुद्धाणं बोहयाणं; मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(यहां चार बार एक एक 'खमासमण' देकर 'श्री आचार्यजी मिश्र' आदि एक एक पद कहना । जैसे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री आचार्य जी मिश्र ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री उपाध्याय जी मिश्र ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । जंगम युगप्रधान वर्त्तमान आचार्य जी ... मिश्र ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। श्रीसर्वसाधु-जी मिश्र ॥

(ऐसे कह कर दहिने हाथको चरवले या आसन पर रख कर बायां हाथ मुँहपत्ति सहित मुखके आगे रख कर सिर नीचे झुका कर 'सव्वस्स वि' का पाठ बोलना।)

सव्वस्स वि देवसिअ-दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब खडे होकर बोलना।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो; अकप्पो, अकरणिज्जो,

दुज्झाओ, दुव्विंचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो; नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते; सुए, सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं; बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

('आजुणा चार प्रहर दिवसमें' का पाठ मन में चिन्तन करे या आठ नवकार का काउस्सग्ग करे, पीछे प्रगट 'लोगस्स' कहे।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहना और नीचे मुताबिक दो वार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं; निसीहि; अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ?

जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमा-समणो ! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमा-समणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोव-याराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्क-मामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खडे होकर बोलना ।)—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे देव-सिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माण-सिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ता-चरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं, गुणव्वयाणं

चउण्हं सिक्खावयाणं, वारसविहस्स सावग-धम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं अतिचार आलोऊँजी ? 'इच्छं'—

आजुणा चार प्रहर दिवस में जे में जीव विराध्या होय, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चोदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दोय लाख वेइंद्रिय, दोय लाख तेइंद्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चउद लाख मनुष्य। एवं चार गति के चौरासी लाख जीवायोनिमें म्हारे जीवें जे कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं।

पहले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमें परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमें मान, आठमें माया, नवमें लोभ, दशमें राग, इग्यारमें द्वेष, बारमें कलह, तेरमें अभ्याख्यान, चौदमें पैशून्य, पन्नरमें रति अरति, सोलमें पर-परिवाद, सत्तरमें मायामृषा-वाद, अढारमें मिथ्यात्व-शल्य, ए अढारे पाप-स्थानक मांही महारे जीवे जे कोई पाप सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवतां प्रत्ये भला जाण्यां होय, ते सवे हुं मन, बचन, कायायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली नवकरवाली, देवगुरु धर्म की आशातना करी होय। पन्नरे कर्मादानों की आसेवना करी होय। राज-कथा, देश-कथा, स्त्री-कथा, भक्त-कथा करी होय। ओर जो कोई पाप परनिन्दा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं

होय सो सर्व मन-वचन-कायायें करके दिवस अतिचार आलोयणा करके पडिक्कमणमें आलोउं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सव्वस्स वि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

(अब नीचे बैठ कर, दाहिना घुटना खडा करके 'भगवन् वंदितु सूत्र भणुं? इच्छं,' ऐसा कहे । पीछे तीन नवकार और तीन वार 'करेमि भंते' कहे ।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामा-इए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

वंदित्तु-श्रावक-प्रतिक्रमणसूत्रम्।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआ-रस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं,

चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मी, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयम्मी परिथूलगअलिअवयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूड-लेहे अ। बीअ-वयस्सइआरे,

पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयम्मी, थूलग-परदव्व-हरण-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ। कूड-तुल-कूड-माणे पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मी, निच्चं परदारगमण-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग-वीवाह-तिव्व-अणुरागे। चउत्थ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न खित्त-वत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ। उवभोगपरीभोगे, वीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते

पडिवच्छे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छो-सहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगाली-वण-साडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव दंत-लक्ख-रस-केस-विस-विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणकम्मं निल्लं-छणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजं-तग-तणकट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे। दिन्ने दवा-विए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुवट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे। वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइ-अम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्प-णिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामा-इय-वितह-कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे, रूवे अ पुग्गल-क्खेवे। देसावगासिअम्मी, बीए सिक्खावए

निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । कालाइक्कम-दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहि-एसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणु-कंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण-करण-जुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्सा, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्नाकसाय-दंडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो,

जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु स-पडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहि व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलो-अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तर-गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइ-आइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं

ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेणं तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ बोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। देवसिय आलोइ

पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय[1] मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

(यहां पाक्षिक मुहपत्ति पडिलेहना। बाद वांदणा दो देना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो[2] ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं, आवास्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,

---

१ चउमासिकप्रतिक्रमण में 'चउमासी' और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरी' बोलना चाहिये। २ चउमासीप्रतिक्रमण में "चउमासीओ" संवच्छरीप्रतिक्रमण में "संवच्छरो" इस प्रकार बोलना।

मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो

मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि॥

(अब गुरु कहे कि—"पुण्यवंतो देवसिने स्थानके पाक्खिक भणजो, छींक जयणा करजो, मधुर स्वरे पडिकमजो, खांसे तो विशुद्ध खासजो, मांडल माहिं सावचेत रहेजो" इस प्रकार गुरु के कहने बाद सब 'तहत्ति' कहे और खडे होकर 'अब्भुट्ठिओ' खामे।)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, पन्नरसण्हं दिवसाणं पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं पर पत्तिअं भत्ते, पाणे विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ

---

१ चउमासी-प्रतिक्रमण में "चउमासिअं खामेउं? इच्छं खामेमि चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस प्रकार बोलना, और संवच्छरी प्रतिक्रमण में संवच्छरिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठि राइन्दिवसाणं" इसी तरह बोलना चाहिये।

विणयपरिहीणं सुहुमं बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अब खड़े होकर बोले—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिअं आलोउं ? 'इच्छं'। आलोएमि । जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तिणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिय अतिचार आलोउं ? 'इच्छं'।

(यह कहकर पक्खिय अतिचार कहे—)

पाक्षिक अतिचार ।

नाणंमि दंसणंमि य,
चरणंमि तवम्मि तह य विरियंमि ॥
आयरणं आयारो,
इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, एवं पांचविध आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, वादर, जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तत्र ज्ञानाचारना आठ अतिचार "काले विणए वहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए, अठविहो नाण मायारो" ज्ञान-कालवेलामांहि पढिउं गुणिउं नही, अकाले पढिउं, विनय हीन वहुमान हीन योगोपधान हीन, श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो

व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीने वीसार्यों, तपोधन तणे धर्मैं काजो अण ऊधरे दांडी अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिज्झाई अणोझा कालवेलामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग कह्यां, पखे भण्यो, ज्ञानोप-गरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडी वही दस्तरी ओली या कागल प्रमुख प्रतें आशातना हुई, पग लागो, थूंक लागो, ओसीसे मूक्यो, कने छतां आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञा-पराधे विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः-

पर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतलो बोबडो हस्यो, वितर्क्यों आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषईओ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, वादर, जाणतां, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मिच्छा मि० ॥

दर्शना-चारना आठ अतिचार "निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अठ" देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं, सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी. धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मलमलिन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांहे

गुणवंततणी अनुपबृंहणा अस्थिरीकरण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी, संघमांहे थिरीकरण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उवेख्युं, छती शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिनभवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रें देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठबको लागो, मुखतणी बाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पड्यो, पडिलेहवो वीसार्यो, नवकरवालीने पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां, हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

चारित्राचारना आठ अतिचार "पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥

एस चरित्तयारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो"
इरिया-समिती भासा-समिती एषणा-समिती आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा-समिती उच्चारपासवण-खेलजल्लसंघाणपारिठावणीया-समिती, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं, साधु तणें सदैव श्रावक-तणे पोसह पडिक्कमणे लीधे अष्टविध चारित्रा-चार विषईओ जे कोई अतिचार पक्ष दिवस-मांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां, हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावकतणें धर्मं श्रीसम्यक्त्वमूल वारह व्रत श्रीसम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—
"संकाऽऽकंक्खा वितिगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु" संकाः—श्रीआरिहंत तणी वल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिन-

वचन तणो संदेह कीधो । आकांक्षा:–ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जू जूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आतंकें इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ठ मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विणा भूल्या अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्या, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम, अजापडिवा, प्रेतबीज, गोरत्रीज, विणायकचोथ, नागपाचमी, झूलणाछठ, शीलसातम, ध्रो–आठम, नउली नवम, अहवदसमी, व्रत इग्यारस, वत्सवारस, धनतेरस, अनंतचौदश, आदित्यवार, उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां, घर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि

न्हाया, अजाणनां थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां। वितिगिच्छाः—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह कीधो जिण आरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंच्छा कीधी, कुचारित्रिया देखी, चारित्रिया उपरें अभाव हुओ, मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देखी, प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो, श्रीसमकित विषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, वादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार, "वह वंध छविच्छेए, अइभारे भत्त पाण वुच्छेए" द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाव घाल्यो, गाढे वंधन वांध्यां, घणे भारे

पिड्या, निर्लांछन कर्म कीधां, चारा पाणी तणी वेला सार संभार न कीधी, लहिणे देणे किणही प्रतें लंघाव्युं, तणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं नहीं, गलाव्युं नहीं, अणगल पाणी झील्यां, लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं, साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआ, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कीडी मकोडी उदेही घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा वगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या, माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं, जीव रक्षा रूडे न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां खाटला तावडे झाटक्या, मुक्या मूकाव्या, जीवाकुल

भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी, पहिले स्थूल प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस माहे सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

बीजे स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार "सहसा रहस्स - दारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य" ॥ सहसात्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांते वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चिंतवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्रभेद कीधो, अनेराई किण-हीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देहणें व्यवसाय

वाद वढावढि करतां मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्यां॥ बीजे स्थूल मृषावाद व्रत विषइ जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस माहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं॥

त्रीजे स्थूल अदत्तादानविरमण व्रतना पांच अतिचार "तेनाहडप्पओगे०" घर वाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संवल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल मान माप वहोर्यां, दाणचोरी कीधी, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदी गांठ कीधी, किण-हीनें लेखे पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे स्थूल अदत्तादान व्रत विषइओ

अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार "अपरिग्गहिया इत्तर, अणंगवीवाह तिव्वअणुरागे०" अपरिग्रहीतागमन, इत्वर परिग्रहीतागमन कीधुं, विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन वोल्यां, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कीधां कराव्यां, अनुमोद्यां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या, कामभोगतणेविषे तीव्र अभिलाष कीधो, अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथे स्वदार संतोष मैथुन व्रत विषे अनेरो जे कोइ अतिचारपक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां

अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार "धण- धन्न-खित्त वत्थू०" धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्य सुवर्ण कुप्य द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छा लगें संक्षेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसार्यो, नियम वीसार्यो ॥ पांचमे परिग्रह परिमाण व्रतविषइओ० ॥

छठे दिग्परिमाणव्रतें पांच अतिचार "गमणस्स य परिमाणे०" ऊर्द्ध्वदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी, वीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली, छठे दिग्परिमाणव्रते विषे अनेरा जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि

सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत, जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने कर्महूंती पन्नरे, अतिचार एवं वीश अतिचार "सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे०" सच्चित्त तणे नियम लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं, तथा सच्चित्त मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं, होला उंवी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥

"सच्चित्त–दव्व–विगई,
पाणह–तंवोल–वत्थ–कुसुमेसु ॥
वाहण–सयण–विलेवण,
वंभ–दिसि–ण्हाण–भत्तेसु" ॥ १ ॥

ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेइ नियम भांग्या. वावीस अभक्ष, वत्तीस

अनंतकायमांहि आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रण दिवसनुं दही लीधूं, मधू महुडां माखण माटी वेंगण पीलू पीचू पपोटा पींपी विष हीम करहा घोलवडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आम-णवोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिं-वडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगतीवेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या ॥

तथा-पन्नरे कर्मादान-इंगालि-कम्मे, वण-कम्मे, साडीकम्मे, भाडी-कम्मे, फोडिकम्मे ए पांच कर्म दंतवाणिज्ये लक्खवाणिज्ये रस-वाणिज्ये, केशवाणिज्ये, विषवाणिज्ये, ए पांच वाणिज्य जंत पीलणकम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सर दहतलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच सामान्य, पांच कर्म, पांच वाणिज्य, महारंभ, लीहाला कराव्या.

इंटवाह नीवाडा पचाव्या, धाणी, चणा, पक्वान्न करी वेच्या, वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कटोर कर्मादिक समाचर्युं, सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार "कंदप्पे कुक्कुइए०" कंदर्प लगें विटनी परे हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगें कुणहीने असंवद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारी कुसि कुहाडा रथ उखल मूसल अग्नि घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेव-राव्यां, अनेरो कांई पापोपदेश दीधो, अंघोल

नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन वोल्या, करकडा मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कूकडा, मिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाई चिंतवी माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चाप्या, तेह उपर बयठा, आली वनस्पति खुंदी, छास पाणी घी रस तेल गुल आम्लवेतस वेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडी कंथुआ माखी उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीवक्रीडा हेतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्यु-हाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडविरमण व्रत विषइओ जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार "तिविहे दुप्पणिहाणे०" सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुखे बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, वीज दीवा तणी उज्जाही लागी, कण कपासीया माटी मीठुं नील फूल हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तियों संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं, पारउं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रत विषइयो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अति-चार "आणवणे पेसवणे०" आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया

पुग्गल क्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहि बाहिर थकी कांई अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुं छतुं जणाव्युं, दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इग्यारमे पौषधोपवास व्रतें पांच अतिचार "संथारूच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए०" पोसह लीधे संथारा तणी भूमि वाहि-रला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेह्युं वावर्युं, अणपुंजी भूमि-काइं परठव्युं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, "अणुजाणह जस्सुग्गहो" न कह्यो. परठव्यां पूठें वार त्रण "वोसिरामि वोसिरामि" न कह्युं, पोसहशालामांहि पेसतां नीसरतां "निस्स ही आवस्स ही" कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्-

काय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रस-काय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणओ वीसारिओ. पोरसि-मांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल-वेलायें पडिक्कमणुं न कीधो, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसार्या, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही, इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अति-चार "सच्चित्ते निक्खवणे०" सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महात्मा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं,

आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवावेला टलि गया असुर करी महात्मा तेड्या, मच्छर लगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं. अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही, बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

संलेहणा तणा पांच अतिचार. "इहलोए परलोए०" इहलोकासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगे जीविआसंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे कामभोगासंसप्पओगे, इहलोक—मनुष्यभव मान महत्त्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पद वांछ्यां, परलोक—इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीववातणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवा

तणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी, संलेहणाव्रत विषइओ जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तपाचार बारभेदें—छ अभ्यंतर, छ बाहिर, "अणसणमूणोयरिया०" अणसण कहीयें उपवास ते पर्वतिथि छती शक्तें कीधुं नहीं, ऊणोदरी ते—पांच सात कवल ऊणा रह्या नहीं, वृत्ति संक्षेप ते—द्रव्य प्रमुख सर्व वस्तु संक्षेप कीधुं नहीं, रसत्याग ते विगय त्याग न कीधुं, कायक्लेश—लोचादिक कायक्लेश न कीधो, संलीणता—अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साड्ढपोरसी पुरिमड्ढ एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवां वीसार्यां, बेसतां नवकार भण्यो नहीं, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल

उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइओ जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अभ्यंतर तप "पायच्छित्तं विणओ०" गुरु कनें मनसुद्धें आलोयणा लीधी नहीं, गुरुदत्त प्रायच्छित्त तप लेखा शुद्ध पहुंचाड्युं नहीं, देवगुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नहीं, वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, लक्षण पंचविध सिज्झाय कीधी नहीं, धर्म्मध्यान, शुक्लध्यान, ध्यायुं नहीं, कर्मक्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो, अभ्यंतर तप विषइओ जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वीर्याचारना तीन अतिचार "अणिगूहि यवलविरीऊ, परिक्कमइ जो जहुंतठाणेसु, जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरियायारो," पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं वल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, वेठां पडिक्कमणुं कीधुं, वीर्याचारव्रत विषइओ जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुवो होय, ते सहू मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

"नाणाइअट पइवय,
समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥
वारसतव विरिअ तिगं,
चउवीसं सय अइयारा"

"पडिसिद्धाणं करणे०" जिनप्रतिपिद्ध वावीस अभक्ष्य, वत्तीस अनंतकाय, वहुवीज भक्षण

महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थयात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि विचार सद्दह्यां नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, परपरिवाद, पैशुन्य, अरतिरति, माया-मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधां कराव्यां अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अति-चारमांहि जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय, ते सहू मन वचन कायाएं करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥

(अब नीचे बैठकर बोलना ।)

सव्वस्स वि पक्खिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ

दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छ
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए?। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि
अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो
अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो
जत्ता भे, जवणिज्जं च भे? खामेमि, खमासमणो
पक्खिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि
खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्ती
सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए,
वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,
मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवया-
राए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे
अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि,
निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए?। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि,
अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो।

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो? पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर[1] पक्खिअं खामेउं? इच्छं,

---

१ चउमासी-प्रतिक्रमण में "चउमासिअं खामेउं? इच्छं खामेमि चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस तरह बोलना, और संवत्सरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरीअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठि राईदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये।

खामेमि पक्खिअं, पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राइण, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(यहां पर हरएक मनुष्यसे खमतखामणा करके दो वांदना देना ।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, आवास्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,

मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

भगवन् ! देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता पक्खिअं पडिक्कमावेह 'इच्छं'॥

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावग-पाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं, वारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-

ीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, नेग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसगेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां सब लोग काउस्सग्ग में 'पक्खिसूत्र' या 'वंदित्तुसूत्र' सुने और एक जन खमासमणपूर्वक आदेश मांग कर सूत्र प्रकट कहे।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खिसूत्र कढ्ढुँ? 'इच्छं' ॥

१ चउमासी प्रतिक्रमणमें 'चउमासीसूत्र कढ्ढुं' और संवत्सरी प्रतिक्रमणमें 'संवत्सरीसूत्र कढ्ढुं' ऐसा बोलना चाहिये।

(ऐसा खमासमणपूर्वक आदेश मांग कर, खडे होकर प्रकट तीन नवकार कह कर, साधु-मुनिराज हो तो 'पक्खिसूत्र' कहे और यदि साधु मुनिराज न हो तो श्रावक 'वंदित्तुसूत्र' कहे।)

वंदित्तुसूत्र ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए, अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग-धम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ

जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मी, थूलग-पाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइ-भारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडि-क्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १० ॥ वीए अणुव्वयम्मी परि-थूलगअलिअवयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूड-लेहे अ। वीअ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयम्मी, थूलग-परदव्व-हरण-विरईओ। आयरिअमप्प-सत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ। कूड-तुल-कूड-माणे पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्व-यम्मी, निच्चं परदारगमण-विरईओ। आयरि-अमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अप-

रिग्गहिआ इत्तर, अणंग - वीवाह - तिव्व - अणुरागे ।
चउत्थ - वयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१६॥
इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि ।
परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥
धण - धन्न खित्त - वत्थू, रुप्प - सुवन्ने अ कुविअपरि-
माणे । दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं
॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे
अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि
गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि
अ, पुप्फे अ फले अ गंध - मल्ले अ । उवभोग-
परीभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते
पडिबद्धे, अपोलि - दुप्पोलिअं च आहारे । तुच्छो-
सहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥
इंगाली - वण - साडी, - भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं ।
वाणिज्जं चेव दंत - लक्ख - रस - केस - विस -
विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लणकम्मं निल्लं-
छणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असई-
पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजं-

तग-तणकट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस-गंधे । वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि-अहिगरण-भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइय-वितह-कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअम्मी, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसह-विहि-विवरीए, तइए, सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ।

रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, ण कओ तवचरणकरण-जुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइयस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सण्णाकसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलो-अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥

कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि वहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तर-गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओ मि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइ-आइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समह-णीए। चउवीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु

समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

(अब "नमो अरिहंताणं" प्रकट कह कर सब काउस्सग्ग पारे और खड़ा होकर बोलनेवाला तीन नवकार गिन कर बैठ जाय। पीछे दहिना घुटना खड़ा करके तीन नवकार, तीन "करेमि भंते" और "इच्छामि पडिक्कमिउं०" कह कर "वंदित्तु सूत्र" कहे ।)

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणा-सणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवि-

हेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि; तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं । जो मे पक्खिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं, गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्व-सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व-साहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मी, साव-

जं बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संकाऽऽकंख-विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मी, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयम्मी, परिथूलगअलिअवयणविरईओ ।

आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ।
बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयम्मी, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४ ॥
चउत्थे अणुव्वयम्मी, निच्चं परदारगमणविर-ईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्व-अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरि-अमप्पसत्थम्मि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमा-यप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परि-माणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे

॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध-मल्ले अ। उवभोगपरीभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि-दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवण-साडी,-भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव दंत-लक्खरसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरद-हतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुवट्टण-वन्नग,-विलेवणे सद्दरूव-रसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहि-गरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइ-अम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणि-हाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ-वितह-कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥

आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे।
देसावगासिअम्मी, वीए सिक्खावए निंदे ॥ २८॥
संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए।
पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे
॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस
मच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खा-
वए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ जा
मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व,
तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संवि-
भागो, न कओ तव-चरणकरणजुत्तेसु। संते फासु-
अदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए
परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे।
पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥
काएण काइअस्सा, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए।
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स
॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सण्णाकसाय-
दंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ
तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु

पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेइ, वाहि व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअ-भरुव्व-भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओ मि विराहणाए । तिविहेण पडि-

क्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भव-सय-सहस्स महणीए। चउवीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम-दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसि-द्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्द-हणे अ तहा, विवरीअपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण

संदिसह भगवन्! । मूलगुण - उत्तरगुण - अतिचारविशुद्धिनिमित्तं काउस्सग्ग करूं ? 'इच्छं' ॥

(अब खडे होकर बोले ।)—

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि; तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ; उस्सुत्तो, उम्मग्गो; अकप्पो, अकरणिज्जो; दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो; नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो; जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(१२ बारहं लोगस्स का अथवा ४८ अडतालीस नवकार काउस्सग्ग करना पश्चात् पारकर प्रगट लोगस्स कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥

---

१ चउमासी प्रतिक्रमणमें (२०) वीस लोगस्स या अस्सी नवकार का काउस्सग करना और संवत्सरी प्रतिक्रमणमें (४०) चालीस लोगस्स और एक नवकार, अथवा एक सौ इकसठ नवकारका काउस्सग करना।

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर-वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अब बैठकर मुहपत्ति पडिलेहना और बादमें दो वंदन देना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो।

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे, जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खियाए आसायणाए, तित्ती-

सव्वयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! समात्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि, अब्भितरपक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ

१ चउमासी प्रतिक्र० में "चउमासिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि चउमासिअं, चउण्हं मासाणं अट्ठण्हं पक्खाणं बीसोत्तरसयं राइंदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये और संवत्सरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं, तिन्निसयसट्ठि राइंदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये।

विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पक्खिअ खामणा खामुं? 'इच्छं' ॥

(ऐसा कहकर नीचे मुजब चार खामणा देना ।)

१—इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जा-ए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि ॥

(पहेला गुरु खामणा खामूं ऐसा कहकर दहिना हाथ चरवला या आसन पर रख कर मस्तक झुका कर तीन नवकार बोले ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-रियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

२—इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि ॥

(दूजा गुरु खामणा खामूं ऐसा कह कर तीन नवकार बोले ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-रियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

३—इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

(तीजा गुरु खामणा खामूं कह सिर झुका तीन नवकार गिने ।)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-रियाणं, नमो उज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

४—इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

चौथा गुरु खामणा खामूं कह सिर झुका तीन नवकार गिने ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-रियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-

साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

'इच्छं' इच्छामो अणुसट्ठि—पुण्यवंतो पांखी के निमित्त एक उपवास, अथवा दो आयंबिल, अथवा तीन निवि, अथवा चार एकासना, अथवा दो हजार सज्झाय करी एक उपवास की पेठ पूरजो, और पक्खिअके स्थानमें देवसिय भणजो॥[1]

(यहां यथाशक्ति तप किया हो तो 'पइट्ठियं' कहना और जिन्होंने तप न किया हो वे 'तहत्ति' कहे। अब देवसिक प्रतिक्रमणमें 'वंदित्तुसूत्र' कहने बाद जो विधि है इस मुजब कहना चाहिये।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि;

---

१ चउमासिय में इससे दूना अर्थात्–दो उपवास, चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना और चार हजार सज्झाय करी दो उपवास की पेठ पूरजो। संवच्छरीय मे तिगुना–तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ निवि बारह एकासना और छह हजार सज्झाय करी तीन उपवास की पेठ पूरजो। इस प्रकार कहना॥

अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे! जवणिज्जं च भे! खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए?। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे! जवणिज्जं च भे! खामेमि, खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि, खमा-

समणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नय-राए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि, अब्भितर देवसिअं खामेउं? 'इच्छं' खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि;

अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे ! किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ! जवणिज्जं च भे ! खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं, कायसंफासं, खमणिज्जो भे ! किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ! खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं, पडिक्कमामि खमासमणाणं

देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अब खडे होकर हाथ जोड कर कहना चाहिये।)

आयरिअ-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो। सव्वं खमाव-इत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्च-क्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिवि-

हेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ? पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं,

भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स का अथवा आठ नवकार का काउस्सग्ग करना पश्चात् पार कर प्रगट 'लोगस्स' कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जर-मरणा। चउवीसं पि

जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआणं, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्ति-आए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचा-लेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अवि-राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरि-

हंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना; पीछे—)

पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहि-यस्स सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई-जरामरणसोगपणासणस्स कल्लाण-पुक्खलविसालसुहावहस्स। को देवदाणवनरिंद-गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ ! णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवं नागसुवन्नकिन्नरगण-स्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जग-मिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विज-यओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ ! करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्ति-आए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहि-

लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना; पीछे—)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स।

संसारसागराओ तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स ।
तं धम्मचक्कवट्टीं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥
चत्तारि अट्ठ दस दो य वंदिया जिणवरा
चउवीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु ॥

सुअदेवआए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ
ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए,
पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं
खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमा-
इएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज
मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं,
नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं,
झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-
पाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर सुअदेवयाः की थुई कहना ।)

कमलदलविपुलनयना कमलमुखी-कमल-गर्भ-समगौरी। कमले स्थिता भगवती ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥

भुवनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइ-एहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर भुवनदेवताकी थुई कहना।)

ज्ञानादि-गुण-युतानां स्वाध्यायध्यान-संयम-रतानाम्। विदधातु भुवन-देवी शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एव-माइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः" कह कर क्षेत्रदेवताकी थुई कहना।)

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्र-देवता नित्यं भूयान्नः सुख-दायिनी ॥ ३ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आय-रियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

(अब बैठकर छट्ठा आवश्यककी मुँहपत्ति पडिलेहुं ? ऐसा कहकर मुँहपत्ति पडिलेहना, बादमें दो वंदना देना।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं, कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं; आवस्सिआए। पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो-वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्क-मामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि; अहोकायं, कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे? दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे! खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं! देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ; तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि; अप्पाणं वोसिरामि॥

"इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

(ऐसा कह कर बायाँ घुटना खड़ा कर पुरुषवर्ग 'नमोऽस्तुवर्द्धमानाय' कहे और स्त्रीवर्ग 'संसारदावानल' की तीन थुई कहे।)

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा। तज्जयावाप्त-मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्॥ १॥ येषां विकचारविन्द-राज्या,-ज्यायःक्रमकमलावलिं दधत्या। सदृशैरिति सङ्गतं प्रशस्यं,

कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥
कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैन-
मुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो,
दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥ ३ ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे
समीरम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं
गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भावाऽवनामसुरदानव-
मानवेन, चूलाविलोलकमलावलि-मालितानि ।
सम्पूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि
जिनराजपदानि तानि ॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवी-
नीरपूराभिरामं जीवाऽहिंसा-विरललहरी-संगमा-
गाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं; आइगराणं,
तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं; पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
सीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंध-
हत्थीणं; लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,

लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं; अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं; धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं; अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं वोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति-सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वृद्ध-स्तवन भणुं? 'इच्छं'॥

(ऐसे कहकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहकर निम्न लिखित 'अजितशांति-स्तवन' कहे।)

अजितशांति-स्तवनम् ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्व-गयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा)। ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्प-भावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा)। सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो)। अजिअजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरि-सुत्तम ! नामकित्तणं । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ (माग-हिआ)। किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमु-क्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिँ महामुणि-सिद्धिगयं। अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमं-सणयं ॥५॥ (आलिंगणयं)। पुरिसा ! जइ दुक्ख-वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा

॥ ६ ॥ (मागहिआ)। अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपयपणिवइअं। अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ (संगययं)। तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ (सोवाणयं)। सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथिअं, थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं। हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं, सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥९॥ (वेड्ढओ)। अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥ १० ॥ (रासालु-

ब्भओ) । कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभाओ, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो । चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी, छण्णवइगामकोडिसामी आसी जो भारहंमि भयवं ! ॥ ११ ॥
(वेड्ढओ) । तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे भयवं ! ॥१२॥
(रासानंदिअयं) इक्खाग ! विदेहनरीसर ! नरवसहा ! मुणिवसहा !, नवसारयससिसकलाणण ! विगयतमा ! विहुअरया !। अजि उत्तम ! तेअगुणेहिं महामुणि ! अमिअबला ! विउलकुला !, पणमामि ते भवभयमूरण ! जगसरणा ! मम सरणं ॥ १३ ॥
(चित्तलेहा) । देवदाणविंदचंदसूरवंद ! हट्ठतुट्ठजिट्ठपरम,-लट्ठरूव ! धंतरूप्प - पट्ट - सेअ - सुद्ध - निद्धधवल । दंतपंति ! संति ! सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर ! दित्ततेअवंद ! धेअ ! सव्वलोअभाविअप्प-

भाव! णेअ! पइस मे समाहिं ॥१४॥ (नारायओ)। विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं। तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥१५॥ (कुसुमलया)। सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं। तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ (भुअगपरिरिंगिअं)। सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी। रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं)। तित्थवरपवत्तयं तमरयरहियं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं। संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं)। विणओणयसिरिरइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइनरवइ-थुअमहिअच्चिअं बहुसो। अइरुग्गयसरयदिवायर-समहिअसप्पभं तवसा, गयणंगणवियरणसमुइअ-चारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किस-

लय - माला)। असुरगरुलपरिवंदिअं, किंनरोरग-नमंसिअं। देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरि-वंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं)। अभयं अणहं, अरयं अरुअं। अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं)। आगया वरविमाणदिव्व-कणग-रहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं। ससंभमो-अरणखुभिअलुलिअचल-कुंडलंगयतिरीडसोहंत-मउलिमाला ॥२२॥ (वेड्ढओ)। जं सुरसंघा सासुर-संघा, वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअ-संभमपिंडिअ-सुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा। उत्तम-कंचणरयणपरूविअ-भासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणय-भत्तिवसागय-पंजलिपेसियसीस-पणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला)। वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं, सुरासुरा, पमुइआ सभव-णाइँ तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं)। तं महामुणि-महं पि पंजली, रागदोसभयमोह-वज्जिअं। देव-दाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तममहातवं नमे

॥२५॥ (खित्तयं)। अंवरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं। पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं)। पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं। वरखिंखिणि-नेउर-सतिलय-वलयविभूसणिआहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ (चित्तक्खरा)। देवसुंदरीहिँ पायवंदिआहिँ, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिँ मंडणोड्डणप्पगारएहिँ केहिँ केहिँ वी। अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिँ चिल्लएहिँ संगयंगयाहिँ, भत्तिसंनिविट्ठवंदणागयाहिँ हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायओ)। तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं। धुअसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं)। थुअवंदिअयस्सा रिसिगणदेवगणेहिँ, तो देववहुहिँ पयओ पणमिअस्सा। जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं, देववरच्छ-

रसावहुआहिं सुरवरइगुणपंडिअआहिं ॥ २० ॥ (भासुरयं)। वंससद्दतंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं। वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिँ हावभावविब्भमप्पगारएहिँ। नच्चिऊण अंगहारएहिँ वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा। तयं तिलोअ-सव्वसत्त-संतिकारयं, पसंतसव्वपावदोसमेस हं, नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ २१ ॥ (नारायओ)। छत्तचामरपडागजूअजवमंडिया, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया ॥ २२ ॥ (ललिअयं)। सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ २३ ॥ (वाणवासिआ)। ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया। संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥ २४ ॥ अप-

रांतिका ॥ एवं तव बलविउलं, थुअं मए अजिअ-संति-जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ (गाहा)। तं बहु-गुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अ विसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं ॥ ३६ ॥ (गाहा)। तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं। परिसा वि य सुह-नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ (गाहा)। पक्खिअ-चाउम्मासिअ,-संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग-निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसु-णइ, उभओ कालं पि अजिअसंतिथयं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे। ता तेलुक्कुद्धरणे जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ (गाहा)॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए,

निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । श्री आचार्यजी मिथ्र ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । उपाध्यायजी मिथ्र ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुजी मिथ्र ॥

(अब खडे होकर बोलना चाहिये ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? 'इच्छं' । देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-

संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहं-ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां पर चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग कर प्रगट लोगस्स कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि-सुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।

आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! खुद्दोपद्दव-उड्डावणनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहांपर चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? "इच्छं" ॥

श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः । संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो देवो जीरावल्ली शिरोमणिः । पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नतनाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं । अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,

बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं। सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरूअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइय वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं॥ १॥

जावंति के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं॥ १॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठ जरा जंति

उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि वहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचंद ॥ ५ ॥

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ मम तुह पभावओ भयवं ! । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसे-वणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

सिरि-थंभणय-ठिय-पाससामिणो सेस तित्थ-सामीणं । तित्थसमुन्नइकारणं, सुरासुराणं च

सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसिमहं सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए । भत्तीए गुणसुट्ठियस्स, संघस्स समुन्नइ-निमित्तं ॥ २ ॥ श्रीथंभणपार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

(अब खड़े होकर बोलना चाहिए ।)

वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्ति-आए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सिद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस-ग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरि-

हंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहांपर चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरम-रणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसी-यंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोग-स्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समा-हिवर-मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा,

आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि। श्रीचौरासिगच्छ शृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्रचूडा-मणि दादा श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवं-ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहांपर सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । श्रीचौरासीगच्छ श्रृङ्गारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक चारित्र-

चूडामणि दादा श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहांपर सोलह नवकार का काउस्सग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं

च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठकर बांयागोडा ऊंचा करके चैत्यवंदन करें।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं? 'इच्छं' ॥

चउक्कसायपडिमल्लुल्लुरणू, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणू। सरसपिअंगुवन्नुगयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ।

नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः। श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

नमुत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,

बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरूअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ य वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं॥ १॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं॥ १॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं॥ १॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा

जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस,-भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर 'जय वीअराय' कहना।)

जय वीअराय! जगगुरु!, होउ मम तुह पभावओ भयवं!। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

बड़ी शांति।

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥

तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-
दारोग्य-श्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥

भो भो भव्यलोकाः! इह हि भरतैरावत-विदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति। ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः। इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शांतिमुद्घोषयामि। तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोक्यपूज्या-स्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्द्योतकराः ॥

ॐ श्रीकेवलज्ञानि - निर्वाणी - सागर - महायश - विमल - सर्वानुभूति - श्रीधर - दत्त - दामोदरसुते - जस्वामि - मुनिसुव्रत - सुमति - शिवगतिअस्तागन - मीश्वर - अनिल - यशोधर - कृतार्थ - जिनेश्वर - शुद्ध - मति - शिवकर - स्यन्दन सम्प्रति इति एते अतीत - चतुर्विंशतितीर्थङ्कराः ॥

ॐ श्रीऋषभ - अजित - संभव - अभिनंदनसु - मति - पद्मप्रभ - सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ - सुविधि-शीतल - श्रेयांस - वासुपूज्य - विमल - अनन्त - धर्मशान्ति - कुन्थु - अर - मल्लि - मुनिसुव्रत - नमि - नेमि - पार्श्व - वर्द्धमान इति एते वर्त्तमानजिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ - शूरदेव - सुपार्श्व - स्वयंप्रभस - र्वानुभूति - देवश्रुत - उदय - पेढाल - पोट्टिल - शत - कीर्ति-सुव्रत-अमम-निष्कषाय -निष्पुलाक- निर्मम - चित्रगुप्त - समाधि - संवर - यशोधर - विजय - मल्लि - देव - अनन्तवीर्य - भद्रंकर इति एते भावितीर्थङ्कराः जिनाः । शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु ॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥

ॐ श्रीनाभि-जितशत्रु-जितारि-संवर-मेघधर-प्रतिष्ठ-महासेन-सुग्रीव-दृढरथ-विष्णु-वसुपूज्य-कृतवर्म-सिंहसेन-भानु-विश्वसेन-सूर-सुदर्शन-कुम्भ-सुमित्र-विजय-समुद्रविजय-अश्वसेन-सिद्धार्थ इति एते वर्त्तमानचतुर्विंशति-जिनजनकाः ॥

ॐ श्रीमरुदेवा-विजया-सेना-सिद्धार्था-सुमङ्गला-सुसीमा-पृथिवीमाता-लक्ष्मणा-रामानन्दा-विष्णु-जया-श्यामा-सुयशा-सुव्रता-अचिरा-श्री-देवी-प्रभावती-पद्मा-वप्रा-शिवा-वामा-त्रिशला इति एते वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥

ॐ श्रीगोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षनायक-तुम्बरु-कुसुम-मातंग-विजय-अजित-ब्रह्मा-यक्षराज-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-गरुड-गन्धर्व-यक्षराज-कुवेर-वरुण-भृकुटि-गोमेध-पार्श्व-ब्रह्मशान्ति इति एते वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

ॐ श्रीचक्रेश्वरी - अजितबला - दुरितारिकाली - महाकाली - श्यामा - शान्ता - भृकुटि - सुतारका - अशोका - मानवी - चण्डा - विदिता - अंकुशा - कन्दर्पा - निर्वाणी - बला - धारिणी - धरणप्रिया - नरदत्ता - गान्धारी - अम्बिका - पद्मावती - सिद्धायिका इति एता वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थङ्करशासनदेव्यः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं धृति - मति - कीर्ति - कांति - बुद्धि - लक्ष्मी - मेधा - विद्या - साधन - प्रवेश - निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेन्द्राः। ॐ रोहिणी - प्रज्ञप्ति - वज्रशृंखला - वज्रांकुशी - चक्रेश्वरी - पुरुषदत्ता - काली - महाकाली - गौरी - गांधारी - सर्वास्त्रा - महाज्वाला - मानवी - वैरोट्या - अछुप्ता - मानसी - महामानसी - एता षोडश - विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु, पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोक-

पालाः सोम-यम-वरुण-कुवेर-वासवादित्य-स्कन्ध-विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्रामनगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीण-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा। ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृद्-स्वजन-संवंधि-वंधु-वर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु। अस्मिंश्च भूमण्डले आयतननिवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधि-दुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवाः भवंतु। सदा प्रादुर्भूतानि (दुरितानि) पापानि शाम्यन्तु शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा। श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्ति-विधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये॥ १॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः। शांतिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे॥ २॥ ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्न-

दुर्निमित्तादि । सम्पादितहितसम्पन्नामग्रहणे जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद,-राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिकपुरमुख्यानां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रा-स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुःपुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालंकृतः चंदनातिलकं विधाय, पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा, शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्,

कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थ-यरमाया, सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥

(दीपक या वीजलीका प्रकाश शरीर पर गिरा हो या कोई दोप लगा हो तो 'इरियावहि' तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कह कर पीछे सामायिक पारे ।)

सामायिक पारने की विधि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारवा मुँहपत्ति पडिलेहूं ? 'इच्छं' ॥

(यहांपर मुँहपत्ति की पडिलेहन करे, पीछे)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूं? यथाशक्ति।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारेमि? तहत्ति।

(आधा अंग नमा कर तीन नवकार पढ़े। पीछे घुटने टेक कर शिर नमाकर नीचे मुजब 'भयवं दसण्णभद्दो' कहे।)

भयवं! दसण्णभद्दो, सुदंसणो थूलभद्द वइरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवं विहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेण, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण-माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय-मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥

सामाइय-पोसहसंठियस्स, जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफल-हेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधे लीधुं, विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लागी होय, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, बत्तीस दूषणमांहि जो कोई दूषण लागो होय, सो सहु मन, वचन, कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इति-पक्खी-प्रतिक्रमण-विधिः समाप्तः ॥

दासानुदासा इव सर्व्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति ।
मरुस्थली कल्पतरुः स जीयाद्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥

दादा-गुरु-स्तवन ॥

कुशल गुरुदेवके दर्शन, मेरा दिल होत है परसन ।
जगतमें आप समो न कोई, न देखा नयनभर जोइ ॥ १ ॥
विरुद भूमंडले छाजै, फरसतां पाप सहु भाजे ।
पूजतां संपदा पावे, अचिंती लक्ष्मी घर आवे ॥ २ ॥
एके मुखे गुण कहुं केता, मुझे हिये ज्ञान नहीं हेता ।
लालचंद की अरज सुन लीजे, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

प्रतिक्रमण करते समय यदि दीपक विजली आदि अग्निका प्रकाश अपने शरीर पर आगया हो, या वरसाद आदिके पानी की बुंद लग गई हो, अथवा सचित्त वस्तु का संघट्टा हो गया हो तो इरियावही करके सामायिक पारे—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा, विराहिआ, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ, ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-

हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहांपर एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं

च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइ-च्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ छींक-दोषनिवारण-विधिः ॥

पाक्षिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते समय यदि छींक हो जाय तो याने "पक्खिय मुँहपत्ति पडिलेहुं" यहांसे "पक्खि समाप्त खामणा" पर्यंत के बीचमें छींक हो जाय तो लिखे मुजब दोषनिवारणार्थ तीन काउस्सग्ग करना; प्रथमवारः—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए? मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् 'अपशकुन-दुर्निमित्त-उहडावण-निमित्तं, करेमि काउस्सग्गं ॥'

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं; अप्पाणं वोसिरामि ॥

यहां पर एक नवकार का काउस्सग्ग कर पीछे काउस्सग्ग पार कर प्रगट एक नवकार कह कर बादमें नीचेका श्लोक करना और डावे पगसे भूमि दवाना—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगति-दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसंपत् नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ १ ॥

दुसरी दफे अपशकुन० 'अन्नत्थ०' कहकर दो नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे प्रगट दो नवकार कहना और उन्मृष्ट० बोलना ॥ २ ॥

तीसरी दफे अपशकुन० 'अन्नत्थ०' कहकर तीन नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट तीन नवकार कहकर बादमें उन्मृष्ट०

कहना ॥३॥ संपूर्ण प्रतिक्रमण करने के वाद दोष निवारण काउ-स्सग्ग करके सामायिक पारे ॥ इति छींकदोषनिवारणविधिः ॥

अथ मार्जारीदोष - निवारणविधिः ॥

दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते समय यदि मंडल के बीचमें से बिलाडी उल्लंघन करे तो नीचे लिखे मुजब दोषनिवारणार्थ तीन काउस्सग्ग करनाः प्रथम वार—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ? मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! " अपशकुन दुर्निमित्त उह-डावण निमित्तं, करेमि काउस्सग्गं,, "

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासि-एणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनि-सग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो

१ यदि पाक्षिकप्रतिक्रमणे क्षुत्करणे पंचदश दिनानि यावत् निर्विकृतितपः कार्यं । एवं चातुर्मासिकप्रतिक्रमणे क्षुत्करणे चतुरो मासान्, सांवत्सरिकप्रतिक्रमणे क्षुत्करणे वर्षं यावत् निर्विकृतितपः कार्यं इति सामाचारीशतकम् ॥

अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

यहां पर एक नवकार का काउस्सग्ग कर पीछे काउस्सग्ग पारकर प्रगट एक नवकार कहकर वादमें नीचे की गाथा कहना और डावे पगसे भूमि दवाना—

जा सा कालीकव्वरी, अखिहिं कक्कडियारि।
मंडलमांहिं संचरीव, हय पडिहय मज्जारि॥

पगसे भूमि दवाते समय "हय पडिहय मज्जारि" ये पद तीन दफे वोलना॥ १॥

दुसरी दफे अपशकुन० 'अन्नत्थ०' कह कर दो नवकार का काउस्सग्ग करे, पीछे प्रगट दो नवकार कहना, और जा सा० गाथा वोलना॥ २॥

तीसरी दफे अपशकुन० 'अन्नत्थ०' कह कर तीन नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे प्रगट तीन नवकार कह कर वादमें जा सा० गाथा कहना॥ ३॥ संपूर्ण प्रतिक्रमण करनेके वाद दोपनिवारण काउस्सग्ग करके सामायिक पारे॥ (विधिप्रपा.)

इति मार्जारीदोपनिवारणविधिः॥

अथ पौषध-विधिः ।

आठ पहरी पौषधविधि ॥



पोसहके उपकरण लेकर उपाश्रयमें जावें, वहां पर गुरुमहाराजका सांनिध्य न हो तो सामायिककी विधिके अनुसार स्थापनाचार्यकी स्थापना करके विधिपूर्वक गुरुवंदन करें। पीछे खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं' पढ़कर, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह मुँहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं' ऐसा कहकर मुँहपत्तिकी पडिलेहना करे। पश्चात् खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह संदिसाहुं? 'इच्छं,' फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पोसह ठाउं? 'इच्छं,' कहकर खमासमण देकर खड़े हो जाय और हाथ जोड़कर, आधा अंग नमाकर, तीन नवकार गिने। पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर नीचे लिखा हुआ पोसहका पच्चक्खाण तीन वार बड़े आदमीसे उच्चारे या स्वयं उच्चार कर ले।

पोसहका पच्चक्खाण ॥

करेमि भंते! पोसहं, आहार पोसहं, देसओ सव्वओ वा,

सरीरसक्कार-पोसहं। सव्वओ बंभचेर-पोसहं। सव्वओ अव्वाचारपोसहं। सव्वओ चउव्विहे पोसहे। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि; ॥

पीछे इच्छं 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक मुँहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं,' कहकर खमासमण देकर मुँहपत्ति पडिलेहन करे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक संदिसाहुं? इच्छं'। इच्छामि० इच्छा० सामायिक ठाउं? 'इच्छं' कहकर, खमासमण देकर, खड़े हो, तीन नवकार गिने। पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक दंडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर 'करेमि भंते सामाइयं' का पाठ तीन वार उच्चरे, इसमें 'जाव नियमं' की जगह 'जाव पोसहं,' बोले। (यहां इरियावहियं न बोले) पीछे 'इच्छामि० इच्छा० वेसणो संदिसाहुं? 'इच्छं,' 'इच्छामि० इच्छा० वेसणो ठाउं! इच्छं'। इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं? 'इच्छं,' कहकर खमासमण देकर खड़े-ही-खड़े आठ नवकार गिने। पश्चात् शीत आदि परिषह निवारण के लिए वस्त्रकी

---

१ सिर्फ दिनका पौषध लेना हो तो 'जाव दिवसं,' दिन-रात का करना हो तो 'जाव अहोरत्तिं' और सिर्फ रातका करना हो तो 'जावसेस दिवसं रत्तिं' कहना चाहिये।

आवश्यकता हो तो 'इच्छामि० इच्छा० पंगुरण संदिसाहुं ? 'इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० पंगुरण पडिग्गहुं ? इच्छं' ऐसा कहकर वस्त्रग्रहण करे। पश्चात् 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं संदिसाहुं ? 'इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं करूं ? इच्छं,' इस प्रकार पौषध लेकर राई प्रतिक्रमण पहले नहीं किया हो तो करें, किंतु इसमें चार थुई के देववन्दन के बाद नमोऽत्थुणं कहकर खमासमण पूर्वक 'बहुवेलं,' का आदेश लेकर पीछे आचार्यजी मिश्र इत्यादि कहे। प्रतिक्रमण पूरा होनेके बाद, पडिलेहन, नीचे लिखी विधिके अनुसार करे॥

पडिलेहन-विधि।

खमासमण देकर 'इरियावहियं०' तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके, प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं,' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहुं ? 'इच्छं,' इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं ? इच्छं,' कहकर धोती और कटीसूत्र (कन्दोरा) पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं' ऐसा कहकर स्थापनाचार्य की पडिलेहना 'शुद्धस्वरूप धारे' का पाठ

पूर्वक करके ऊंचे स्थान पर रक्खे। पश्चात् 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेवे। पश्चात् 'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन करूं ? इच्छं,' कहकर कंबल, वस्त्र आदि सब वस्तुएँ पडिलेहे। पश्चात् पौषधशालाकी प्रमार्जना करके कचरे को जयणा पूर्वक परठे। पीछे खमासमण देकर ईरियावहियं० तस्स उत्तरी०, अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं,' कहकर एक नवकार गिने। पीछे 'उपदेशमाला' की सज्झाय कहकर फिर एक नवकार गिने।

उपदेशमाला - सज्झाय।

जग चूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय गिरितिलओ। एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छर-मुसभजिओ, छम्मासे वद्धमाणजिणचंदो। इह विहरिया निरसणा, जए झए ओवमाणेणं ॥ २ ॥ जइ ता तिलोयनाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसजणस्स। इय जीयंतकराइं, एस खमा सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ, महइ महावद्ध-माणजिणचंदो। उवस्सग्गसहस्सेहिं वि, मेरु जहा वाय-गुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणओ, पढम गणहरो समत्त

सुयनाणी। जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय हियओ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइओ तं सिरेण इच्छंति। इअ गुरुजणमुहभणियं, कयंजली उडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह सुरगणाण इंदो, गहगण तारागणाण जह चंदो। जहय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ वालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा। जं वा पुरओ काउं, विहरंति मुणि तहा सो वि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को। गंभीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिओ ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य। अविकत्थणो अचवलो, पसंतहियओ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं। आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जो सहस्स वंदेहिं। तहवि न करेइ माणं, परिअच्छइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिणदिक्खियस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा। नेच्छइ आसणगहणं, सो विणओ सव्व अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिओ साहु। अभिगमण वंदण नमंसणेण विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो। लोए वि पहू पुरिसो, किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संबाहणस्स रण्णो, तइया वाणारसीइ नयरीए। कन्ना सहस्स महियं, आसी किर रूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहवि य सा रायसिरि, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं। उयरट्ठिएण इक्केण ताइया अंग-

वीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु वहुयाण वि, मज्झाओ इह सम घरसारो । रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणे वि पुरिसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण वहुजाणावणाहिं, वरमप्पसक्खियं सुकयं इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिट्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजमपएसु वट्टमाणस्स । किं परियत्तिय वेसं विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओमि अहं । उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण । सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं वंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तो नवि सी-उण्ह वायविज्झडिओ । संवच्छरमण-सीओ, वाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग-प्पिय चिंतिएण, सच्छंद-वुद्धि-चरिएण । कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अवि-णीओ गव्विओ निरवणामो । साहुजणस्स गरहिओ, जणे वि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणं कुमा-रुव्व केइ वुज्झंति । देहे खणपरिहाणि, जं किर देवेहिं से कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तमसुर, विमाणवासी वि परिव-डंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कह तं भण्णइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लि हियए । जं च मरणावसाणे, भव संसाराणुवंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस-

सहस्सेहिं, वोहिज्जंतो न वुज्झई कोई। जह वंभदत्तराया, उदाइ-निवमारओ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलच्छीए। जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पडंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूण वि जीवाणं, सुदुक्करा इति पावचरियाइं। भयवं जा सा सासा, पचाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जि-ऊण दोसे, नियए सम्मं च पाय वडियाए। तो किरमिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति ॥

इस प्रकार सज्झाय कह कर एक नवकार गिने। पश्चात् गुर्वादिक विद्यमान हो तो विधिपूर्वक उनकी वंदना करे। तदनन्तर पञ्चक्खाण करके वहुवेलका आदेश लेवे। पीछे देव-दर्शन करनेके लिये जिनमंदिरमें जावे।

(जिसने पोसह किया हो, वह यदि देवदर्शन न करे तो, दो या पांच उपवासके प्रायश्चित्तका भागी होता है।)

मंदिरमें इरियावहियं पूर्वक विधिसे चैत्यवंदन करके पञ्चक्खाण करे। मंदिर और उपाश्रयसे निकलते समय तीन वार "आवस्सहि" कहे। और प्रवेश करते समय तीन वार "निस्सीही" कहे। अब उपाश्रय आकर 'इरियावहियं' पडिक्कमे। पीछे धर्मध्यान करे, पढे गुने या व्याख्यान सुने। लघुनीति और वडी नीति परठनी हो तो पहले "अणु-जाणह जस्सग्गो" कहे और पीछेसे तीन वार "वोसिरे" कहे। और 'इरियावहियं' पडिक्कमे। जब पौन पौरसी

(प्रहर) दिन बीत जाय तो उग्घाडा पोरसी या बहु पडि· पुन्ना पोरसी भणावे। यथा—'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी ? इच्छं' कह कर 'इच्छामि० इच्छा० इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कह कर, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे। पीछे प्रकट लोगस्स कहकर, 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति संदिसाहुं ? इच्छं,' 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं'। कह कर मुहपत्ति पडिलेहे। अनन्तर उपधानवाही भोजन-पात्र पडिलेही रखे। पीछे सज्झाय ध्यान करे। जब कालवेला हो तब मंदिर या उपा· श्रयमें जाकर नीचे लिखी हुई विधिके अनुसार पांच शक्र· स्तवसे देव-वंदन करे।

देव-वंदन-विधि ॥

'इच्छामि०-इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं'। कह कर चैत्यवंदन और नमुत्थु णं० कहे। कहे पश्चात् खमासमण देकर 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट 'लोगस्स' कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं' कह कर चैत्य· वंदन करे इसके बाद जं किंचि० नमुत्थु णं० कह कर खड़े हो जाय। पश्चात् 'अरिहंतचेइआणं०' 'अन्नत्थ०' कह कर एक नवकारका काउस्सग्ग करना, पीछे 'नमो अरिहंताणं' कहता हुआ काउस्सग्ग पार कर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय·

सर्वसाधुभ्यः' कह कर पहली थुई कहे। इसके बाद 'लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ०' कह कर एक नवकारका काउस्सग्ग करके दूसरी थुई कहे। पीछे 'पुक्खरवरदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ०' कहकर एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहे। पश्चात् 'सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ०' कह कर एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कहकर चौथी थुई कहे। अब नीचे बैठकर 'नमुत्थु णं०' कहे, अनन्तर खड़े होकर फिर अरिहंतचेइआणं० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर नमोऽर्हत्० कहकर पहेली थुई कहे। पश्चात् 'लोगस्स०' 'सव्वलोए०' 'अन्नत्थ०' कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर दूसरी थुई कहे। पीछे 'पुक्खरवरदीवड्ढे०' 'सुअस्स भगवओ०' 'अन्नत्थ' एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहे। पश्चात् 'सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ०' एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कह कर चौथी थुई कहे। अब नीचे बैठकर 'नमुत्थु णं०' 'जावंति चेइआइं०' 'जावंत के वि साहू०' 'नमोऽर्हत्०' 'उवसग्गहर०' या कोई स्तवन कह कर 'जय वीयराय०' कहे पश्चात् 'नमुत्थु णं' कहे ॥ इति ॥

ऊपर मुजब-देव-वंदन करनेके बाद सज्झाय ध्यान करे। जल आदि पीनेकी इच्छा हो तो नीचे लिखी विधिके अनुसार पच्चक्खाण पारकर जल आदिक लेवे।

पच्चक्खाण पारनेकी विधि ॥

खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे। पश्चात् प्रकट 'लोगस्स' कहकर 'इच्छामि० इच्छा पच्चक्खान पारनेको मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं'। कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारूं? 'यथाशक्ति' कहकर, फिर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारेमि? तहत्ति' कहकर मुट्ठि बन्दकर एक नवकार गिने। पीछे जो पच्चक्खाण किया हो उस पच्चक्खाणका नाम लेकर "पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं" बोल कर एक नवकार गिने। पश्चात् खमासमण देकर 'इच्छा० चैत्यवंदन करूं? इच्छं' कहकर 'जयउ सामिय० जं किंचि० जावंति चेइआइं० जावंत के विसाहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जय वीयराय०' तक कहे। पीछे क्षणमात्र सज्झाय ध्यान करके पाणी पीवे। तथा उपधानवाही होवे तो पोरसी प्रमुख पच्चक्खाण पारकर आहार करे। पीछे आसन पर बैठा हुआ ही 'दिवसचरिमं' (तिविहार) पच्चक्खे। अनन्तर इरियावहियं० कहकर चैत्यवंदन करे। (यह चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तका है) ॥ इति ॥

यदि बहिर्भूमि (स्थंडिल) जाना हो तो आवस्सही

कहकर उपयोगपूर्वक निर्जीव भूमिमें या स्थंडिलके पात्रमें जावे। 'अणुजाणह जस्सगो' कहकर मलमूत्र परठे। प्राशुक जलसे शुद्ध होकर तीन वार 'वोसिरामि' कह कर मलमूत्र वोसिरावे। पीछे पोसहशालामें 'निस्सीहि' बोलते हुए आवे और खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं०' पडिक्कमे। इसके बाद 'इच्छामि० इच्छा० गमणागमणं आलोऊं? इच्छं' कहकर गमणागमण इस प्रकार आलोवे—"आवस्सही करी, प्राशुक देशे जई, संडाशा पूंजी, स्थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसरावी, निस्सीहि करी, पोसहशालामें आया। आवंतिहिं जंतेहिं जं खंडियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।" ऐसा कहकर बैठ जाय और शान्तिपूर्वक सज्झाय ध्यान करे। अब चौथे प्रहरमें संध्याकालको पडिलेहन नीचे लिखी विधिसे करे।

संध्याकालीन-पडिलेहन-विधि।

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! "बहु पडीपुन्ना पोरसी?" इच्छं' कहकर, खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कह कर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि०' 'इच्छा०' पडिलेहन करूं? 'इच्छं' 'इच्छामि०' 'इच्छा० पोसहशाला प्रमार्जुं? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन? संदिसाऊं

'इच्छं' 'इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं। इच्छं' कह कर आसन, धोती, कटीसूत्र आदि पडिलेहे और पौषधशाला से कचरा निकाल कर जीवादि देख कर जयणा पूर्वक परठे। पीछे खमासमणपूर्वक 'इरियावहियं' पडिक्कमे। अनन्तर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी पडिलेहन पडिलेहावोजी? इच्छं' कहकर स्थापनाचार्यजी की 'शुद्धस्वरूप धारें' के पाठ पूर्वक (पृ० २) पडिलेहन करके उच्च स्थानपर रक्खें। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं' कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं? इच्छं' कहकर एक नवकार गिनकर उपदेश-माला की सज्झाय कहे। बाद एक नवकार गिने। पीछे पच्चक्खाण करे। यदि उपधानवाहीने आहार किया हो तो दो वांदणा देकर पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि थंडिला पडिलेहन संदिसाहुं? 'इच्छं' इच्छामि० इच्छा० उपधि थंडिला पडिलेहन करूं? 'इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बेसणे संदिसाहु? इच्छं'। 'इच्छामि इच्छा० बेसणे ठाउं? इच्छं' कहकर बैठ जाय और वस्त्र, कंबल, चरवला आदि पडिलेहे। यदि उपवासी हो तो यहां पर, वस्त्रादिकी पडिलेहना कर कटीसूत्र और धोतीकी फिरसे पडिलेहन करे। पीछे उच्चार प्रश्रवणके २४ थंडिलोंको पडिलेहन करे।

चौविस थंडिला पडिलेहण-पाठ ॥

१ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे । २ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे । ३ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे । ४ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे । ५ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे । ६ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे । ७ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे । ८ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे । ९ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे । १० आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे । ११ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे । १२ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे । १३ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे । १४ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे । १५ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे । १६ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे । १७ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे । १८ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे । १९ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे । २० अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे । २१ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे । २२ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे । २३ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे । २४ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे । इन चौवीस थंडिलों में से ६ थंडिले शय्या के दो तरफ-याने दहिने ३ और बांयी ३ पडिलेहे । ६ थंडिले दरवाजे के भीतर दहिने ३ और बांयीं ३ पडिलेहे ।

६ थंडिला दरवाजे के बाहर दोनों तरफ पडिलेहे और ६ थंडिले उच्चार प्रश्रवण की जगह हो वहां पर दोनों तरफ पडिलेहे ॥ इति ॥

अब प्रतिक्रमणका समय हो गया हो तो प्रतिक्रमण करें। प्रतिक्रमणमें 'आज्ञुणा चार प्रहर' पाठ की जगह नीचे लिखा हुआ ठाणेकमणे का पाठ बोले।

ठाणेकमणे चंकमणे, आउत्ते, अणाउत्ते, हरियकाय संघट्टे बीयकाय संघट्टे, थावकाय संघट्टे, छप्पइया संघट्टे, सव्वस्स वि देवसिय, दुच्चिंतिय, दुब्भासिय, दुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं तस्स मिच्छा मि दुकडं।

और खुद्दोवद्दव का काउस्सग्ग किये बाद 'इच्छामि॰ इच्छा॰ सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं॰' 'इच्छामि॰ इच्छा॰ सज्झाय करूं? इच्छं' ऐसा कहकर बैठ जाय और तीन नवकार आदि सज्झाय ध्यान करे। प्रतिक्रमण करनेके बाद गुरु आदि की वैयावच्च करे। प्रहर रात तक सज्झाय ध्यान करे। यदि लघुनीति आदि करना हो तो जयणा पूर्वक थंडिल के स्थान जाकर लघुशंका करे। वापीस आकर 'भगवन्! बहुपडिपुन्ना पोरसी?' ऐसा बोलकर खमासमणपूर्वक इरियावहियं॰ पडिकमे। पीछे रात्रि संथारा का समय हो तब नीचे लिखी विधिके अनुसार रात्रि संथारा करे।

रात्रि-संथारा-विधि ॥

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! "बहु-पडिपुण्णा पोरिसी?" इच्छं' कह कर 'इच्छामि० इच्छा० इरियावहीयं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे। पश्चात् प्रगट लोगस्स कहे। अनन्तर 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा मुहपत्ति पडलेहुं? इच्छं' कह-कर मुहपत्ति पडिलेहे। इसके बाद 'इच्छामि० इच्छा० राइ-संथारा संदिसाहुं इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा ठाऊं? इच्छं' कहे फिर 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं? इच्छं' ऐसा कह कर चउक्कसाय० नमुत्थु णं० जावंति चेइआइं०, जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जय वीयराय० तक चैत्यवन्दन करे। पश्चात् भूमि प्रमार्जन करके संथारा बीछावे। पीछे शरीर प्रमार्जन करके संथारे पर बैठ कर राइ-संथारे का नीचे लिखा पाठ पढ़े।

निसीहि निसीहि निसीहि णमो खमासमणाणं गोयमाइणं महामुणिणं।

(इतना पाठ कह कर 'नवकार' और तीन 'करेमि भंते!' कहे। इसके बाद नीचे का पाठ बोले)।

अणुजाणह जिट्ठिज्जा। अणुजाणह परमगुरु। गुणगण-रयणेहिं मंडिअसरीरा बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइसंथारए

ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेण। कुक्कुडिपायपसारणं अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संडासं, उवट्टंते अ कायपडिलेहा। दवाई उवओगं ऊसास निरुंभणालोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सि-माइ रयणीए। आहार-मुवहिदेहं, सवं तिविहेण वोसरियं ॥ ४ ॥ आसव-कसाय-बंधण, कलहा-भक्खाण-परपरि-वाओ। अरइरई पेसुन्नं; मायामोसं च मिच्छत्तं ॥ ५ ॥ वोसि-रिसु इमाइं, मुक्खमग्ग-संसग्गविग्घ-भूआइं। दुग्गइ-निबंध-णाइं, अट्ठारसपावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्स वि। एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ। सेसा मे बाहिरा भावा, सवे संजोगलक्खणा ॥ ८ ॥ संजोग-मूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा। तम्हा संयोगसंबंधं, सवं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह-देवो, जावज्जीवं सुसा-हणो गुरुणो। जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरि-हंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलीपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि। अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया। अरिहंता कित्तिअत्ताणं वोसिरामित्ति

पावगं ॥ १ ॥ सिद्धा य मंगलं मज्झ, सिद्धा य मज्झ देवया। सिद्धा य कित्तिअत्ताणं वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया । आयरिया कित्ति-अत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया। उवज्झाया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया। साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि-दग-अगणि-मारुय इक्किक्के सत्त जोणिलक्खाओ । वणप-त्तेय-अणंते दस चउदस जोणि-लक्खाओ ॥ १ ॥ विगलिंदि-एसु दो दो, चउरो चउरो य नारय-सुरेसु । तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा य मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्वजीवे सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ, मइ खमिअ सव्वह जीवनिकाय। सिद्ध-हसाख आलोयणह, मज्झह वैर न भाव ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदहराज भमंत। ते मइ सव्व खमाविया, मज्झ वि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति ॥

यह पाठ बोलकर सात नमस्कारका चिंतवन करता हुआ शयन करे, निद्रा न आवे वहां तक शुभ ध्यान करे। पीछली रात्रिको उठ कर नमस्कारमंत्र गिने। पश्चात् खमासमणपूर्वक

इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०' कहकर एक लोगस्स
ा काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे। पीछे खमासमण
कर "कुसुमिण दुसुमिण" का काउस्सग्ग करे। (पोसह-
ाला "कुसुमिणदुसुमिण" का काउस्सग्ग पहले करे। पश्चात्
ात्यवंदन करे)। तदनन्तर राइप्रतिक्रमण करे। इसमें सात-
ाख की जगह नीचेका पाठ बोले।

संथारा उवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी,
प्पइआ संघट्टणकी, अचक्खु विसयकायकी, सव्वस्स वि राइय
चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्!
च्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

प्रतिक्रमण पूरा होनेके बाद प्रभातकी पडिलेहन विधिके
नुसार पडिलेहन करे। पोसहशालामें से कचरा निकालकर
रियावहियं पडिक्कमे। पश्चात् दो खमासमण पूर्वक सज्झाय
दिसाहुं? सज्झाय करूं? आदेश मांगकर उपदेशमालाकी
ज्झाय करे। पीछे पोसह पारे।

पोसह-पारने की विधि ॥

खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ०'
ह कर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स
हे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारूं? यथाशक्ति'।
इच्छामि० इच्छा० पोसह पारेमि? तहत्ति' कह कर दहिना

हाथ नीचे रखकर तीन नवकार गिने। पीछे खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेवे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक पारुं? यथाशक्ति,' फिर 'इच्छामि इच्छा सामायिक पारेमि? तहत्ति' कहकर खमासमण पूर्वक आधा अंग नमाकर तीन नवकार गिने। पीछे घुटने टेक कर शिर नमा कर दाहिना हाथ नीचे रखकर 'भयवंदसण्णभद्दो' का पाठ वोले। इस प्रकार पोसह पार कर पोसह के उपगरण लेकर, देव—दर्शन करके घर आकर अतिथिसंविभाग व्रत आचरण करता हुआ आहार करे। इति आठ पहरी पधविधि॥

दिन संबंधी चउपहरी-पौसह-विधि।

आगे जो आठ प्रहर पौषध लेनेकी विधि लिखी है, उसी प्रकार चार प्रहर पौषध लेनेकी विधि है, किन्तु पोसह दंडक उच्चरते समय 'जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि' पाठ है, उस जगह 'जावदिवसं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोलना चाहिये। इसके बाद पूर्ववत् सामायिक लेवे। यदि प्रतिक्रमण गुरुके साथ न किया हो तो गुरुके पास आकरके पौषध और सामायिक की पूर्ववत् सब विधि करे। पीछे आलोयण खमासमणादि निमित्त मुहपत्ति पडिलेहे और दो वांदना देवे। बादमें 'इच्छा० सं० भ० राइअं आलोउं? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ अइआरो०' इत्यादि पाठ से राई

आलोवे । फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाका० सं० भ० अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं ? इच्छं खामेमि राइअं जं किंचि०' इत्यादि पाठ से राई खामे, अर्थात् विधि-पूर्वक गुरुवंदन करे। पश्चात् गुरुके समक्ष उपवास आदिका पच्चक्खाण करे। बाद दो खमासमण से बहुवेल संदिसावे। पडिलेहन पहले किया हो तो भी आदेश लेना—'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिस्साहुं, ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं' कह कर मुहपत्ति पडिलेहना। पीछे फिर 'इच्छामि० इच्छा० अंग-पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० अङ्गपडिलेहन करूं ? इच्छं' कहकर मुह-पत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसाय करी पडिलेहण पडिलेहवोजी ? इच्छं'। बाद 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कह-कर कोई वस्त्र बिना पडिलेहण किये रखा हो तो पडिलेहे, नहीं तो फिर सिर्फ आसन पडिलेहे। बाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय संदिसाहुं और सज्झाय करूं कह कर उपदेश-मालाकी सज्झाय कहे। और पीछले प्रहर पच्चक्खाण कर-नेके बाद दो खमासमण पूर्वक उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ? और उपधि-पडिलेहन करूं ? ऐसा कहकर पडिलेहन करे, परंतु थंडिला पद न कहे और थंडिला पडिलेहे भी नहीं। बाकी सब विधि आठ प्रहर पौषधविधि की तरह समझना ॥ इति ॥

रात्रिसंबंधि चउपुहरी पोसह-विधि।

जिसने दिनका चउपुहरी पोसह लिया हो, उसे यदि रात्रि पोसह का भाव हुआ हो तो वह संध्याका पडिलेहन और पच्चक्खाण करनेके बाद, दो खमासमण पूर्वक पोसहमुँहपत्ति पडिलेहन करे, पश्चात् दो खमासमणपूर्वक पोसह का आदेश मांग कर, तीन नवकार गिन कर तीन बार पोसह दंडक उच्चरे, इसमें 'जावअहोरत्तं पज्जुवासामि' पाठकी जगह 'जावरत्तिं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ उच्चरे। इसके बाद सामायिक मुँहपत्ति पडिलेहन कर जो पहिले विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करे और कारणविशेष दिनका पौषध न कर सके और रात्रिका पौषध लेनेकी इच्छा हुई हो तो, पहले सब उपगरणका पडिलेहन कर इरियावहियं० पडिकमे। पीछे चउविहार पच्चक्खाण करके दो खमासमणपूर्वक पोसह-मुँहपत्ति पडिलेहे। पश्चात् दो खमासमणपूर्वक पोसह का आदेश मांग कर तीन नवकार गिन कर तीनबार पोसह-दंडक उच्चरे। इसमें संध्यासमय हो तो 'जावरत्तिं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोले। इसके बाद सामायिक मुँहपत्ति पडिलेहन कर जो पहले विधि लिखी है उसी तरह सब विधि करे। अंतमें पडिलेहन का आदेश मांगनेके बाद स्थानक शून्यता मिटानेके लिये सिर्फ एक आसन पडिलेहे, परन्तु पहले पडिलेहन न किया हो तो सब उपधि पडिलेहे। और उचार प्रस्रवणके

चौवीस थंडिलों की भी पडिलेहन करे। बाकी सारी विधि पहलेकी तरह समझना ॥ इति ॥

देसावगासिक लेनेकी और पारने की विधि ।

देसावगासिक लेनेकी विधि पोसह लेनेकी विधि के अनुसार है, परन्तु पोसह लेनेके आदेश में देसावगासिक का आदेश लेना चाहिये, जैसे—"देसावगासिक मुँहपत्ति पडिलेहुं? देसावगासिक संदिस्साहुं? देसावगासिक ठाउं? देसावगासिक दंडक उच्चरावोजी?" इस प्रकार खमासमण-पूर्वक आदेश मांग कर देसावगासिक का पच्चक्खाण तीन वार उच्चरे। (देसावगासिकपाठः ।)

अहं ण भंते! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि। दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओ णं देसावगासियं, खित्तओणं इत्थ वा, अन्नत्थ वा, कालओ णं जाव धारणा, भावओ णं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अन्नेण केण वि रोगायंकेण वा एस मे परिणामो न परिवज्जइ ताव अभिग्गहो, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरइ।

इस प्रकार देसावगासिकका पच्चक्खाण तीन वार उच्चरे। और इसमें बहुवेल का आदेश लेवे नहीं। देसावगासिक जघन्य से तीन सामायिक और उत्कृष्ट से १५ सामायिक का होता है। देसावगासिक पारने की विधि पोसह पारने की

विधिके अनुसार समझना; जैसे मुँहपत्ति पडिलेहन कर "देसावगासिक पारूं ? पारेमि" इत्यादि दो खमासमणा-पूर्वक आदेश मांग कर पारने का सूत्र "भयवं ! दसण्ण-भद्दो०" की चौथी गाथामें "सामाइय पोसहसंठियस्स" की जगह 'सामाइय देसावगासियं संठियस्स' इत्यादि पाठ कहे ॥ इति ॥

॥ अथ सप्त स्मरणानि ॥

(१) प्रथमं बृहदजितशान्तिस्तवनं स्मरणम् !

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं । जय-गुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ॥ ववगयमंगुल भावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) ॥ सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) ॥ अजिअजिण ! सुह-प्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नामकित्तणं । तह य धिइ-मइ-प्पव-त्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥४॥ (मागहिआ) ॥ किरिआ-विहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि-सिद्धि-गयं । अजिअस्स य संति-महा-मुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं

च नमंसणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) ॥ पुरिसा ! जइ दुक्ख-वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख-कारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ (मागहिआ) ॥ अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअमुवरयजर-मरणं, सुर असुर-गरुल-भुयगवइ-पयय-पणिवइअं। अजिअमहमवि अ सुनय-नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज-महिअं सयय-मुवणमे ॥ ७ ॥ (संगययं) ॥ तं च जिणुत्तम-मुत्तम-नित्तम-सत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्तिसमाहि-निहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं दिसउ ॥८॥ (सोवाणयं) ॥ सावत्थि-पुव्वपत्थिवं च वर-हत्थिमत्थय-पसत्थ-विच्छिन्नसंथिअं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलायमाणवर-गंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथ-वारिहं। हत्थि-हत्थ-बाहुं धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिंजरं, पवर-लक्खणोवचिअसोम-चारु-रूवं, सुइ-सुह-मणाभिराम-परमरमणिज्ज-वरदेव-दुंदुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ॥९॥ (वेड्ढओ) ॥ अजिअं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं भवोह-रिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ) ॥ कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए महप्पभावो, जो बावत्तरि-पुर-वर-सहस्स-वरनगर-निगम-जणवय-वई, बत्तीसा-राय-वर-सहस्साणुयाय-मग्गो,। चउदस-वर-रयण-नव-महानिहि-चउसट्ठि-सहस्स-पवर-जुवईण सुंदर-वई, चुलसी-हय-गय-

कोडिसामी आसि जो

रह-सयसहस्स-सामी, छण्णवइ-गाम-कोडिसामी आसि जो भारहंमि भयवं! ॥ ११ ॥ (वेड्ढओ) ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे भयवं! ॥ १२ ॥ (रासानंदियं) ॥ इक्खाग! विदेह-नरीसर! नर-वसहा! मुणि-वसहा! नव-सारयससि-सकलाणण! विगय-तमा! विहुअ-रया! अजिउत्तम! तेअगुणेहिं महा-मुणि! अमिय-बला! विउल-कुला! पणमामि ते भव-भय-मूरण! जग-सरणा! मम-सरणं ॥ १३ ॥ (चित्त-लेहा) ॥ देव-दाणविंद-चंद-सूर-वंद! हट्ठ-तुट्ठ-जिट्ठ-परम लट्ठ-रूव! धंत-रूप्प पट्ट-सेअ सुद्ध-निद्ध-धवल, दंत-पंति! संति! सत्ति-कित्ति-मुत्ति जुत्ति-गुत्ति-पवर!, दित्त-तेअ! वंदधेअ सव्वलोअ-भाविअप्पभाव-णोअ! । पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (नारायओ) ॥ विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर-सूर-कराइरे-अतेअं। तिअसवइगणाइरेअ-रूवं, धरणिधर-प्पवरा-इरेअ-सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरं अ बले अजिअं। तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ (भुअगपरि-रंगियं) ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी। रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ॥ १७ ॥ (खिज्जि-अयं) ॥ तित्थ-वर-पवत्तयं तमरयरहिअं, धीर-जण-थुअच्चिअं

चुअकलि-कलुसं । संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं) ॥ विणओणय-सिरि-रइअंजलि-रिसि-गण-संथुअं थिमिअं, विवुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चियं बहुसो । अइरुग्गय-सरय-दिवायर समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणंगण-वियरण-समुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किसलयमाला)॥ असुर-गरुल-परिवंदिअं, किन्नरोरगणमंसिअं । देव-कोडि-सय-संथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं) ॥ आगया वरविमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं-हुलिअं । ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुण्डलंगय-तिरीड-सोहंत-मउलि-माला ॥ २२ ॥ (वड्ढओ)॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा, वेर-विउत्ता, भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-संभम-पिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा। उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा, गाय-समोणयभत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिअ-सीसपणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं तिगुणमेव य पयो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणि महंपि पंजलि, राग-दोस-भय-मोह-वज्जिअं । देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं, संति मुत्तमं-महातवंनमे ॥ २५ ॥ (खित्तयं) ॥ अंबरंतर-वियारणीआहिं, ललिअ-हंस-वहूगामिणिआहिं । पीण-सोणि-

सप्त स्मरणानि ।

थण - सालिणिआहिं, सकल - कमल - दल - लोअणिआहिं ॥२६॥
(दीवयं) ॥ पीण - निरंतर - थण भर - विणमिअ - गाय - लयाहिं,
मणि - कंचण - पसि - ढिल - मेहल - सोहिअ - सोणि—तडाहिं । वर-
खिंखिणि - नेउर - सतिलय - वलय - विभूसणिआहिं, रइकर - चउर-
मणोहर - सुंदर - दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ (चित्तक्खरा) ॥ देव-
सुंदरीहिँ पाय - वंदिआहिँ, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
अप्पणो निडालएहिँ मंडणोड्डणपगारएहिं, केहिं केहिं वि अ-
वंग - तिलय - पत्त - लेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयं - गयाहिं, भत्ति-
सन्नि - विट्ठ - वंदणा गयाहिं, हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥
(नारायओ) ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ - मोहं । धुअ-
सव्व किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं) ॥ थुअ-
वंदिअस्सा रिसि - गणदेव - गणेहिं, तो देव - वहुहिं पयओ पण-
मिअस्सा । जस्स जगुत्तम - सासणअस्सा, भत्ति - वसागय - पिंडि-
अआहिं । देव - वरच्छरसा बहुआहिं, - सुर - वर - रइ - गुण - पंडि-
अआहिं ॥ ३० ॥ (भासुरयं) ॥ वंस - सद्द - तंति - ताल - मेलिए,
तिउ - क्कराभिराम - सद्द मीसए कए अ, सुइ - समाणणे अ सुद्ध-
सज्ज - गीअ - पाय जाल घंटिआहिं, वलय - मेहला - कलाव - नेउरा-
भिराम सद्द - मि सए कए य देव - नट्टिआहिं हाव - भाव-
विब्भम - प्पगारएहिं, नच्चिऊण - अंग हारएहिं वंदिआ य जस्स ते
सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय - सव्व सत्त - संति - कारयं, पसंत - सव्व-
पाव - दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ (नारा-
यओ) ॥ छत्त - चामर पडाग - जूअ - जव - मंडिआ, झय - वर - मगर-

चुअकलि-कलुसं । संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं) ॥ विणओणय-सिरि-रइअंजलि-रिसि-गण-संथुअं थिमिअं, विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चियं बहुसो । अइरुग्गय-सरय-दिवायर समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणंगण-वियरण-समुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किसलयमाला)॥ असुर-गरुल-परिवंदिअं, किन्नरोरगणमंसिअं। देव-कोडि-सय-संथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं) ॥ आगया वरविमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं-हुलिअं । ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुण्डलंगय-तिरीड-सोहंत-मउलि-माला ॥ २२ ॥ (वेड्ढओ) ॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा, वेर-विउत्ता, भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-संभम-पिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा। उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा, गाय-समोणयभत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिअ-सीसपणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं तिगुणमेव य पयो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणि महंपि पंजलि, राग-दोस-भय-मोह-वज्जिअं । देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं, संति मुत्तमं-महातवंनमे ॥ २५ ॥ (खित्तयं) ॥ अंबरंतर-वियारणीआहिं, ललिअ-हंस-वहूगामिणिआहिं । पीण-सोणि-

(२) द्वितीयं लघु-अजितशान्तिस्मरणम्।

उल्लासि-कम-णक्ख-णिग्गय-पहा-दण्ड-च्छलेणंगिणं, वंदा-रूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाणमग्गावलिं। कुंदिंदुज्जलदंत-कंति-मिसओ नीहंतनाणंकुरु-क्केरे दोवि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम-जलहि-नीरं जो मिणिज्जंऽज-लीहिं खय-समय-समीरं जो जिणिज्जा गईए। सयल-नहयलं
। लंघए जो पएहिं, अजियमहव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥२॥
।हवि हु बहु-माणुल्लासि-भत्ति-ब्भरेण, गुणकणमिव कित्ति-हामि चिंतामणि व्व। अलमहव अचिंताणंत-सामत्थओ सिं, फलिहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयलजय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु, दुट्ठानिट्ठदोघट्ट-थट्टं। नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ठ-पायारविंदे, सययमजिअ-संती ते जिणंदाभिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वर-कित्ती वड्ढए देह-दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती। फुरइ परमतित्ती होइ संसार-छित्ती, जिण-जुअ-पय-भत्ती ही अचिंतोरु सत्ती ॥ ५ ॥ ललिअ-पय-पयारं भूरिदिव्वंग-हारं, फुडघण-रस-भावो-दार-सिंगार-सारं। अणिमिस-रमणीजणं सणच्चेअ-मीया, इय पणमण मंदा कासि-नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअ-संती ते कया-सेस-संती, कणय-रयपिसंगा छज्जए जाणि मुत्ती। सरमस-परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी, घण-थण-भरनिरोह-निकामा ॥ ७ ॥ बहुविह-नय-भंगं वत्थु

तुरय-सिरिवच्छ-सुलंछणा । दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह-सीह-रह चक्क-वरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिअयं) ॥ सहाव-लट्ठा-सम-प्पइट्ठा अदोस-दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुव-सव्व पावया, सव्व लोअहिअ मूल-पावया । संथुआ अजिअ-संति-पायया, हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरांतिका) ॥ एवं-तव-बल-विउलं, थुअं मए अजिय संति जिण-जुअलं । ववगयकम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥ ३६ ॥ (गाहा) ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनन्दिं । परिसा विअ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ (गाहा) ॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स-भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग-निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ-कालंपि अजिय संति-थयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिण वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ (गाहा) ॥

इति प्रथमं बृहदजितशान्तिस्तवनं स्मरणम् ।

---

(२) द्वितीयं लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ।

उल्लासि-क्कम-णक्ख-णिग्गय-पहा-दण्ड-च्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाणमग्गावलिं । कुंदिंदुज्जलदंत-कंति-मिसओ नीहंतनाणंकुरु-क्केरे दोवि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम-जलहि-नीरं जो मिणिज्जंऽज-लीहिं खय-समय-समीरं जो जिणिज्जा गईए । सयल-नहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजियमहव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥२॥ तहवि हु बहु-माणुल्लासि-भत्ति-ब्भरेण, गुणकणमिव कित्ति-हामि चिंतामणि व्व । अलमहव अचिंताणंत-सामत्थओ सिं, फलिहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयलजय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु, दुट्ठानिट्ठदोघट्ट-थट्टं । नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ठ-पायारविंदे, सययमजिअ-संती ते जिणंदाभिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वर-कित्ती वड्ढए देह-दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती होइ संसार-छित्ती, जिण-जुअ-पय-भत्ती ही अचिंतोरु सत्ती ॥ ५ ॥ ललिअ-पय-पयारं भूरिदिव्वंग-हारं, फुडघण-रस-भावो-दार-सिंगार-सारं । अणिमिस-रमणीजंदंसणच्छेअ-[illegible] ॥ ६ ॥ थुणह सीया, इव पणमण मंदा कासि-नट्टोवयारं ... कणय-रयपिसंगा छज्जए अजिअ-संती ते कया-सेस-संती, कणय-रयपिसंगा छज्जए जाणि मुत्ती । सरभस-परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी, घण-थण-घुसिणिपकुप्पंक-पिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविह-नय-भंगं वत्थु

णिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं। इय कुनय-विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिय-लोए ताव मोहंधयारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त-छण्णं। फुरइ फुड-फलंताणंत णाणंसुपूरो, पयड-मजिय-संतीज्झाण-सूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि-करि-हरि तिण्हुण्हंबु-चोराहि-वाही, समर-डमर-मारीरुद्द-खुद्दोवसग्गा। पल-यमजिअ-संती-कित्तणे झत्ति जंती, निविडतरतमोहा भक्खरालुंखिअव्व ॥ १० ॥ निचिअ-दुरिअ-दारु-द्दित्त-झाणग्गिजाला, परिगयमिव गोरं चिंतिअं जाण रूवं। कणय-निहसरेहा-कंति-चोरं करिज्जा, चिरथिरमिह लच्छि गाढ़-संथंमियंव ॥ ११ ॥ अडविनिवडियाणं पत्थि-वुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरंताण गुत्ति-ट्ठियाणं। जलिअजलण-जालालिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं, संतिं, नाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरि-करि परिकिण्णं पक्कपाइक्क-पुन्नं, सयल-पुहवि रज्जं छड्डिउं आणसज्जं। तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्तिमग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-नित्तुप्पलाहिं, थण-भर-नमिरीहिं मुट्ठि-गिज्झोदरीहिं। ललिअ-भुअलयाहिं पीण-सोणि त्थलीहिं, सय-सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ असिस-किडिम-कुट्ठ-गंठि-कासाइसार-क्खय-जर-वण-लूआ-साससोसोदराणि। नह-मुह-दसणच्छी-कुच्छिकन्नाइरोगे, मह जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु-दुह-तासे पक्खिए चाउ-

मासे, जिणवरदुग-थुत्तं यच्छरं या पवित्तं । पढह सुणह सिज्झा- एह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअसत्तुपुत्त ! सिरि-जिअ-जिणेसर !, तह अइरा-विस-सेण-तणय ! पंचम-चक्कीसर ! । तित्थंकर ! सोल- सम ! संति ! जिण-वल्लह-संथुअ !, कुरु मंगल मम हरसु दुरियमखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥

इति द्वितीयं श्रीलघु-अजितशान्तिस्तवनं स्मरणम् ।

---

(३) नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ।

नमिऊण पणय-सुर-गण-चूडामणि-किरणरंजिअं मुणिणो । चलण-जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडियकर- चरण-नह-मुह-निबुड्ड-नासा विवन्नलावण्णा । कुट्ठमहारोगा- नल-फुलिंग-निद्दड्ढ-सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तु चरणा-राहणसलिलं- जलि-सेअ-वुड्ढिअ-च्छाया । वण-दव-दड्ढागिरि-पायवव्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय-खुभिय-जलनिहि, उब्भडकल्लोल- भीसणारावे । संभंत-भय-विसंठुल,-निज्जामय-मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिय-जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पासजिण- चलण-जुअलं, निच्चं च्चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर-पव- णुद्धुय-वणदव-जालावलि-मिलिय-सयल-दुमगहणे । डज्झंत- मुद्धमय-वहु-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कम- जुअलं, निव्वाविय-सयल-तिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत-भोगभीसण,-

फुरिआरुण-नयण-तरल-जीहालं। उग्ग-भुअंगं नव,-जलय-सत्थहं भीसणायारं ॥८॥ मन्नंति कीडसरिसं,-दूर-परि-च्छूढ-विसमविस-वेगा। तुह नामक्खर-फुड-सिद्ध-मंत-गुरुआ नरा लोए॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंदसद्-दूल-सद्दभी-मासु। भय-विहुरवुन्न-कायर-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह! पणाम-मत्त-वावारा। वव-गयविग्घा, सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआ-नल-नयणं, दूर-विआरिय-मुहं महाकायं। नह-कुलिस-घायविअ-लिअ-गइंद-कुंभ-त्थलाभोअं ॥१२॥ पणय-ससंभम-पत्थिव,-नह-मणिमाणिक्क-पडिअ-पडिमस्स। तुह वयण-पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल-दंतमुसलं, दीह-करुल्लाल-वुड्ढिउच्छाहं। महु-पिंग-नयण-जुअलं, ससलिल-नव-जलहराऽऽरावं ॥ १४ ॥ भीमं महा-गइंदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति। जे तुम्ह चलण-जुअलं मुणिवइ? तुंगं सम-ल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख-खग्गाभिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय-कबंधे। कुंत-विणिभिन्नकरि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउर-म्मि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धररिउ-नरिंद निवहाभडा जसं धवलं। पावंति पावपसमण! पासजिण! तुह प्पभा-वेण ॥१७॥ रोग-जल-जलण-विसहर-चोरारि-मइंदगय-रण-भयाइं। पास-जिणनाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं। भविय-जणाणं-दयरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥१९॥ राय-भयजक्ख-रक्खस-,

कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख पीडासु । संझासु दोसु पंथे, उव-
सग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढ़इ जो अ निसुणइ,
ताणं कइणो य माण-तुंगस्स । पासो पावं पसमेउ, सयल-
भुवणयच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥

इति तृतीयं श्रीपार्श्वजिनस्तवनं स्मरणम् ।

(४) चतुर्थं गणधरदेवस्तुतिरूपं स्मरणम् ।

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण ।
सम्मं पवत्तियं भव्व-सत्त-संताण-सुहजणयं ॥ १ ॥ नासिय-
सयल-किलेसा निहय कुलेसा-पसत्थ-सुह-लेस्सा । सिरिवद्ध-
माणतित्थस्स, मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्मबीआ
बीया परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा । सिद्धा ति-जय पसिद्धा, हणंतु
दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता, पंच-पयारं सया
पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, निहय-कुतित्थं पयासंतु
॥ ४ ॥ सम्म-सुअ-वायगा वायगा य सि-अवाय-वायगा
वाए । पवयण-पडणीय-कए ऽवणंतु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥
निव्वाण-साहणुज्जय-साहूणं जणिय-सव्व-साहज्जा । तित्थप्प-
भावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं
निव्वाण-फलं च चरणमवि हवइ । तित्थस्स दंसणं तं, मंगल-
मवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छम्मो सुअधम्मो, समग्ग-
भव्वंगि वग्ग-कय-सम्मो । गुण-सुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं
सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ-भव्व

सत्त-सिव-सम्मो । नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-संघस्स॥ ९॥ गुण-गण-गुरुणोगुरुणो, सिव-सु ह-मइणो कुणंतु तित्थस्स। सिरि-वद्धमाण-पहु-पयडि-अस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥जिय-पडिवक्खा जक्खा, गोमुह-मायंग-गयमुह पमुक्खा। सिरि वंभसंतिसाहिआ, कय-नय-रक्खा सिवं दिंतु ॥११॥ अंवा पडिहयडिंवा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स। चक्केसरि-वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा-देवीउ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं। अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअ-सुयदेवयाइ समं ॥ १३ ॥ जिण-सासण-कयरक्खा, जक्खा चउवीस-सासण-सुरावि। सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासन्तु ॥ १४ ॥ जिणपवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सवहा सव्वे। वेयावच्चकरावि अ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिण-समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय भव्वाण जणिय साहज्जो। गीयरई गीअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥ १६ ॥ गिह-गुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी देव-देवीओ। जिणसासण-ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दस-दिसि पाला-स-क्खित्तपालया नवग्गहा सनक्खत्ता। जोइणि-राहु-गह-काल-पास-कुलि-अद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सह काल-कंटएहिं, सविट्ठि-वच्छेहिं कालवेलाहिं। सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसन्तु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ-वाणमंतर, जोइस-वेमाणिआ य जे देवा। धरणिंद-सक्कसहिआ, दलंतु दुरियाइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ

पणा-सिय-तमोहं। तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्ध-माणस्स ॥ २१ ॥ जो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्जवि सासणं जए जयइ। सिद्धि-पह-सासणं-कुपह-नासणं सव्व-भय-महणं ॥ २२ ॥ सिरि-उसभसेस-पमुहा, हय-भयनिवहा दिसन्तु तित्थस्स। सव्व जिणाणं गणहारिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि-वद्धमाण-तित्थाहिवेण, तित्थं समप्पियं जस्स। सम्मं सुहम्म-सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसंतु सयल-संघस्स। इयर-सुरा वि हु सम्मं, जिण गणहर-कहिय-कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए। जिणदत्ताण ठिओसो, सुनिट्ठि-अट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥

इति चतुर्थं श्रीगणधरदेव-स्तुति-नामकं स्मरणम्।

(५) पञ्चमं गुरुपारतन्त्र्यनामकं स्मरणम्।

मयरहियं गुण-गण-रयण,-सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरु-जण-पारतंतं, उयहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा पणट्ठ-संदेहा। पणयंगि-वग्गदा-विअसुह-संदोहा सुगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा सम-त्थपरतित्थ-जणिय-संखोहा। पडिभग्ग-लोह-जोहा, दंसिअ-सुम-हत्थसत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ-सत्थ-वाहा, हय-दुहदाहा सिवं-ब-तरु साहा। संपाविअ-सुह-लाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥४॥ सुगुण-जण-जणिय-पुज्जा, सज्जो निर-वज्ज-गहिय-पव्वज्जा।

सिवसुह - साहणसज्जा, भव - गुरु - गिरि - चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जसुहम्म - प्पमुहा, गुण - गण - निवहा सुरिंद - विहिअमहा । ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअजिण-देवो, देवायरिओ दुरंत - भवहारी । सिरि - नेमिचंद - सूरि उज्जोअण - सूरिणो सुगुरू ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाणसूरि, पयडीकयसूरि-मंत - माहप्पो । पडिहयकसाय - पसरो, सरय -ससंकुव्व सुहजणओ ॥८॥ सुह - सील - चोर - चप्परण - पच्चलो निच्चलो जिणमयम्मि । जुगपवर - सुद्ध - सिद्धंत - जाणओ पणयसुगुण - जणो ॥९॥ पुरओ दुल्लह - महिव, ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्का विआरि-ऊणं, सीहेण व दव्वलिंगि - गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय - निसि विप्फुरंत - सच्छन्द - सूरि - मय - तिमिरं । सूरेण व सूरि - जिणे-सरेण हय - महिअदोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंत - सुहमुत्ती । पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद - जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ - नवंग - सुत्तत्थ - रयणकोसो पणासिअ-पओसो । भव - भीअ - भविअजण - मण, कय - संतोसो विगय-दोसो ॥ १३ ॥ जुग - पवरागम - सार - प्परूवणा - करण बन्धुरो धणिअं । सिरी - अभयदेव - सूरि, मुणि - पवरो परम - पस-मधरो ॥ १४ ॥ कय - सावय - सत्तासो, हरिव्व सारंग - भग्ग-सन्देहो । गयसमय - दप्पदलणो, आसाइय - पवर - कव्वरसो ॥ १५ ॥ भीम भव - काणणम्मि अ, दंसिअ - गुरु - वयण - रयण-संदोहो । नीसेस सत्त - गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ - सच्चरणो, चउरणुओगप्पहाण - सच्चरणो । असम-

मयराय-महणो, उड्डमुहो सहइ जस्स करो ॥ १७ ॥ दंसिअ-निम्मलनिच्चल,-दंत-गणोगणिअ-सावओत्थ-भओ। गुरु-गिरि-गरुओ सरहुव्व सूरि जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुगपवरागम-पीऊ-सपाणपीणिय-मणा कया भव्वा। जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिय-पवरपवयण-सिरोमणी वूढ-दुव्वहा खमो य। जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआणमहीणं, सुगुरूणं पारतंतमुव्वहइ। जयइ जिणदत्त-सूरि, सिरि-निलओ पणयमुणि-तिलओ ॥ २१ ॥

इति श्रीगुरु-पारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ।

(६)-'सिग्घमवहरउ' नामकं षष्ठं स्मरणम् ।

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण-वीराणाणुगामिसंघस्स। सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा। सिरि वद्ध-माण-जिण-तित्थ-सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुरा जे, जिण-वेयावच्च-कारिणो संति। अवहरिय-विग्घ संघा, हवंतु ते संघ-संतिकरा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणयट्ठिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीणं। निद्दलिय-दुरिय-विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पडिहयपडिव-क्ख-पक्ख-लक्खा ते। कय-सगुण-संघ-रक्खा, हवंतु संपत्त-सिव-सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्कापमुहा, जिण-सासण-देवया य जिण-पणया। सिद्धाइया-समेया, हवंतु संघस्स विग्घ-

हरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सच्चउर-पुरट्ठिओ वद्धमाण-जिण-भत्तो । सिरि-बंभसंति-जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्त-गुह-गुत्त-संताण-देस-देवावि-देवया ताओ । निव्वुइ-पुर-पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के-सरि-चक्कधरा, विहि-पहरिउच्छिण्ण-कंधरा धणियं । सिव-सरणि-लग्ग-संवस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सुसंघेण । जिणचंदोऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहू मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेसरू व्व हय-तिमिरो । जिणचंदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह-पाए,-ऽभयदेवपहुत्त-दायगे वंदे । जिणचंदजिणेसर-वद्धमाण-तित्थ-स्स वुड्ढि-कए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जे य कारिंति । मणा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिओ ते वि ॥ १३ ॥ जिणदत्त-गुणे नाणाइणो, सया जे धरिंति धारंति । दंसिअ-सिअवाय-पए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥ १४ ॥

इति षष्ठं स्मरणम् ।

(७)– उवसग्गहर-नामकं सप्तमं स्मरणम् ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विस-हरविस-निन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह-रोग-मारी,-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ

पणामो वि बहु-फलो होइ । नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगचं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्प-पायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस !, भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ।

श्रीभक्तामर-स्तोत्रम् ।

(वसन्ततिलका – छन्दः ।)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,-मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा,-वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मय-तत्त्व-बोधा,-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ !, स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगतत्रपोऽहम् । बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब,-मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? । कल्पान्त-कालपवनोद्धतनक्र-चक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश !, कर्तुं

स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः। प्रीत्यात्म-वीर्य्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्। यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु-चूतकलिका-निकरैक-हेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव-संतति-सन्निबद्धं पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम्। आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद,-मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्। चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति। दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूतनाथ! भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः। तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति? ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशि-कर-द्युतिदुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जल-निधेरशितुं क इच्छेत्? ॥ ११ ॥ यैः शान्तराग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललामभूत!। तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप-मस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि, निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोपमानम्। बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व

निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप,-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्। कल्पान्त-कालमरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्? ॥ १५ ॥ निर्धूम-वर्त्तिरपवर्जित-तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि। गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोदरनिरुद्ध-महा-प्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र! लोके॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं, गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योतयज्जग-दपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा? युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ!। निष्पन्नशालिवन-शालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः?॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवा-

न्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-मादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम्। योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित! बुद्धि-बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्। धाताऽसि धीर! शिवमार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!, तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय। तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र? यदि नाम गुणैरशेषै-स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!। दोषै-रुपात्त-विविधाश्रयजात-गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख,-माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्। स्पष्टोल्लसत्किरण-मस्त-तमो-वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणि-मयूखशिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्। बिम्बं वियद्विलसदंशु-लता-वितानं, तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदात-चल-

चामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् । उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर-वारिधार-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥ छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-मुच्चैःस्थितं स्थगित-भानु-करप्रतापम् । मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्जकान्ती, पर्युल्लसन्नखमयूख-शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!, धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि? ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल,-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः । बद्धक्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिल-कण्ठ-नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्क-स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद,-माजौ बलं बलवतामपि भूप-

तीनाम् । उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखाऽपविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह, -वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे । युद्धे जयं विजित-दुर्जयजेय-पक्षा, -स्त्वत्पाद-पङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण-नक्रचक्र-पाठीन-पीठ-भयदोल्वण-वाडवाग्नौ । रङ्ग-त्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यानपात्रा, -स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः । त्वत्पाद-पङ्कजरजोऽमृत-दिग्ध-देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खलवेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त-द्विपेन्द्रमृगराज-दवानलाहि-संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्ध-नोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणै-र्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ।

(वसन्ततिलका—छन्दः ।)



कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, -भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् । संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु, -पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतो, -स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् । सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, -मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ? । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ? ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्त-वान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, -न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि

त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग,-मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून,-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना,-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्म-चौराः । प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप,-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य,-दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति । तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य

विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् । एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्त्तिनो हि यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः । पानीय-मप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विष-विकारमपाकरोति ? ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ? ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव, विष्वक् पतत्य-विरला सुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन्! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीर-गिरिमुज्ज्वलहेमरत्न,-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै,-श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।

सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन,-मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!, तारान्वितो विधुरयं विहिताधिकारः । मुक्ता-कलापकलितोच्छ्वसितातपत्र,-व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन । माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो, विभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन! नमत्-त्रिदशाधिपाना,-मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् । पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्य-सु-मतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो! यदसि कर्म विपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश! । अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा-दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव न नाथ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन!

दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य,-माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ! । भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य,-मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,-वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !, संसारतारक !

विभो ! भुवनाधिनाथ ! । त्रायस्व देव ! करुणाहृद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः । त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्र !, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति ॥

श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचिता ग्रहशान्तिः ।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् । ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै, -र्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्य मार्त्तण्ड, -श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपूज्ये भूमिपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा । वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाऽजितसुपार्श्वा, -श्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्चेषु गीष्पतिः ॥५॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः । नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाल्लग्ने च राशौ च, यदा पीड्यन्ति खेचराः । तदा सम्पूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥

नवग्रहपूजा ।



पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्कर । शान्तिं तुष्टिं
च पुष्टिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ८ ॥ इति श्रीसूर्यपूजा ॥
चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिप । प्रसन्नो भव शान्तिं
च, रक्षां कुरु जयं ध्रुवम् ॥ ९ ॥ इति श्रीचन्द्रपूजा ॥
सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्तिं जयश्रियम् । रक्षां कुरु
धरासूनो, अशुभोऽपि शुभो भव ॥ १० ॥ इति श्रीभौम-
पूजा ॥ विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुनमिस्तथा ।
महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भूयाः सदा बुधः ॥ ११ ॥
इति श्रीबुधपूजा ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनन्दनशीतलौ ।
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमः ॥ १२ ॥ एतत्तीर्थ-
कृता नाम्ना, पूज्योऽशुभः शुभो भव । शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं
च, कुरु देवगणार्चित ॥ १३ ॥ इति श्रीगुरुपूजा ॥ पुष्पदन्त
जिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चित । प्रसन्नो भव शान्तिं च
रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ १४ ॥ इति श्रीशुक्रपूजा ॥ श्रीसुव्रत
जिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्याङ्गसंभव । प्रसन्नो भव शान्तिं च
रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ १५ ॥ इति श्रीशनैश्चरपूजा
श्रीनेमिनाथतीर्थेश,-नामतः सिंहिकासुत । प्रसन्नो भव शान्तिं
च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ १६ ॥ इति श्रीराहुपूजा ॥ रा
सप्तमराशिस्थ,- कारणे द्रव्यसंवरे । श्रीमल्लिपार्श्वयोर्ना
केतोः शान्तिं जयश्रियम् ॥ १७ ॥ इति श्रीकेतुपूजा ॥

भणित्वा स्वस्ववर्णकुसुमाञ्जलिक्षेपजिनग्रहपूजा कार्या, तेन सर्वपीडायाः शान्तिर्भवति । *अथ सर्वेषां वा ग्रहाणामेकदा पीडायामयं विधिः* ॥ नव-कोष्टकमालेख्यं, मण्डलं चतुरस्त्रकम् । ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या, वक्ष्यमाणाः क्रमेण तु ॥ १८ ॥ मध्ये हि भास्करः स्थाप्यः, पूर्व-दक्षिणतः शशी । दक्षिणस्यां धरा-सूनु-र्बुधः पूर्वोत्तरेण च ॥ १९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः, पूर्वस्यां भृगुनन्दनः । पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ २० ॥ पश्चिमोत्तरतः केतु,-रिति स्थाप्याः क्रमाद् ग्रहाः । पट्टे स्थालेऽथ वाऽऽग्नेय्यां, ईशान्यां तु सदा बुधैः ॥ २१ ॥ आर्या ॥ आदित्यसोममङ्गलबुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः । केतु-प्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥ २२ ॥ इति भणित्वा पंचवर्णकुसुमाञ्जलिक्षेपश्च जिनपूजा च कार्या । पुष्पगन्धादि-भिर्धूपैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणा-न्वितैः ॥ २३ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः । पूजिताः संस्तुता भक्त्या, ग्रहाः सन्तु सुखावहाः ॥ २४ ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे । नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ २५ ॥ एवं यथानामकृताभिषेकै-रालेपनैर्धूपनपूजनैश्च । फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां नाम्ना ग्रहेन्द्रा वरदा भवन्तु ॥ २६ ॥ साधुभ्यो दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये । चतुर्विधस्य सङ्घस्य, बहुमानेन पूजनम् ॥ २७ ॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पञ्चमः श्रुतकेवली । विद्याप्रभावतः पूर्वात्, ग्रहशान्तिरुदीरिता ॥ २८ ॥ इति ॥

अथ नवग्रह-पूजा-जाप-विधिः ॥

कस्मिन् रिष्टग्रहे कस्य जिनस्य कया रीत्या पूजा कार्या तदाख्याति । **रविपीडायाम्**—रक्तपुष्पैः श्रीपद्मप्रभपूजा कार्या, 'ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । **चन्द्रपीडायाम्**—चंदनसेवन्त्र पुष्पैः श्री चन्द्रप्रभपूजा कार्या, 'ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं' तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । **भौमपीडायाम्**—कुंकुमेन च रक्तपुष्पैः श्रीवासुपूज्यपूजा विधेया, 'ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । **बुधपीडायाम्**—दुग्धस्नाननैवेद्यफलादितः श्रीशान्तिनाथपूजा कर्त्तव्या, 'ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं, एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । **गुरुपीडायाम्**—दधिभोजनजम्बीरादिफलेन च चन्दनादिविलेपनेन श्रीआदिनाथपूजा करणीया, 'ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं, एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कर्त्तव्यः । **शुक्रपीडायाम्**—श्वेतपुष्पैश्चन्दनादिना श्रीसुविधिनाथपूजा कार्या, चैत्ये घृतदानं कार्यम् । 'ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । **शनैश्चरपीडायाम्**—नीलपुष्पैः श्रीमुनिसुव्रतपूजा कार्या, तैल स्नानदाने कर्त्तव्ये, 'ॐ ह्रीं नमो लोए सव्व साहूणं, एतस्य अष्टोत्तर शतजपः कार्यः । **राहुपीडायाम्**—नीलपुष्पैः श्रीनेमिनाथपूजा करणीया, ॐ 'ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । **केतुपीडायाम्**—दाडिमादिपुष्पैः श्रीपार्श्वनाथपूजा कार्या, 'ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं' एतस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः । इति । **सर्वग्रह-पीडायाम्**—श्रीसूर्य-सोमाङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु-केतवः सर्वे ग्रहा मम सानुग्रहा भवन्तु स्वाहा । 'ॐ ह्रीं, अ सि आ उ साय नमः स्वाहा' अस्य मंत्रस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः तेन नवग्रहपीडोपशान्तिः स्यात् ॥ इति नवग्रहपूजाजापविधिः ॥

श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रम् ।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ एष पञ्चनमस्कारः, सर्वपापं क्षयङ्करः । मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः । कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् । मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः । देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटे । आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च । सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः । अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षेद्, आग्नेयीं विजितेन्द्रियः । दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत्सर्वा-मीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षेद्, अजितोऽपि विलोचने ।

संभवः कर्णयुगलेऽभिनन्दस्तु नासिके ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभाभिधः ॥ १३ ॥ कण्ठं सुविधी रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेद्, अनन्तोऽसौ स्तनावपि । श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभिमण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षेद्, अरो रोमकटीतटम् । मल्लिरूरुपृष्ठवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेद्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम् । श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क,-वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने च, संग्रामे शत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्निसर्पादि-भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् । तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुखसम्पदः ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवासरम् । कमलप्रभराजेन्द्रः, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेत् सकमलप्रभाख्यं, लक्ष्मीं मनोवाञ्छितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः । वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति ॥

श्रीऋषिमण्डल-स्तोत्रम् ॥

आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्य-मक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् । अग्नि-ज्वालासमं नाद-विन्दुरेखासमन्वितम् ॥ १ ॥ अग्निज्वाला-समाक्रांतं, मनोमलविशोधकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ नमः सर्वसूरीभ्य, उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः । ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य-चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेत-दर्हदाद्यष्टकं शुभम् । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितम् ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परं रक्षे त्तु मस्तकम् । तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥ ७ ॥ पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकाम् । नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेद्, रक्षेत् पादान्त-मष्टमम् ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सान्तः, सरेफो द्व्यब्धिपञ्चपान् । सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो विन्दुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्य-नामाक्षरा आद्याः, पंचैते ज्ञानदर्शने । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सान्तःसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रूँ ह्रेँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रँः, अ सि आ उ सा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो ह्रीँ नमः, जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलङ्कृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्ये सङ्गतो मेरुः, कुटलक्षैरलङ्कृतः । उच्चैरुच्चैस्त-

रस्तार - स्तारामण्डलमण्डितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारान्तं, बीज-मध्यास्य सर्वगम् । नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्यतोज्झितम् । निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम् । तामसं चिरसम्बुद्धं, तैजसं शर्वरीसमम् ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं, परम्परपरापरम् ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् । पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरम् ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसम्बुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुम् । ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकम् ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः । तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र सङ्गताः ॥ २१ ॥ नादश्चन्द्रसमाकारो, बिन्दुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नादस्थिति-समाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि, -सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ, पार्श्व-मल्ली जिनोत्तमौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थंकराः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरं प्राप्ता-श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥

गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः। सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु राकिनी ॥२९॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥३०॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु काकिनी ॥ ३१॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥३२॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥ ३५ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु, हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य

या विभा । तयाच्छादितसर्वांगं, मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः । ताभिरभ्युद्यत-ज्योति-रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी-र्गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्या, क्लिन्नाऽजिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्तिं कीर्तिं धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः, श्रीऋषिमण्डलस्तवः । भाषितस्तीर्थ-नाथेन, जगत्त्राणकृतोऽनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम् । लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यै-वाष्टमहासिद्धि-र्गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीति-विनाश-कम् ॥ ५४ ॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्त-

कफोद्रेकै-र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठ-वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात-र्ये पठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥ ६१ ॥ विश्ववन्द्यो भवेद्ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तुतीनामुत्तमं परम् । पठनात् स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥ ६३ ॥ इति ॥

तिजयपहुत्त-नामकस्तोत्रम् ।

तिजय-पहुत्त-पयासय, अट्ठ-महापाडिहेरजुत्ताणं । समय-क्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो । नासेउ सयल-दुरिअं, भविआणं भत्ति-जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा । गह-भूअ-रक्ख-साइणि,-घोरु-वसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलणहरिकरि,-चोरारिमहाभयं हरउ

॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह्य चेव चालीसा। रक्खंतु से सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः। आलिहिय-नाम-गब्भं चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ति, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ। चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकाली तह य गौरी ॥ ७ ॥ गंधारी महज्जाला, माणवी वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता। माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस-कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं। विविहरय-णाइवन्नो-वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीसअइसय-जुआ, अट्ठ-महापाडिहेरकयसोहा। तित्थयरा गयमोहा, झाए-अव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम,-मरगयघणसन्निहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे, स्वाहा ॥११॥ ॐ भवणवइवाणवंतर जोइसवासी-विमाणवासी अ। जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं, स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीयं। एगंतराइगहभूअ,-साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयजंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलि-हिअं। दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥

श्रीजिनदत्तसूरिस्तुतिः।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठंति ॥
मरुस्थलीकल्पतरुः स जीया,-द्युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥

चिंतामणिः कल्पतरुर्वराकः, कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्याः॥
प्रसीदतः श्रीजिनदत्तसूरेः, सर्वं पदं हस्तिपदे प्रविष्टम् ॥ २ ॥

नो योगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी, नो वेतालपिशाचराक्षसगणा नो रोगशोकौ भयम् ॥ नो मारी न च विग्रहप्रभृतयः प्रीत्या प्रणुत्युच्चकैः, यस्ते श्रीजिनदत्तसूरिगुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥ ३ ॥

श्रीसरस्वतीस्तोत्रम् ।

(द्रुतविलम्बितं छन्दः ।)

कलमरालविहङ्गमवाहना, सितदुकूलविभूषणभूषिता ।
प्रणतभूमिरुहामृतसारणी, प्रवरदेहविभाभरधारिणी ॥ १ ॥
अमृतपूर्णकमण्डलुधारिणी, त्रिदश-दानव-मानवसेविता ।
भगवती परमैव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाम्बुजम् ॥ २ ॥
जिनपतिप्रथिताखिलवाङ्मयी, गणधराननमण्डपनर्तकी ।
गुरुमुखाम्बुजखेलनहंसिका, विजयते जगति श्रुतदेवता ॥ ३ ॥
अमृतदीधितिबिम्बसमाननां, त्रिजगतीजननिर्मितमाननाम् ।
नवरसामृतवीचिसरस्वतीं, प्रमुदितः प्रणमामि सरस्वतीम् ॥ ४ ॥
विततकेतकपत्रविलोचने, विहितसंसृतिदुष्कृतमोचने ।
धवलपक्षविहङ्गमलाञ्छिते, जय सरस्वति ! पूरितवाञ्छिते ॥ ५ ॥
भवदनुग्रहलेशतरङ्गिता-स्त्वदुचितं प्रवदन्ति विपश्चितः ।
नृपसभासु यतः कमलावलात्, कुचकलाललनानि वितन्वते ॥ ६ ॥
गतधना अपि हि त्वदनुग्रहात्, कलितकोमलवाक्यसुधोर्म्मयः ।
चकितबालकुरङ्गविलोचना, जनमनांसि हरन्तितरां नराः ॥ ७ ॥

करसरोरुहखेलनचञ्चला, तव विभाति वरा जपमालिका ।
श्रुतपयोनिधिमध्यविकस्वरो-ज्ज्वलतरङ्गकलाग्रहसाग्रहा ॥ ८ ॥
द्विरद-केसरि-मारि-भुजङ्गमा-ऽसहनतस्कर-राज-रुजां भयम् ।
तव गुणावलिगानतरङ्गिणां, न भविनां भवति श्रुतदेवते ॥ ९ ॥

(स्रग्धरावृत्तम् ।)

ॐ ह्रीँ क्लीं ब्लूँ ततः श्रीँतदनु हसकल ह्रीमथो ऐँ नमोऽन्ते,
लक्षं साक्षाज्जपेद् यः किल शुभविधिना सत्तपा ब्रह्मचारी ।
निर्यान्तीं चन्द्रबिम्बात् कलयति मनसा त्वां जगच्चन्द्रिकाभां
सोऽत्यर्थं वह्निकुण्डे विहितघृतहुतिः स्याद्दशांशेन विद्वान् ॥ १० ॥

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ।)

रे रे लक्षण-काव्य-नाटक-कथा-चम्पूसमालोकने,
क्वायासं वितनोषि बालिश ! मुधा किं नम्रवक्त्राम्बुजः ।
भक्त्याऽऽराधय मन्त्रराजमहसा येनाऽनिशं भारतीं,
येन त्वं कवितावितानसविताऽद्वैतः प्रबुद्धायसे ॥ ११ ॥
चञ्चच्चन्द्रमुखी प्रसिद्धमहिमा स्वच्छन्दराज्यप्रदा-
ऽनायासेन सुरासुरेश्वरगणैरभ्यर्चिता भावतः ।
देवी संस्तुतवैभवा मलयजा पापारगाङ्गद्युतिः,
सा मां पातु सरस्वती भगवती त्रैलोक्यसंजीवनी ॥ १२ ॥

(द्रुतविलम्बितं वृत्तम् ।)

स्तवनमेतदनेकगुणान्वितं, पठति यो भविकः प्रमुदा प्रगे ।
स सहसा मधुरैर्वचनामृतै-र्नृपगणानपि रञ्जयति स्फुटम् ॥ १३ ॥

॥ इत्यनुभूतसरस्वतीस्तवनम् ॥

द्वितीयास्तुतिः ।

मन शुद्ध वंदो भावे भवियण श्रीसीमंधर रायाजी, पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचन वरणी कायाजी । श्रेयांस नरपति सत्यकि नन्दन वृषभलंछन सुखदायाजी, विजय भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हुआ होस्ये जेह अनन्ताजी, संप्रतिकाले पंचविदेहे वरते वीस विख्याताजी । अतिशय-वंत अनन्त गुणाकर जगबंधव जगत्राताजी, ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिव सुख शाताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी, मोह मिथ्यात्व तिमिर भरनाशन अभिनव सूर समाणीजी । भवोदधि तरणी मोक्ष नीसरणी नयनिक्षेप सोहाणीजी, ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भवि प्राणीजी ॥ ३ ॥ शासन-देवी सुरनर सेवी श्रीपंचांगुली माईजी, विघन विडारिणी संपत्ति कारिणी सेवक जन सुखदाईजी । त्रिभुवनमोहिनी अंतरयामिनी जग जस ज्योति सवाईजी, सांनिध्यकारी संघने होज्यो श्रीजिनहर्ष सुहाईजी ॥ ४ ॥ इति द्वितीयास्तुतिः ॥

पंचमीस्तुतिः ।

पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्षमं, पंचानुत्तरसीमदिव्यपदवी-वश्याय मन्त्रोपमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारणं,

श्रीपंचाननलञ्छनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादाहराः, पंचाणुव्रतपंचसुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः । कृत्वा पंचहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संयमपंचमीव्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥ २ ॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधीशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचार-सारकलितं पंचेषु-पंचत्वदम् ॥ दीपाभं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशीरोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियं, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् । प्रह्वे पंचजगन्मनोमतिकृतौ स्वारलपश्चालिका, पंचम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

अष्टमीस्तुतिः ।

चउवीशे जिनवर प्रणमुं हूं नितमेव, आठम दिन करिये चंद्राप्रभुजीनी सेव । मूरति मन मोहन जाणे पूनमचंद, दीठे दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजे प्रभुजीना पाय, इन्द्राणी अपच्छरा कर जोड़ी गुण गाय । नंदीसर द्वीपे मिल सुरवरनी कोड, अट्ठाई महोच्छव करतां होडाहोड ॥ २ ॥ शत्रुञ्जय शिखरे जाणी लाभ अपार, चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार । भवियणने तारे देई धरम उपदेश, दूध साकरथी पण वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसह पडिक्कमणुं करिये व्रत पच्चक्खाण, आठम तप करतां आठ करमनी हाण । आठ मंगल थावे दिन दिन कोड कल्याण, जिनसुखसूरि कहे शासनदेवी सुजाण ॥ ४ ॥ इति अष्टमीस्तुतिः ॥

मौनैकादशीस्तुतिः ॥

अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्यागमनगमनैर्भूमिवलयं सदा स्वर्गत्येवा-हमहमिकया यत्र सलयं । जिनानामप्यापुः क्षण-मतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरा-स्मीयसमये, फलं यत्कर्त्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये । अनिष्टा-रिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिन-चंद्रप्रमुदिता-स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः । तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति ॥

पार्श्वजिनस्तुतिः ॥

द्रेंद्रेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रस कि धर धप धोरवं ॥ दोंदोंकि दोंदों, दाग्दिदि दाग्दिदिकि, द्रमकि द्रणरण, द्रेणवं ॥ झझिझेंकि झेंझें, झणणरणरण, निजकि निजजन रंजनं ॥ सुरशैलशिखरे, भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थेंगिनि, किटति गिगूडदां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण, रणकि णेंणें, गुणण, गुणगण, गौरवं ॥ झझिझेंकि झेंझें, झणणरणरण, निजकी निजजन-सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकल मीश, महेजिनाः ॥२॥ टकिटेंकि टेंटें, ठहिं ठहिंक, ठहिंपट्टा, ताड्यते ॥ तल्लोंकि लोंलों, त्रेंपि

त्रेंपिनि, डेंपिडेंपिनि, वाद्यते ॥ उं उं कि उं उं, थुंगि थुंगिनि, धोंगि-धोंगिनि, कलरवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर मुच्छवे ॥ ३ ॥ पुंदांकिपुंदां पुपुद्दि पुंदां पुपुद्दि दोंदों अंबरे ॥ चाचपट चचपट, रणकि णेंणें, डणण डेंडें डंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, ससस सस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे कुशलमुनिशं, दिशतु शासन देवता ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृतापार्श्वजिनस्तुतिः ॥

आयंबिल की स्तुति ॥

निरुपम सुखदायक जगनतक लायक शिव ग ति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रसधामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगे जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंताजी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी ते सघला जिननायक नमियें, जिण ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशे जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसेजी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारोजी ॥ ३ ॥ विमल कमलदल लोयण सुंदर, श्री चक्केसरि देवी जी ॥ नवपद सेवक भविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिनभक्ति मुणिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पभणे, श्री जिनलाभ सूरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥ श्रीनवपद ॥

श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुति ।

पास जिनराया वामाजाया । नगरी वणारसी । अश्वसेनराजा जगमें ताजा । सबजन तारसी । वदि चोथदिवसे चैत्रजगीसे । प्रभुजी अवतर्या । दशमी पोष जग संतोष । सब कारज सर्या ॥ १ ॥ प्रथम जिनेसर चारहजारे । पास मल्लि त्रयशत । वीर इकेला पद सतसाथे । वासुपूज्य ग्रहिव्रत । उगणीस जिनपति सहस संघाते संजम आदर्यो । कर्मखपावी केवलपामी । निजकारज कर्यो ॥ २ ॥ जिणपतिवाणी मीठी जाणी । स्वर्गे सुरवेलडी । साकर खंडे गुलनहि मंडे । पीलेरस सेलडी । द्राखवनमांहे अमृत अमराहै । त्रण पशुचावती । ए सहुलाजी जिनगुणगाजी इंद्राणी गावती ॥ ३ ॥ पारसयक्षकारज-दक्ष करे सहुसंघनो । च्यार छे वाहुकच्छवसाहु वरण सामलवनो । देवी पद्मा सुखनीसद्मा दीये सुखसंपदा । जिन-कृपाचंद पभणे सूरींद सेवे सुरनरसुदा ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री नेमिनाथकी स्तुति ॥

सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्ल अक्षोभितं, घनसघन-श्याम-शरीर सुंदर शंखलंच्छनशोभितं ॥ शिवादेविनंदन-त्रिजगवंदन-भविक-कमलजिनेश्वरं, गिरनारगिरिवरशिखरवंदूं नेमिनाथजिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्री आदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर सुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघे सुख करू ॥ २ ॥

इग्यारे अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ च्छेद ग्रंथ पसत्थ अत्था चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिनमत गाइयें एह वृत्ति चूर्णी भाष्य पेंतालीश आगम ध्याइए ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा भवियण सुखकरू, दुख हरे अंबा लुंब सुंदर दुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंडण नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघसहुने सदां मंगल करो अंबा देविये ॥ ४ ॥ इति ॥

श्रीपजुषणपर्वस्तुति ॥

वीरजिनेसरजगअलवेसर-राजग्रही समोसरियाजी, पर्वपजुषणइणपरि-भाखे चउविहसंघ परिवरियाजी, आषाढचोमासाथी पचाशदिननी संख्या जाणोजी । संवच्छरीपडिकमणो करिने आतम निजघर आणोजी ॥१॥ दोयराता - दोयधोला - जिनपति । दोयकाला दोयनीलाजी, लांछनवरण-प्रमाणसुसोभित सोले जिनवरपीलाजी । सतरे भेदी पूजा करिने चैत्यपर-वाडी करीजे जी । परवपजुषण पुरवपुन्ये पाम्या लाभजाणीजेजी ॥२॥ कल्पसूत्र निजघरे पधरावी रात्रिजागो तिहां कीजेजी । वरघोडो सजि संघ-मलिने सद्गुरुने आणी दीजेजी । नव इग्यारे तेरे वायण सुणिने दुर-गतिवारोजी । पूजाप्रभावना सद्गुरुभक्ति करिने जन्मसुधारोजी ॥ ३ ॥ साहमीवच्छलकरिये भावे वारंवार उजमंताजी । केइ शीयलतपसंयमपाले भाव अधिकउलसंता जी । आठदिवस पजुषणसेवो जिमसेवे सुरइंद्राजी । सुयदेवीसुपसाये भाखे जिनकृपाचंद्रसूरींद्राजी ॥ ४ ॥ इति ॥

दीपमालिकास्तुतिः ॥

पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रसुहस्तपाल-विपुलश्रीशुल्कशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥ १ ॥ यद्गर्भा-गमनोद्भवव्रतवरज्ञानाक्षरासिक्षणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे मह-स्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघाया-नघ चेतसे विदधतां श्रेयांस्य-नेनांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पूर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध-स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयां चक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां भूयाद्भावुक-कारकप्रवचनं चेतश्चमत्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिपतीर्थभावनपरा सिद्धायिका देवता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिनचंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनोः, या चक्रेऽवमकष्टहस्ति-निधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

श्रीमहावीरस्वामिकी स्तुति ।

बालापणें डावो पाय चांप्यो, जाणे सहु थर हर मेरु कांप्यो । इसु महावीरतणुं चरित्र, हुं सांभळी जन्म करुं पवित्र ॥ १ ॥ जेणे हण्या हेले कर्मअठे, तीखे कुहाडे जिम खीर कठे । मिली करे चौसठि इंद्र सेवा, ते देव चौवीसे मे नमेवा ॥ २ ॥ मीठो जिसो खीर समुद्र पाणी, मीठी जिसी वीर जिनेंद्रवाणी । जे आदरे मूके मान मेलि, तिणांतणी वाधे पुण्यवेलि ॥ ३ ॥ जे पंथी या तीरथ पंथ ध्यावे ते

उत्तरी संकट पार पावे । सिद्धायिका जे मनमांहि आणे, तिहांतणा चिंत्याकाज चढे प्रमाणे ॥ ४ ॥ इति ॥

दर्शनाद् दुरितध्वंसी, वन्दनाद् वांछितप्रदः। पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ॥ १ ॥ सकलकुशलवल्ली-पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानम् । भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥

श्रीआदिनाथजी की स्तुति ।

भरहेसरकारे अ देवहरे अट्ठावय पव्वय सोह करे ॥ १ ॥ निअवन्नपमाण सरीर धरे चउवीसे वंदु तित्थयरे ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणधरा वहू पंककुवंक कलंकहरा ॥ ३ ॥ अरिहंत सभागम देवगणा विगणंतु अनंत दुहंसगुणा ॥ ४ ॥ इति श्री आदिनाथजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

पर्युषणकी स्तुति ।

वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजुसण दाख्या धर्मनी सीर । आषाढ चौमासे हुंती दिन पच्चास, पडिक्कमणुं संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीसे जिणवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भावे भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजुसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनाये वंचाय, श्री कल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इन भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मी वच्छल करिये वारंवार, केई भावना भावे केई तपसी शिलधार । अठ दीह पजुसण एम सेवंत आणंद, सुरदेवी सानिध्य करे जिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इति ॥

नवपद चैत्यवंदन ।

श्री अरिहंत उदार कान्ति, अति सुंदर रूप । सेवो सिद्ध अनन्त ान्त, आतम गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उवज्झाय साधु, शमता-स धाम । जिनभाषित सिद्धान्त शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ ोधवीज गुण संपदाये, नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्द पद, : नवपद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनंदकंद, जगमांहि प्रसिद्धो । चेन्तामणि सम जास, जोग वहु पुण्ये लद्धो ॥ ४ ॥ तिहुअण सार तपार एह, महिमा मन धारो । परिहर पर-जंजाल जाल, नित एह ंभारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पद सेवतां, सहजानंद स्वरूप । अमृतमय ल्याणनिधि, प्रकटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इति ॥

श्रीवर्द्धमानस्तुतिः ।

(स्रग्धरावृत्तम्)

पापा धाधा निधाधा, धपमपविगगा, सासगा सारधापा ।
सासागागारधापा, निगमसरिधपा, पापमासारधापा ॥
इत्थं षड्जातिरम्यं, करणलघुयुतं, सत्कलाभिः समेतम् ।
सङ्गीतं यस्य देवो वहिनमति शुभं, पात्वसौ पार्श्वनाथः ॥ १ ॥
पोंदो पोंदां पुसादां, (डिग) डिगडिगडिगमां, टांथुमा टांथुमाटं ।
ड्रग्मां ड्रग्मां ड्रगामां(ड्रग्मां), ड्रलिड्रलिड्रलिमा, भांभुभा भांभुभाभं ॥
छल्मां छल्मां छिलामां (छल्मां) टिक (रि) टिकरिटिमां (भुवां)
भूर्भुवामभ्रभुर्ये ।
पामां तोयवाद्यं, विबुधति विबुधां पान्तु वस्तीर्थपास्ते ॥ २ ॥

कोटंटं रावणं तं, त्रिभुवनकरटं, दर्पणं टं रणंटं ।
डाविड़ूं डूंभूड़ भ्रं (डं) हडहडहडहडकं अंगुलं त्रिं(गु)त्रिगृणे ॥
त्रंझं पाझं (प्रा) झझं भ्रा, त्रिपुमित्रिपुमि पुद्रिगूमिप्पुपुद्रनाथे ।
रेमेस्तूर्यसतोपे, जनपतिवचसा, पातु पूज्योपचारः ॥ ३ ॥
त्राटाभिः खाटयन्ती, तुटितिकटिपटं, तुटिति कटिपटं, किंटकं लोटयन्ती ।
कोटाधीकोटयन्ती, कपटमटिपटं, कापटं सारयन्ती ॥
उत्पालेर्न्यालसाले, स्फटिकजलजटा, तूटकं जोटयन्ती ।
वेरोट्या लालयन्ती, घनमघनवसा, श्रेयसे वर्द्धमानः ॥ ४ ॥ इति ॥

श्रीसिद्धगिरिस्तवन ।

श्री विमलाचल शिर तिलो । आदीसर अरिहंत । जुगला धरम निवारणो । भयभंजन भगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुझ मन उलट अतिघणो (रे)। सो दिन सफल गिणेस । स्वामी श्रीरिसहेसरू । जब नयणे निरखेस ॥ २ ॥ श्री० ॥ जंगम तीरथ विहरता । साधुतणे परिवार । आदिजिणंद समोसर्या । पूरब निनाणुं वार ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अचिरा विजया नंदनो । जगबंधव जगतात । इण गिरि चउमासे रह्या । थिवर कहे ए वात ॥ ४ ॥ श्री० ॥ पामे शिवसुख सासता । गणधर श्री पुंडरीक । पुंडरगिरि तिण कारणे । भगति करो निरभीक ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नमि ने विनमि सहोदरु । विद्याधर बलवंत । सेत्रुंज सिखर समोसर्या । जे गिरुवा गुणवंत ॥ ६ ॥ श्री० ॥ थावच्चा मुनिवर सुकस्नु । सहस २ परिवार । पंथग वयणे जागियो । सो सेलग अणगार ॥ ७ ॥ श्री० ॥ पांडव पांच महाबली । मुगती जाइय निरवाण । ते सीधा सिद्धाचले । सुर नर करेरे बखाण ॥ ८ ॥

॥ श्री० ॥ इम सीधा इण डुंगरै । मुनिवर कोडाकोडी । पाज चढंता सांभरे । ते वंदुं वे कर जोडी ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जे वाघण प्रतिवूझवी । ते दरवाजे जोय । गो मुख यक्ष कवड मिली । सानिधकारी होय ॥ १० ॥ श्री० ॥ जे विधिशुं यात्रा करै । सुर नर सेवक तास । राज समुद्र गुण गावतां । अविचल लीलविलास ॥ ११ ॥ श्री० ॥ इति ॥

श्रीऋषभजिनेश्वरस्तवनम् ।

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब । विनतडी अवधारो रे ॥ जगना तारू । मुझ तारो जी कृपानिधि स्वामी ॥ जग जसवाद पगट छै ताहरो । अविचल सुख दातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ नेज गुण भोक्ता पर गुण लोसा । आतम सगति जगाया रे । ज० ॥ अविनासी अविचल अविकारी । शिववासी जिनराया रे । ज० ॥ २ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी । हुं तुज रणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुम रींझावण हे तै ततखिण । नाटक वेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री । रु साधारण पामी रे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री । प वर्यां दुःख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि लि नरक तणी गति । पंचेंद्रिपणो धार्यो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे डकमांहि भमतो । अव तो हुं पिण हार्यो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ वनाटक नित प्रति करतो नव नव । हुं तुझ आगलि नाच्यो ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो । निरखी तुझने जाच्यो ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या । तो मुझ छित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भापो । वलि

नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरी हुं सेवा सारुं । तुं दुःखडा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता से ती सुंब भलेरो । वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥ तुझ सरिषा साहिब पिण म्हारे । जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अवली । दोस न कोई तुमारो रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया करी दीजे । सुध समकित सहिनाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो । तेहीज गुण मणिखाणी रे ॥ ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै । ज्येष्ठ सुदी सोमवारे रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपदा दिन भेट्या । वीकानेर मझारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति ॥

पर्युषणस्तवनम् ।

पर्व पजुसण पुन्ये पामीआरे । आराधो सुभ भावे सुजाण रे ॥ जिन शासनमां पर्व वखाणीए रे । लोकोत्तर गुणखाण रे ॥ पर्व० ॥ १ ॥ अट्ठाइ महोच्छव करे नंदीसरे रे । सहु इंद्रादिक मनुहाररे ॥ तिम भविभाव भलेथी इंहां करो रे । जिनपूजन सुखकाररे ॥ पर्व० ॥ २ ॥ पहिले दिन उपवास भलीपरे रे । सांभलो आर्द्रकुमार चरित्र रे ॥ रात्रीजगो करो पुस्तक तणो रे । ज्ञान भक्ति करो पवित्र रे ॥ पर्व० ॥ ३ ॥ दुजे दिन सहु संघ मिले भलो रे । वाजित्र हय गय रथ परिवाररे ॥ पुस्तक उच्छव करी गुरु पासमां रे ॥ आणी आपो सुखकाररे ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ त्रीजे दिन सहु पुस्तक पूजीने रे । सांभलो कल्पसूत्र जिन वाणरे ॥ आरंभ योग निवारो भविजना रे । पालो जिनवरकेरी आणरे ॥ पर्व० ॥ ५ ॥

चोथे दिन चतुर चित्तमां धरो रे । दिन भक्ति विविध प्रकाररे ॥ पूजा प्रभावना करी शासन तणी रे । शोभा वधारो सुविचाररे ॥ पर्व० ॥ ६ ॥ पांचमे दिवस महोच्छव जन्मनो रे । वरते धवल मंगल सुप्रसिद्धरे । पालणो वीर प्रभुनो गायने रे ॥ जिनवर भक्ति करी जस लीधरे ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ वीर चरित्र सुणो छठे दिन रे । मध्याने पारस नेमी वखाणरे ॥ आंतरा काल सांभली भावसुंरे । पच्छानुपूर्वि करी सुजाण रे ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ दिन सातमे आदि चरित्र वखाणतारे । निसुणो थवीरतणो चरित्ररे ॥ आठमे दिन समाचारी साधुतणी रे । सांभळो भवि कल्पसूत्ररे ॥ पर्व० ॥ ९ ॥ चैत्य प्रवाडी संघ मीली करो रे । बुठो सुकृतकेरो मेहरे ॥ संवत्सरी पडिक्कमणामें खमावीएरे । छठ अठम करो गुण गेहरे ॥ पर्व० ॥१०॥ अमारी पलावी जीव यत्ना भणी रे । शासन-उन्नति करो सुविनीतरे । इणपरे पर्व आराधो भविजनारे । कृपाचंद शासननी ए रीतरे ॥ पर्व० ॥ ११ ॥ इति ॥

अष्टापदगिरिस्तवनम् ।

मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अट्ठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावडशाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥२॥ भरते भरायां भलां देहरां जी, सो भायांरी थूंभ जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने ऊभ जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चल्या जी, वली भगीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी,

रावण नाटक रंग जी ॥ म० ॥ ४ ॥ देवे न दीवी मुजने पांखडी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

शंखेश्वरस्तवनम् ।

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह विरुद छे राज तमारुं किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नहीं छे, परतक्ष दरिसण दीजे ॥ धूंवाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजे ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसरमंडण साहिब, विनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुझने, भवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ।

प्राण पियारा जी हो पासजी, किम मेलुं किरतार ॥ जिनेसर साहिब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण भरत मझार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आडो अंतर जीहो अति घणो, वेगु न मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लाडला, कागल धुं किण हाथ ॥ जि०॥ प्राण० ॥ २ ॥ रमता थें मे जीहो एकठा, दिनमें दस दस वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता घणी मनुहार ॥

जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ अवतो मिलणो जीहो अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ तो पण क्षण क्षण जीहो सांभरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥ जि० ॥ चंद मुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

नवपदस्तवन।

श्री नवपद आराधो, मनवाँछित कारज साधो रे; भवियाँ श्री नवपद आराधो ॥ ए टेर ॥ पद पहिले अरिहंत ध्यावो, जिम अरिहंत पदवी पावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ पद दुजे सिद्ध मनावो, जिम सिद्ध सरूपी होई जावो हो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ सूरि त्रीजे गुणवंता, जगनायक जग जयवंतारे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ चोथे पद उवझाया, जिन मारग आण बताया रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ साधु सकल गुणधारी, पद पंचमे जग हितकारी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ दरशण पद छट्ठे वन्दो, जेम कीरती होय चिर नन्दो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ज्ञान पद सातमे दाख्यो, चारित्र पद आठमे भाख्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ श्रीपाल ने मयणा लीधो, नव में भव कारज सिधो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ नवपद महिमा जाणी, जिम चंद्र हिये मन आणी रे ॥ भ० श्री० ॥ इति ॥

आदिजिनस्तवन।

(राग तोड़ी)

रिषभकी मेरे मन भक्ति वसी री। मालती मेघ मृगंक मनोहर, मधुकर मोर चकोर जिसी री ॥ रि० ॥ १ ॥ प्रथम नरेश्वर प्रथम

भिक्षाचर, प्रथम केवल धर प्रथम रिसो री । प्रथम तीर्थंकर प्रथम भुवन गुरु, नाभि राय कुल कमल शशि री ॥ रि० ॥ २ ॥ अंश उपर अलिकावली ऊपर कंचन कसवट रेख कसी री । श्री विमलाचल मंडण स्वामी समय सुन्दर प्रणमत उलसी री ॥ रि० ॥ ३ ॥ इति ॥

श्रीनेमनाथजी का स्तवन ।

(राग–अजीतजिनंद सुं प्रीतड़ी)

परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश; पूरण दृष्टि निहाली ये, चित्त धरीये हो अमची अरदास ॥ प० ॥ १ ॥ सर्व देश-घाति सहु, अघाती हो करी घात दयाल, वास कियो शिव मंदिरे, मोहे विसरी हो भमतो जगजाल ॥ प० ॥ २ ॥ जगतारक पदवी लही, सहि-तार्या हो अपराधी अपार; ताते कहो मोहे तारतां, किम कीनी हो इन अवसरे वार ॥ प० ॥ ३ ॥ मोह माहा मद छाकथी, हुं छकियो हो नांही सुध लगार; उचित सही इन अवसरे, सेवक नी हो करवी संभाल ॥ प० ॥ ४ ॥ मोह गया जो तारसों, तिनवेला हो कहा तुम उपकार, सुख वेला सज्जन घना, दुख वेला हो विरला संसार ॥ प० ॥ ५ ॥ पण तुम दर्शन योग थी; थयो हृदयें तो अनुभव प्रकास, अनुभव अभ्यासी करे, दुखदायी हो सहु कर्म विनाश ॥ प० ॥ ६ ॥ मेंक कलंक निवारी ने, निज ऊपे हो रमे रमता राम, लहत अपूरव भावथी, इन रीते हो तुम पद विश्राम ॥ प० ॥ ७ ॥ त्रिकरण योगे विनवुं सुखदायी हो शिवादेवीनंद, चिदानन्द मन में सदा, तुम आपो हो प्रभुनाणदिनंद ॥ प० ॥ ८ ॥ इति ॥

श्री देवजसा जिनस्तवन ।

(महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं—ए देशी)

देवजसा, दरिसण करो विघटे मोह विभाव लाल रे । प्रकटे शुद्ध स्वभावता, आनन्द लहरी दाव लाल रे ॥ १ ॥ दे० ॥ स्वामि वसो पुष्कर वरे, जंबू भरते द्वास लाल रे क्षेत्र विभेद घणो पड्यो, किम पहुँचे उल्लास लाल रे ॥ २ ॥ दे० ॥ होवत जो तनु पाखंडी, आवत नाथ हजूर लाल रे । जो होती चित आखंडी, देखत नित्य प्रभु नूर लाल रे ॥ ३ ॥ दे० ॥ शासन भक्त जे सुरवरा, विनवुं शीस नमाय लाल रे ॥ कृपा करो मुझ ऊपरे तो जिनवंदन थाय लाल रे ॥ ४ ॥ दे० ॥ पूछूं पूर्व विराधना, शी कीधी इणें जीव लाल रे । अविरति मोह टले नहीं, दीठे आगम दीव लाल रे ॥ ५ ॥ दे० ॥ आतम शुद्ध स्वभावने, बोधन शोधन काज लारे ॥ रत्नत्रयी प्राप्ति तणो, हेतु कहो महाराज लारे ॥ ६ ॥ दे० ॥ तुज सारिखो साहिब मिल्यो, भांजे भवभ्रम टेव लाल रे ॥ पुष्टा लंबन प्रभु लहि कोण करे परसेव लाल रे ॥ ७ ॥ दे० ॥ दीलदयाल कृपालुओ, नाथ भविक आधार लाल रे ॥ देवचंद्र जिन सेवना, परमामृत सुखकार लाल रे ॥ ८ ॥ दे० ॥ इति ॥

श्रीवज्रधरजिनस्तवन ।

(ननी यमुना के तीर—ए देशी)

विहरमान भगवान सुणो मुझ वीनति । जगतारक जगनाथ, अछो त्रिभुवनपति । भासक लोकालोक, तिणे जाणो छती । तो पण वीतक वात, कहूं छुं तुझ प्रति ॥ १ ॥ हूं सरूप निज छोड़ि, रम्यो

बहुजन सम्मत जेह । मूढ हठी जन आदर्यो रे सुगुरु कहावे तेह रे ॥ ४ ॥ चं० ॥ आणा साध्य विना क्रिया रे, लोके मान्यो रे धर्म । दंसण नाण चरित्तनो रे, मूल न जाण्यो मर्म रे ॥ ५ ॥ चं० ॥ गच्छ कदाग्रह साचवे रे, माने धर्म प्रसिद्ध । आतमगुण अकषायता रे, धर्म न जाणे शुद्ध रे ॥ ६ ॥ चं० ॥ तत्त्वरसिक जन थोडला रे, बहुलो जन संवाद । जानो छो जिनराजजी रे, सघलो एव विवाद रे ॥ ७ ॥ चं० ॥ नाथ चरण वंदनतणो रे, मनमां घणो रे उमंग । पुण्य विना किम पामिये रे, प्रभुसेवानो रंग रे ॥ ८ ॥ चं० ॥ जगतारक प्रभु वंदीए रे महाविदेह मझार । वस्तुधर्म स्याद्वादता रे, सुनि करिये निर्धाररे ॥ ९ ॥ चं० ॥ तुझ करुणा सहु ऊपरे रे, सरखी छे महाराय । पण अविराधक जीव ने रे, कारण सफलुं थाय रे ॥ १० ॥ चं० ॥ एहवा पण भवि जीवने रे, देव भक्ति आधार । प्रभुसमरणथी पामीये रे, देवचंद्र पद सार रे ॥ ११ चं० ॥ इति ॥

श्रीबाहुजिनस्तवन ।

(संभवजिन अवधारिये—ए-देशी०)

बाहुजिणंद दयामयी, वर्तमान भगवान ॥ प्रभुजी ॥ महाविदेहे विचरता, केवलज्ञाननिधान ॥ प्र० बा० ॥ १ ॥ द्रव्य थकी छकायने न हणे जेह लगार ॥ प्र० ॥ भावदया परिणामनो, एहीज छे व्यवहार ॥ प्र० बा० ॥ २ ॥ रूप अनुत्तर देवथी अनंत गुणुं अभिराम ॥प्र०॥ जोतां पण जग जंतु ने, न वधे विशय विकार ॥ प्र० बा० ॥ ३ ॥ कर्मउदय जिनराजनो, भविजन धर्मसहाय ॥ प्र० ॥ नामादिक संभारता, मिथ्यादोष विलाय ॥ प्र० बा० ॥ ४ ॥ आतमगुण अविरा-

धना, भावदया भंडार ॥ प्र० ॥ क्षायिक गुण पर्यायमें, नवि पर धर्मप्रचार ॥ प्र० बा० ॥ ५ ॥ गुण गुण परिणति परिणमे, बाधक भाव विहीन ॥ प्र० ॥ द्रव्य असंगी अन्य नो, शुद्ध अहिंसक पीन ॥ प्र० बा० ॥ ६ ॥ क्षेत्रें सर्व प्रदेश में नहीं परभाव प्रसंग ॥ प्र० ॥ अतनुं अयोगी भावथी अवगाहना असंग ॥ प्र० बा० ॥ ७ ॥ उत्पाद व्यय ध्रुव पणे, सहेजे परिणति थाय ॥ प्र० ॥ छेदन योजनता नहीं, वस्तु स्वभाव समाय ॥ प्र० बा० ॥ ८ ॥ गुण पर्याय अनंतता, कारक परिणति तेम ॥ प्र० ॥ निज निज परिणति परिणमे, भाव अहिंसक एम ॥ प्र० बा० ॥ ९ ॥ एम अहिंसकता मयी, दीठो तूं जिनराज ॥ प्र० ॥ रक्षक निज पर जीवनो, तारण तरण जिहाज ॥ प्र० बा० ॥ १० ॥ परमातम परमेसरु, भावदया दातार ॥ प्र० ॥ सेवो ध्यावो एहने देवचन्द सुखकार ॥ प्र० बा० ॥ ११ ॥ इति ॥

श्रीसुबाहुजिनस्तवन ॥

(ढाल—म्हारो वालो ब्रह्मचारी—ए-देशी)

श्री सुबाहुजिन अन्तरयामी, मुझ मननो विसरामी रे ॥ प्रभु अन्तरयामी ॥ आतम धर्म तणो आरामी, परपरिणति निःकामी रे प्र० ॥ १ ॥ केवल ज्ञान अनंत प्रकाशी, भविजन कमल विकाशी रे ॥ प्र० ॥ चिदानन्दघन तत्त्वविलासी, शुद्ध स्वरूप निवासी रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ यद्यपि हुं मोहादिके छलियो, परपरिणति शुं भलियो रे ॥ प्र० ॥ हिवे तुझ सम मुज साहिब मलियो, तिणें सवि भव भय टलियो रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ध्येय स्वभावें प्रभु अवधारी दुर्ध्याता परिणति वारी रे ॥ प्र० ॥ भासन वीर्य एकताकारी, ध्यान सहज संभारी रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥

ध्याता-ध्येय समाधि अभेदे, परपरिणति विच्छेदे रे, ॥ प्र० ॥ ध्याता साधक भाव उच्छेदे, ध्येय सिद्धता वेदे रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ द्रव्यक्रिया साधन विधि याची, जे जिन आगम बांची रे ॥ प्र० ॥ परिणति वृत्ति विभावें राची, तिणे नवि थाये सांची रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ पण नवि भय जिनराज पसायें, तत्व रसायण पाये रे ॥ प्र० ॥ प्रभु भगते निज चित्त बसाये, भाव रोग मिट जाय रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ जिनवर वचन अमृत अनुसरिये, तत्वरमण आदरिये रे ॥ प्र० ॥ द्रव्यभाव आश्रव परिहरिये, देवचन्द्रपद वरिये रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति ॥

पार्श्वजिनस्तवन ।

आयो सही अव जाऊँ कहाँशर, शरणागतको शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोही समान मिल्यो नहीं कोइ, ढूंढ फिर्यो धरती सब हेरी ॥ आ० ॥ १ ॥ होय दयाल महा प्रभुजी अब, आन भई तुमसे भेट मेरी ॥ आ० ॥ २ ॥ दास कल्याणा करे विनती सुण, पार्श्वनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ॥ ३ ॥

श्रीअजितजिनस्तवन ।

(राग-आसाऊरीः मारुं मन मोह्युंरे श्रीविमलाचलें रे-ए देशी)

पंथडो तिहालं रे बीजा जिन तणो रे ॥ अजित अजित गुणधाम ॥ जे ते जीत्यारे तेणे हुं जीतिओ रे ॥ पुरुष किस्युं मुझनाम ॥ पंथ ॥१॥ चर्मनयणे करी मारग जोवतां रे ॥ भूल्यो सयल संसार ॥ जेणे नयणे करी मारग जोइये रे ॥ नयण ते दीव्यविचार ॥ पंथ ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे ॥ अंधो-अंध पुलाय ॥ वस्तु विचारि रे

जो आगमे करी ॥ चरणधरण नहीं ठाम ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे वादपरंपरा रे ॥ पार न पहोचे कोय ॥ अभिमतें वस्तुरे वस्तुगतें कहे रे ॥ ते विरलो जगजोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दीव्य-नयणतणो रे ॥ विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे ॥ वासित वोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काललब्धि लही पंथ निहालसु रे ॥ ए आस्या अविलंब ॥ ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे ॥ आनंदघन मत अंव ॥ पंथ० ॥ ६ ॥

श्रीचंद्रप्रभुस्तवन ।

देखण देरे सखी मुने देखण दे ॥ चंद प्रभु मुखचंद ॥ स० ॥
उपशमरसनो कंद ॥ स० ॥ गतकलिमलदुःख दद ॥ स० ॥ १ ॥
सुहमनिगोदे न देखिओ ॥ स० ॥ वादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥
पुढवी आउ न लेखिओ ॥ स० ॥ तेनु वाउ न लेस ॥ स० ॥ २ ॥
वनस्पति अति घण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीं दीदार ॥ स० ॥
बि-ति-चउरिंदी जल लिहा ॥ स० ॥ गतिसन्नी पणधार ॥ स० ॥ ३ ॥
सुर तिरि निरय निवासमां ॥ स० ॥ मनुज आनारज साथ ॥ स० ॥
अपजत्ता प्रति भासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढ़ीयो हाथ ॥ स० ॥ ४ ॥
एम अनेक थल जाणियें ॥ स० ॥ दरिसण विणु जिनदेव ॥ स० ॥
आगम थी मत जाणियें ॥ स० ॥ कीजे निरमल सेव ॥ स० ॥ ५ ॥
निरमल साधु भंगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक होय ॥ स० ॥
किरिया अवंचक तिम सही ॥ स० ॥ फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥
प्रेरक अवसर जिनवरू ॥ स० ॥ मोहनी क्षय जाय ॥ स० ॥
कामित पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदघन प्रभु पाय ॥ स० ॥ ७ ॥

प्रथम आदि जिनस्तवन।

क्यों न भये हम मोर, विमल गिरि क्यों न भये हम मोर। क्यों न भये हम शीतल पानी, सींचत तरुवर छोर। अहनिशि जिनजीके अंग पखालत, तोडत कर्म कठोर ॥ १ ॥ क्यों न भये हम बावन चंदन, और केसरकी छोर। क्यों न भये हम मोगरा मालती, रहते जिनजीके मौर ॥ २ ॥ क्यों न भये हम मृदंग झालरिया, करत मधुर ध्वनि घोर। जिनजीके आगल नृत्य सुहावत, पावत शिवपुर ठौर ॥ ३ ॥ जग मंडल साचो ए साचो जिनजी, और न देखा राचत मोर। समय सुन्दर कहे ये प्रभु, सेवो जन्म-मरण जरा नहीं और ॥ ४ ॥ इति ॥

द्वितीय आदि जिनस्तवन।

आज ऋषभ घर आवे, सो देखो माई ॥ आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सब ही के मन भावे ॥ सो० ॥ १ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग वधावे ॥ सो० ॥ २ ॥ केई मुक्ताफल थाल विशाला, केई मणि माणक लावै ॥ सो० ॥ ३ ॥ श्रीश्रेयांसकुमार दानेश्वर, इक्षुरस दान वैरावे ॥ सो० ॥ ४ ॥ उत्तम दान अधिक अमृत-फल साधु कीर्ति गुण गावे ॥ सो० ॥ ५ ॥

महावीरस्वामिस्तवन।

(कडखानी-देशी)

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी जगतमां एटलुं सुजश लीजे ॥ दास अवगुण भर्यो जाणी पोतातणो। दयानिधि दीन पर दया कीजे ॥ १ ॥ ता० ॥ राग द्वेषे भर्यो मोह वैरी नड्यो। लोकनी रीतमां

घणुंए रातो ॥ क्रोध वश घमधम्यो । शुद्धगुण नवि रम्यो । भम्यो भवमाहे हुं विषय मातो ॥ २ ॥ ता० ॥ आदर्यो आचरण लोक उपचारथी । शास्त्र अभ्याश पण काइ कीधो ॥ शुद्ध श्रद्धान वली आत्म अवलंब विनु । तेहवो कार्य तेणे को न सीधो ॥ ३ ॥ ता० ॥ स्वामि दर्शनो समो । निमित्त लही निर्मलो । जो उपादान ए शुचि न थाशे ॥ दोष को वस्तुनो अहवा उद्यम तणो । स्वामि सेवा सही निकट लासे ॥ ४ ॥ ता० ॥ स्वामि गुण ओलखी । स्वामिने जे भजे । दर्शन शुद्धता तेह पामे ॥ ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी । कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ ५ ॥ ता० ॥ जगत वत्सल महावीर । जिनवर सुणी । चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो ॥ तारजो बापजी विरुद निज राखवा दासनी सेवना रखे जोशो ॥ ६ ॥ ता० ॥ विनती मानजो शक्ति ए आपजो ॥ भाव स्याद्वादता शुद्ध भासे ॥ साधि साधक दशा । सिद्धता अनुभवे । देवचंद्र विमल प्रभुता प्रकाशे ॥७॥ ता० ॥ इति ॥

पंचमीका बडा स्तवन ।

प्रणमुं श्रीगुरुपाय निर्मल ज्ञान उपाय पंचमी तप भणुंए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचन्द, केवलज्ञान दिणंद । त्रिगडे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ ज्ञान वडुं संसार, ज्ञान-मुगति-दातार । ज्ञान दीवो कह्यो ए, साचो सद्द्ह्यो ए ॥ ३ ॥ ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश । ज्ञान विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवतीसूत्र प्रमाण । ज्ञानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए ॥ ५ ॥ ज्ञानी श्वासोच्छ्वास, करम करे जे नास । नारकीने सही ए, कोड वरस कही ए ॥ ६ ॥ ज्ञान

तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार । किरिया छ सही ए, पण पाछे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान । सोनाने सूरो ए, शंख दूधे भर्यो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पंचमी अक्षर सार । भगवंत भाखियो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

ढाल २—कालहराकी देशी ।

पंचमी तपविधि सांभलो, जिम पामो भव पारोरे । श्री अरिहंत इम उपदिशे, भवियणने हितकारो रे ॥ पं० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखो रे । इण षट् मासे लीजिये, शुभ दिन सद्गुरु शाखो रे ॥ पं० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरे, गीतारथ गुरु वंदीरे । पोथी पूजो ज्ञाननी, सगति हुवे तो नंदीरे ॥ पं० ॥ ३ ॥ बेकर जोडी भावसुं, गुरुमुख करो उपवासो रे । पंचमी पडिक्कमणो करी, पढो पंडित गुरु पासो रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ जिण दिन पञ्चमी तप करो, तिण दिन आरंभ टालो रे । पञ्चमीस्तवन थुई कहो, ब्रह्म-चारिज पिण पालो रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ पांच मास लघु पञ्चमी, जावजीव उत्कृष्टी रे । पांच वरस पांच मासनी, पञ्चमी करो शुभ दृष्टि रे ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

ढाल तीसरी—उल्लालेकी देशी ।

हवे भवियण रे पंचमी ऊजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो । ए अवसर रे आवंता वलि दोहिलो, पुण्य जोगे रे धन पामतां सोहिलो ॥ (उल्लालो)—सोहिलो वलिय धन पामतां पिण धर्मकाज किहां वली, पंचमी दिन गुरु पास आवी किजीये

काउस्सग्ग रली। त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देई पुस्तक पूजिये, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा कीजिये ॥ १ ॥ (ढाल)— सिद्धांतनी रे पांच परत वीटांगणां, पांच पूठारे मुखमल सूत्र प्रमुख तणां। पांच डोरारे लेखण पांच मजीसणा, वासकूंपारे कांवी वारू वतरणा ॥ (उल्लालो)—वतरणा वारू वलि य कमली पांच झिलमिल अतिभली, स्थापनाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती पडपाटली। पटसूत्र पाटी पंच क़ोथली पंच नवकार-वालियां, इण परे श्रावक करे पञ्चमी ऊजमणुं उजवालियां ॥ २ ॥ (ढाल)—वेलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजिये, घर सारूरे दान वलि तिहां दीजिए। प्रतिमाजीने रे आगल ढोवणुं ढोइए, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइये ॥ (उल्लालो)-जोइये उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मंगल थाल दीवो धूपधाणुं सार ए। घनसार केशर अगर सुखड अंगलूहणो दीसए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिसुं पचवीश ए ॥३॥ (ढाल)-पंचमीतारे साहम्मी सर्व जिमाडियें, रात्रिजोगे रे गीतरसाल गवाडियें। इण करणीरे करतां ज्ञान आराधिये, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ (उल्लालो)-साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहिये निरमलो, सुरलोक ने नरलोकमांहे ज्ञानवंत ते आगलो। अनुक्रमे केवलज्ञान पामी शाश्वता सुख जे लहे, जे करे पंचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे॥ ४ ॥ (कलश)-एम पंचमी तप फल प्ररूपक वर्द्धमान जिणेसरो, मैं थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत अतुल वल अलवेसरो। जयवंत श्रीजिनचंदसूरिज सकलचंद नमंसियो। वाचनाचारिज समयसुन्दर भगतिभाव प्रशंसियो ॥ ५ ॥ इति ॥

पञ्चमीका लघु स्तवन ।

पंचमी तप तुमे करोरे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञानरे । पहिलं ज्ञान ने पीछे किरिया, नहीं कोई ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ १ ॥ नंदीसूत्र में ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे । मति श्रुति अवधि अने मनः-पर्यव, केवलज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २ ॥ मति अट्ठावीस श्रुत चउदे वीश, अवधि छे असंख्या प्रकार रे । दोय भेदे मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेस्युं तेज आकाश रे । केवलज्ञान समो नहीं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥४॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे । समयसुंदर कहे हुं पण पासुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति ॥

पार्श्वजिनस्तवनम् ।

अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोडी पास । सेवा सारे जेहनी, सुर नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहां सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मोमन अधिक सुहाय । पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि छविय देखाय ॥ २ ॥ सोभा० ॥ अ० ॥ भवदुःखभंजन जनमन-रंजन, खंजननयनसुरंग । श्रवण सुणी गुण ताहरा, माहरा विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार । प्रारथियां पहिडे नहिं, साहिबा एह उत्तम आचार ॥४॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु मुखचंद विलोकित हरखित, नाचत नयन चकोर । कमल हसे रवि देखीने, जिम जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ ॥ अ० ॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ।

मेरे मनमें तूं वसे, साहिब शिवसुखनो ही ठाम ॥ ६ ॥ सो० ॥ अ० ॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्री अश्वसेन नरेश । जनमपुरी वणारसी, घन घन काशीनो देश ॥ ७ ॥ सो० ॥ अ० ॥ संवत सतरेशे बावीसें, वदी वैशाख वखाण । आठम दिन भले भावशुं, मारी जात्र चढी परिमाण ॥ ८ ॥ सो० ॥ अ० ॥ सान्निध्यकारी विघ्ननिवारी, परउपगारी पास । श्री जिनचंद जुहारतां, मोरी सफल फली सहु आश ॥ ९ ॥ सो० ॥ अ० ॥ इति ॥

एकादशीका बडा स्तवन ।

समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्री अरिहंत । बारे परषदा, बैठी जूडी, मिगसिर शुदि इग्यारस वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवलज्ञान । अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान । ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणक हुवे तिमहीज । पंचासनी संख्या परगडी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढसौ कल्याणक थाये तेम । कुण तिथि छे ए तिथि जेवडी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनन्त चोवीसी इणपरें गिणो, लाभ अनन्त उपवासा तणो । ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मौनपणे रह्यां श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ । मौनतणी प्रवृत्ति इम पडी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसह लीजिये, चौविहार विधिसुं कीजिये । पण परमाद न कीजे घडी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजे उपवास, जावज्जीव पण अधिक उल्हास । ए तिथि मोक्ष तणी

पावडी ॥ मि० ॥ ९ ॥ उजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यारे इग्यार । करो काउस्सग गुरु पाये पडी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीये वली, पोथी पूजीये मनरली । मुगतिपुरी कीजे ढूकडी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व । व्रत पच्चक्खाण करो आखडी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहु मन गमे । समयसुंदर कहे करो चावडी ॥ मि० ॥ १३ ॥ इति ॥

श्रीवीरजिनविनतिरूप-अमावसका स्तवन ।

वीर सुणो मोरी विनती, कर जोडी हो कहुं मननी वात । बालकनी परे विनवुं, मोरा स्वामी हो तुमे त्रिभुवन तात ॥ वीर० ॥ ॥ १ ॥ तुम दरशणविण हुं भम्यो, भवमांहेहो स्वामी समुद्र मझार । दुःख अनंतां मैं सह्यां, ते कहेतां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपकारी तूं प्रभु, दुःख भाजे हो जग दीनदयाल । तिण तोरे चरणे हुं आवीयो, स्वामी मुजने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उद्धर्यां, ते कीधी हो करुणा मोरा स्वाम । परम भगत हुं ताहरो, तेने तारो हो नहीं ढीलनो काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ शूलपाणी प्रति बूझव्या, जिण कीधा हो तुझने उपसर्ग । डंख दीयो चण्डकोसीये, तें दीधो हो तसु आठमो स्वर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोशाळो गुण हीनडो, जीणे बोल्या हो तोरा अवरणवाद । ते बलतो तें राखियो, शीत लेश्या हो मूकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छे इन्द्रजालीयो, इम कहितां हो आयो तेम तीर । ते गौतमने तें कीयो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, जे जघड्या हो

तुझ साथ जमाल। तेहने पिण पनरे भवे, शिवगामी हो तें कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ ऐमन्तो ऋषि जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल। तीरती मूकी काचली, तें तार्यो हो तेहने ततकाल ॥ वी० ॥९॥ मेघ कुमर ऋषि दुहव्यो, चित्त चूको हो चारित्रथी अपार। एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा-भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ बारे वरस वेश्या घरे, रह्यो मूकी हो संयमनो भार। नंदिषेण पिण उद्धर्यो, सुर पदवी हो दीधी अतिसार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो वसियो वरस चौवीस। ते पण आर्द्रकुमारने, तें तार्यो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणिक राणी चेलणा, रूप देखी हो चित्त चूका जेह। समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ व्रत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसह हो नहीं आदर दीख। ते पण श्रेणिक रायने, तें कीधो हो स्वामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उद्धर्या, कहुं तोरा हो केता अवदात। सार करो हवे माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नवि पले, नहीं तो हुवो हो मुझ दरसण नाण। पिण आधार छे एटलो, एक तोरो हो धरूं निश्चल ध्यान ॥ वी० ॥ १६ ॥ मेह महीतल वरसतो, नवि जोवे हो सम विषमी ठाम। गिरुआ सहिजे गुणकरे, स्वामी सारो हो मोरा वांछित काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामे सुखसंपदा, तुम नामे हो दुःख जावे दूर। तुम नामे वांछित फले, तुम नामे हो मुझ आणंदपूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ (कलश)—इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चौवीसमो, शासनाधीश्वर सिंहलंछन सेवतां सुरतरु समो। जिणचन्द त्रिशला-

मात नन्दन सकलचन्द कलानीलो, वाचनाचारिज समयसुन्दर संथुण्यो त्रिभुवनतिलो ॥ वी० ॥ १९ ॥ इति ॥

पूर्णिमाका स्तवन ।

श्रीसिद्धाचल मंडण स्वामीरे, जगजीवन अंतरजामीरे । एतो प्रणमुं हुं शिरनामी, जात्रीडा जात्रा नवाणुं करियेरे—एतो करिये तो भवजल तरिये ॥ जा० ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेश्वर रायारे, जिहां पूर्व नवाणुं आयारे । प्रभु समवसर्या सुखदाया ॥ जा० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन वखाणुंरे, पांचकोडीसुं पुंडरीक जाणुंरे । जै पाम्या पद निरवाणुं ॥ जा० ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख साते रे, बे बे कोडी साधु संघातेरे । एतो पहोता पद लोकांते ॥ जा० ॥ ४ ॥ काति पूनमें कर्मने तोडीरे, जिहां सिद्धा मुनि दश कोडीरे । ते तो वंदो बे कर जोडी ॥ जा० ॥५॥ इम भरतेसरने पाटेरे, असंख्याता मुनि थीर थाटेरे । पाम्या मुगति रमणी ए वाटे ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवाररे, थावच्चासुत सुखकाररे । सयपंच सैलग अणगार ॥ जा० ॥ ७ ॥ वली देवकी सुत सुजगीसरे, सिद्धा वहु जादव वंशरे । ते प्रणमुं रे मन हंस ॥ जा० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव एणे गिरि आयारे, सिद्धा नव नारद ऋषि रायारे । वली सांब पद्युम्न कहाया ॥ जा० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंतरे, जिहां साधु सिद्धा अनन्तरे । इम भाषे श्रीभगवंत ॥ जा० ॥ १० ॥ उज्वल गिरि समो नहीं कोयरे, तीरथ सघला मैं जोयरे । जे फरस्यां पावन होय ॥ जा० ॥ ११ ॥ एकल आहारी सचित्त परिहारीरे, पदचारी ने भूमिसंथारीरे । शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ जा० ॥ १२ ॥ एम छहरी जे नर पालेरे, वहु दान सुपात्रे आलेरे । ते जनम मरण भय

टाले ॥ जा० ॥१३॥ धन धन ते नर ने नारीरे, भेटे विमलाचल एक तारीरे। जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जा० ॥१४॥ श्री जिनचन्दसूरि सुपसायेरे, जिनहर्ष हिए हुलसायेरे। इम विमलाचल गुण गाये ॥ जा० ॥ १५ ॥ इति ॥

दादा श्रीजिनदत्तसूरिजीका स्तवन।

सिरि सुयदेव पसाय करी, गुरु श्रीजिनदत्तसूरि। वंदि सूरवर-तर गच्छरयण, सूरि जेम गुणपूरि ॥ १ ॥ संवत इग्यारइ वरसइ, बत्ती-सइ जसु जम्म। वाछिग मंत्रि पिता जणणी, वाहडदेव सुरम्म ॥ २ ॥ इकतालइ जिणवइ गहिय, गुणहत्तरइ जसु पाटि। वइसाखा वदि छट्ठि दिणि, पय पणमी सुरथाटि ॥ ३ ॥ अंबड सावइ कर लिहिय, सोवन अक्षर अंब। जुगप्पहाण जगि पयदीयउए, सिरि सोहमपडिबिंब ॥ ४ ॥ जिणि चउसट्ठि जोगिण जणिय, खित्तवाल बावन्न। साइणि डाइणि विज्जुलिय, पुहवइ नामि न अन्न ॥ ५ ॥ सूरिमन्त बल करि सहिय, साहिय जिण धरणिंद। सावय साविय लक्ख इग, पडिबो-हिय जिणबिंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि दुट्ठदल, चउविह देव निकाय। आण न लोपइ कोई जगह, जसु पणमइ नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यार समइ, अजयमेर पुरि ठाणि। इग्यारिसि आसाढ सुदि, सग्गि-पति सुह झाणि ॥ ८ ॥ श्रीजिनवल्लहसूरि पए, श्रीजिणदत्त मुणिंद। विग्घहरण मङ्गल करण, करउ पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ इति ॥

दादा श्री जिनकुशलसूरिजीका स्तवन।

रिसभ जिणेसर सो जयो, मंगलकेलि निवास। वासव वंदियपय-कमल, जग सहु पूरइ आस ॥ १ ॥ (चउपइ)—चंदकुलं वर पूनिम

चंद, वंदउ श्री जिनकुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरइ तसु पूरे आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गांम, धण कण कंचन अति अभिराम । जिहां वसइ जिल्हागर मंत्रि, जइतसिरी तसु घरणी कलत्रि ॥ ३ ॥ जसु तेरेसइ तीसइ जम्म, सइतालइ सिर संयम रम्म । पाटण सतहत्तरइ जसु पाट, निव्यासिई तसु सुरगइ वाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सुरगइ पायाल, अचिराचिर जुग इण कलिकाल । प्रभु प्रताप नवि मानइ सोय, मइ नवि नयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहइ धन धन्न सुवन्न, पुत्रहीण पामइ बहु पुन्न । असुखी पामइ सुख संतान, एकमनइ करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ प्रभु समरण आपद् सहु टलइ, सयल शांति सुख संपत्ति मिलइ । आधि व्याधि चिंता संताप, ते छंडी नवि मंडइ व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागे तिहां प्रभु दरसण उत्कंठा जिहां । सेवंतां सुरतरुनी छाहि, निश्चय दालिद्र मेटइ बांहि ॥ ८ ॥ विसहर विसनर विसनरनाह, भूत प्रेत ग्रह व्यन्तर राह । प्रभु नामइ जे न करइ पीड, भाजइ भावढ भवभय भीड ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासइ दूर, अंधकार जिम उगइ सूर । मूरख फीटी पंडित थाय, प्रभु पसाय दुःख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिनशासन उद्योत, तिहा अच्छइ भव-सायर पोत । सो सद्गुरु मइ मेटउ आज, रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ (ढाल)—आज घर आंगण सुरतरु फलियो, चिंतामणि कर कमले मिलियो । उदयो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दिह मइ धन्ने गिणियो, जुगपवरागम जो मइ थुणियो । चंद्रगच्छ महिमानी लोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवीपति सेवा, कांई मनावो

देवी देवा । चिंता आणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवित भणो जइ, श्री जिनकुशलसूरि समरिजइ । सरइ काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत चउद इक्यासी वरसइ, मुलक वाहणपुरमें मन हरसइ । अजिय जिणेसर वरभवइ ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण, विघन हरण सहु पाप निवारण, कोई मत संसो धरो मनइ ॥ १७ ॥ जिम जिम सेवइ सुर नर राया, श्री जिनकुशल मुनीसर पाया । जयसागर उवज्झाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सद्गुरु गुण अभि नंदइ, ऋद्धि समृद्धि सो चिर नंदइ । मनवंछित फल मुझ हुवो ए॥ १९ ॥ इति ॥

गुरुदेव श्रीजिनदत्तसूरिजीका स्तवन ।

श्री जिनदत्तसुरिंदा, परम गुरु श्री जिनदत्त सूरिंदा । परम दयाल दया कर दीजे, दरिसन परम आणंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ १ ॥ जंगम सुरतरु वंछित दायक, सेवक जन सुखकंदा । सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुःख दंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ २ ॥ निजपद सेवक सांनिध्यकारी, राखीये गुरु रोजिंदा । कर जोडी विनय युत विनवे, श्री जिनहरखसूरिंदा ॥ प० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

गुरुदेव श्रीजिनकुशलसूरिजीका स्तवन ।

कुशल गुरु अब मोहि दरिसण दीजे ॥ अ० ॥ ऐसी भांति करो मेरे सद्गुरु, ज्युं मन मूढ पतीजे ॥ कु० ॥ १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलि भर पीजे । सुरतरु सम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीझें ॥ कु० ॥ २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजे । परम भगत जिनराज तुम्हारो, अपनो कर जाणीजे ॥ कु० ॥ ३ ॥

दादा गुरुका सवइया ।

बावन वीर किये अपणे वस, चौसठ जोगण पाय लगाई, डाइण साइण व्यंतर खेचर, भूतरु प्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तडक्क, कडक्क, भटक्क, अटक्क रहे जु खटक्क न काई । कहे धर्मसिंह लंघे कुण लीह, दीये जिनदत्त की एह दुहाई ॥ १ ॥ राजे थुंभ ठोर ठोर एसो देव नहीं ओर, दादो दादो नामतें जगत्र जस्स गायो है । अपणे ही भाय आय पूजे लख लोक पाय, प्यासनकूं रान मांझ पानी आन पायो है ॥ वाट घाट शत्रु थाट हाट पुरपाटणमें, देह गहे नेहसुं कुशल वरतायो है । धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कुशल करे, साचो श्रीजिनकुशल गुरु नाम युं कहायो है ॥ २ ॥

॥ श्री गौडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवनम् ।

(दूहा)—वाणी ब्रह्मवादिनी, जागै जग विख्यात । पास तणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगै अणहिलपुरै अहमदाबादै पास । गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, मुहुरत एकमंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

(ढाल)—गुणहि विशाला मंगलिक माला, वामनो सुत साचोजी । धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचौजी (गु०) ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरक तणें घर हुंती जी । अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी (गु०) ॥ ५ ॥ जागंतो जक्ष जेहने कहिये, सुहणो तुरकनैं आपै जी । पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक

तुज संतापै जी (गु०) ॥ ६ ॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी । अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टकापांचसै लेजे जी ॥ गु० ॥ ७ ॥ नहि आपीस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लच्छी घणी घर जास्यै जी ॥ गु० ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै, सारथवाह जे गोठी जी । निलवट टीलो चोखा चेढ्या, वस्तु वहे तसु पोठी जी ॥ गु० ॥ ९ ॥

(दूहा)—मनसुं बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण । बीबीनें सुहणा तणो, संभलावै सही नाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वडा देव है कोय । अब सताव परगट करो, नही तरमारै सोय ॥११॥ पाछली रात परोडीयै, पहेली बांधै पाज । सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्षराज ॥ १२ ॥

(ढाल)—एम कहीं जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणै जी । पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, ले तो सिर मत धूणे जी ॥ एम० ॥ १३ ॥ पांचसै टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी । जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारै जी ॥ एम० ॥ १४ ॥ तुझने होसी वहु फलदायक, भाई गोठी सुणजे जी । पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुंतो जी । पाटण मांहे सारथवाहु, हींडै तुरकने जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडै जी । संकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावै वहु लाडै जी

॥ ए० ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझनैं आपुं, पास जिणेसर केरी जी । पांचसै टकाजो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंजै जी । केसर चंदन मृग-मद घोली, विधिसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी रुडी रुनी कीधी, तेमांहिं प्रतिमा राखै जी । अनुक्रम आव्या परिकर माहें, श्रीसंघ ने सुर साखै जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उच्छव दिन दिन अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी । ठाम ठामना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

(दूहा)—इक दिन देखै अवधिसुं परिकरपुरनो भङ्ग । जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग ॥ २२ ॥ सुहणो अपै सेठने, थल अटवी उज्जाड । महिमा थास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहां अछे, तुझनें मुझने जाणि । संकां छोडी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥

(ढाल)—पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक वृषभ जोतरै । परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥ २५ ॥ वारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चाले तेतलै । गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावुं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसै पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवे इहां । चिन्ता-

तुर थयो निद्रा लहै, यक्षराज आवीने कहै ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां । स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, पाहण तणि उल्लटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जुओ, अमृत जल नीसरसी कूओ । खारा कुंवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छैं नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै, कोढ पराभवियो किसमिसे । तिहां थकी तूं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो । रोग गमीने पुरूं आस, पास, तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुवा, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवै सूरमो, जिमें खीर खांड घृत चूरमो । घडैं घाट करैं कोरणी, लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ थंभ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली । रंगमंडप रलियामणो रचै, जोतां मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मंढे आवास । दिवस विचारी इंडो घड्यो, ततखिण देवल उपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पद्मासण वेठा श्रीपास । महिमा मोटी मेरुसमान, एकलमिल वगडे रहैवान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मैं सांभली, स्तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परणे पछै ॥ ३८ ॥

(दोहा)—विघन विडारन यक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप । प्रीत करे श्री संघने, देखाडै निज रूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गोडी

पास जिन, आपे अरथ भंडार । सांनिध करै श्री संघने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणै नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥

(ढाल)—चरण अढार तणो लहै भोग, विघन नवारे टालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप, टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने धरी धननो सुत, आपै अपुत्रीयाने पुत्र । कायरने सूरापण धरै, पार उतारै लच्छी वरै ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपै पग । ठाम नहीं तेहने द्यैं ठाम, मनवंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधारने द्ये आधार, भवसागर उतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समर्यां सहाय दीयै यक्षराज, तेहना मोटा अछै दिवाज । बुद्धिहीण ने बुद्धिप्रकाश, गूंगाने दे वचन-विलास ॥ ४६ ॥ दुःखियाने सुखनो दातार, भयभंजण रंजण अवतार । बंधन तूटे बेडी तणा, श्रीपार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥

(दूहा)—श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्ति जूथ दूरे टलै, दुर्द्धर सिंह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय चुकवे, विष अमृत उडकार । विषधरनो विष ऊतरे, संग्रामे जय जय कार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुःख, दोहग दूर पलाय । परमेसर श्री पासनो, महिमामन्त्र जपाय ॥ ५० ॥

(कडाखानी चाल)—उंजितु उंजितु उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री पार्श्व अक्षर जपंतै । भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा, उपसमे वार इक्वीस गुणंते (उं०) ॥ ५१ ॥ दुर्द्धरा रोग

सोगा जरा जंतने, ताव एकान्तरा दुत्तपंते । गर्भबन्धन त्रणं सर्प विच्छू विषं, चालिका बालमेवा झखंते (उं०) ॥ ५२ ॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते । दाढ उंदर-तणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते (उं०) ॥ ५३ ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती, वाट आघाट अटवी अटंते । लखमी लोंदु मिलै सुजस वेला उलै, सयल आस्या फलै मन हसंते (उं०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीडा टलै, उत्तरै सूल सीसग भणंते । वदत वर प्रीतसूं प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्तै (उं०) ॥ ५५ ॥ (कलश –) तपगच्छनायक सुखदायक श्री विजयसेन सूरीश्वरो तसपाट उदयाचले उदयो विजयदेव सुहंकरो । इमथुण्यो गोडी-पास जिनवर प्रीतिविमल जय करो, भणे गुणे, भणे गणे भाविक शुद्ध भावे तस घर मंगल जय करो ॥ ५६ ॥ समाप्त ॥

तावका छंद ॥

ॐ नमो आनंदपुर, अजयपाल राजान । माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपानिधान ॥ १ ॥ सात रूप शक्ते हुवो, करवा खेल जगत । नाम धरावी जूजूवा, पसर्यो तुं इत उत ॥ २ ॥ एकांतरो वेलांतरो, तीओ चोथो नाम । सीत उष्ण विषमज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

छंद मालदाम ।

ए साते तुज नाम सुरंगा, जपतां पूरे कोडि उमंगा । ते नाम्या

जे जालिमजुंगा, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे भूपति सवि रंका, त्रिभुवनमें वाजें तुज डंका । माने नहिं तु केहने निशंका, तुं तूटो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडें । दुष्ट धिष्टना कंधर तोडें, नमि चाले तेहने तुं छोडें ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, डाह्याने जिम तिम वहेकावे । पहेलो तुं कडिमांथी आवे, सौ सीरख पन सीत न जावे ॥ ७ ॥ ही ही हुं हुं कार करावें, पांसलियां हाडां करडावें । ऊनाले पण अमल जगावें, तापे पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आसो कार्तिकमां तुज जोरो, हठ्यो न माने धागो दोरो । देश विदेश पडावें सोरो, करे सवल तुं तातो दोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीना हाडां भांजे, पापीने तोते कर पंजे । भगतवच्छल भक्तं जो रंजे, तो सेवकने कोई न गंजे ॥१०॥ फोडे तुं डक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा माने हाकं । धमके धुंसड धीसड धाकं, चडतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुण पछाडण नहिं को तो थीं, तुज जस वोल्या जाय न कोथी । सीअण विलंब करो ए थोथीं, महिर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ भगत थकी एवडी कां खेडो, अवल अमीना छांटा रेडो । राखो भगतनो ए निवेडो, महाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥ लाजवसो मा अजया राणी, गुरु आणा मानो गुणखाणी । घरे सीधावो करुणा आणी, कहुं छुं नाके लीटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित, ए छन्द जे पढसे तेहने ताव कदि नहिं चढसे । कान्ति कमला देहे नीरोगं, लहेसे नवला लीला भोगं ॥ १५ ॥

कलश ।

ॐ नमो धरी आदि बीज, गुरु नाम वदीजे । आनंदपुर अवनीश,

अजयपाल आखीजे ॥ अजया जात अठार, वांचई साते वेटा । जपतां एही ज जाप, भगतसुं न करे मेटा ॥ उतरें अंग चढीय, पलमें तारी वयणे मुदा । कहे कान्ति रोग नावे कदे सारमंत्र गणीये सदा ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ चार शरणा ॥

मुजने चार शरणा होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधुजी; केवली धर्म प्रकाशीयो, रत्नत्रया अमुख लाधोजी ॥ मु० ॥ १ ॥ चउगति दुःख छेदवा, समरथ शरणां चारोजी; पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेणे कीधां शरणा तेहोजी ॥ मु० ॥ २ ॥ संसारमांही जीवने, समरथ शरणां चारोजी; गणिसमयसुंदर एम कहे, कल्याण मंगलकारीजी ॥ मु० ॥३॥ लाख चोराशी जीव खमावीए, मन धरी परम विवेकजी; मिच्छा मि दुक्कडं दीजिए, जिनवचने लहीए टेकीजी ॥ ला० ॥ ४ ॥ सात लाख भु-दग-तेउ-वाउना, दश चौद वनना भेदोजी; षट् विगल सुर तिरी नारकी, चउ चउ चउदे नरना भेदोजी ॥ ला० ॥ ५ ॥ माहरे वैर नहीं छे कोइसुं, सउसुं मित्र संभावोजी; गणि-समयसुंदर एम कहे, पामीए पुण्य प्रभावोजी ॥ ला० ॥ ६ ॥ पाप अढारे जीव परिहरे, अरिहंत सिद्धनी साखेजी; आलोव्या पाप छुटीए, भगवंत एणी परे भाखेजी ॥ पा० ॥ ७ ॥ आश्रव कषाय दोय बंधना, वलि कलह अभ्याख्यानजी, रति अरति पैशुन निंदना, माया मोह मिथ्या तजी ॥ पा० ॥ ८ ॥ मन वचन कायाए जे कर्यां, मिच्छा मि दुक्कडं ते होजोजी; गणिसमयसुंदर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहोजी ॥ पा० ॥९॥ धन धन ते दिन मुज कदि होस्ये, हुं पामीश

सण तेह ॥ कृ० ॥ १० ॥ आप परूप्यो आकरोजी, जाणे लोक महन्त । पिण न करूं परमादीयोजी, मासाहस दृष्टान्त ॥ कृ० ॥ ११ ॥ काल अनन्ते मैं लह्याजी, तीन रतन श्रीकार । पिण परमादे पाडियाजी, किहां जई करूं पुकार ॥ कृ० ॥ १२ ॥ जाणुं उत्कृष्टो करूं जी, उद्यत करूं रे विहार । धीरज जीव धरे नहींजी, पोते वहु संसार ॥ कृ० ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरोजी, न गमे रूडी वात । परनिंदा करतां थकांजी, जावे दिन ने रात ॥ कृ० ॥ १४ ॥ किरिया करता दोहिलीजी, आलस आणे जीव । धरम पखे धंधे पड्योजी । नरके करस्ये रीव ॥ कृ० ॥ १५ ॥ अणहुंतां गुण को कहेजी, तो हरखुं निशदिन ॥ कोइ हितशिक्षा भली कहेजी, तो मन आणुं रीश ॥ कृ० ॥ १६ ॥ वाद भणी विद्या भणीजी, पररञ्जण उपदेश । मन संवेग धर्यो नहींजी, किम संसार तरेश ? ॥ कृ० ॥ १७ ॥ सूत्र-सिद्धान्त वखाणतांजी, सुणतां करमविपाक । खिण एक मनमांहि ऊपजेजी, मुझ मरकट वैराग ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविध त्रिविध करी ऊचरुंजी । भगवन्त तुम्ह हजूर । वारवार भांजुं वलीजी, छुटक वारो दूर ॥ कृ० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतांजी, कीधा आरम्भ कोड़ ॥ जयणा न करी जीवनीजी । देव दयापर छोड़ ॥ कृ० ॥२०॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दण्ड । कूड़ कपट वहु केलवीजी, व्रत कीधा शतखंड ॥ कृ० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे, तृणोजी, तेही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणाजी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कृ० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं जी, राचे रमणी रूप । काम विटंवण सी कहुंजी, ते तूं जाणे स्वरूप ॥ कृ० ॥ २३ ॥ माया

ममता में पड्योजी, कीधो अधिको लोभ । परिग्रह मेल्यो कारमोजी, न चढी संयम शोभ ॥ कृ० ॥ २४ ॥ लागा मुझने लालचेजी, रात्रिभोजन दोष । मैं मन मूक्यो माहरोजी, न धर्यो धरम संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण भव परभव दूहव्याजी, जीव चौराशी लाख । ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडंजी, भगवंत तोरी साख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पन्नरे कह्यांजी, प्रगट अठारे पाप । जे मैं कीधां ते सहुजी, वगश २ माई माप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुझ आधार छे एटलोजी, सद्दहणा छै शुद्ध । जिनधर्म मीठो जगतमैंजी, जिम साकर ने दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ ऋषभदेव तूं राजीयोजी, सेत्रुंजगिरि सिणगार । पाप आलोया आपणांजी, कर प्रभु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनोजी, पाप आलोयां जाय । मनसुं मिच्छा मि दुक्कडंजी, देतां दूर पूलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणीजी, तूं साहिब तूं देव । आण धरूं सिर ताहरीजी, भव भव ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥ (कलश)–इम चढीय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभिनंदन जिन तणा, कर जोडी आदि जिणंद आगे पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणे, गणि सकलचन्द सुशिष्य वाचक समयसुंदर गणि भणे ॥ कृ० ॥ ३२ ॥ इति ॥

पद्मावती–आलोयण ।

हिवे राणी पदमावती, जीवराशि खमावे । जाणपणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ मिच्छा मि दुक्कडं, अरिहंतनी साख । जे मैं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवी तणां, साते अप्काय । सात लाख तेऊकायना, साते वली

वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधारण। बी ती चउरिंद्रिय जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकासी। चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चउरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण भव परभव सेवियां, जे पाप अढार। त्रिविध २ करी परिहरूं, दुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद। दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष। मान माया लोभ मैं किया, वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्यां, दीना कूडा कलंक। निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते० ॥९॥ चाडी खाधी चोतरे, कीधो थापणमोसो। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे मैं किया, जीवना वध-घात। चिडिमार भवे चिडकलां, मार्या दिन रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर भवे माछलां, झाल्या जलवास। धीवर भील कोली भवे, मृग मार्या पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर। जीव अनेक जबै किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे मैं किया, आकरा कर दंड। बंदीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुक्ख। छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंभारने भवे मैं किया, निम्माह पचाव्या। तेली भव तिल पीलिया, पापे पेट भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने भव हल खेडिया, फाड्यां पृथिवीना पेट। सूड निदाण घणां कियां, दीधां बलध चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भवे रोपियां, नानाविध वृक्ष।

मूल पत्र फल फूलनां, लाग्या पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधोवाइ-याने भवे, भर्या अधिका भार । पोठी उँट कीडा पड्या, दया नावी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतर्यो, कीधां रांगणि पास । अग्नि आरंभ किया घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर पणे रण झूंझता, मार्या माणस वृंद । मदिरा मांस भक्ष्या घणां, खाधा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी ऊलंच्या । आरंभ कीधा अतिघणां, पोते पापज संच्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ अंगार-कर्म किया वली, धरमे दव दीधां । सम लेई वीतरागना, कूडा कोशज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर लिया, गीलोई हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे, मैं जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भांड़भूंजा तणे भवे, एकेन्द्रिय जीव । ज्वारी चिणा गहुं सेकियां, पाडन्ता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक । रांधण इंधण आगिना, किया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पंच प्रमाद । इष्ट वियोग पाड्या किया, रोदन विषवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणां, व्रत लेई भांग्यां, मूल अने उत्तरतणा, दूषण मुझ लाग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विच्छू सिंह चीतरा, शिकरा ने शमली । हिंसक जीवतणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवडी दूषण घणां, वली गरभ गलाव्यां । जीवाणी ढोल्यां घणां, शीलव्रत भंजाव्यां ॥ ते० ॥ ३० ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीया कुटुम्ब संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणभव परभव इण परे, कीधां पाप अखत्र । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरूं, करूं जन्म

पवित्र ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वैराडी जे सुणे, ए त्रीजी ढाल । समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें, ध्यान धरुं पल पलमें ॥ पास जिणेसर अन्तरजामी, सेव करुं छिन छिनमें ॥ तु० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीशुं राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु तुमहीशुं राच्यो; ज्युं चातक चित्त घनमें ॥ तुं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जाणे, अलख निरंजन च्छिनमें ॥ कनककीर्त्ति सुखसागर तुमही, साहिब तीन भुवनमें ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ निर्वाणकल्याणकस्तवनम् ॥

मारगदेशक मोक्षनो रे, केवलज्ञान निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभुसिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे । हिव इण भरतमां, कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहुणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहुणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहुणां बाल ज्युं रे, अरहांपरहां अथडाय ॥ वीर विहुणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ? ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण किम रहिवाय रे? ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सत्थवाह ॥ ते परमेसर विण मिल्यांरे, किम वाधे उस्साहो रे? ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुततणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण काले सवि

जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भविजना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुने इण परसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणकस्तवनम् ॥

श्रावककी करणी ॥

(चौपाई)

श्रावक तूं उठे परभात । चार घड़ी ले पिछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार । जिम पामे भवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म । कवण अमारुं छे कुलकर्म ॥ कवण अमारो छे व्यवसाय । एवुं चिन्तवजे मनमांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध । धर्मनी हियडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणीतणुं । पातक आलोए आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ति करे पच्चक्खाण ॥ सूधी पाले जिनवर आण ॥ भणजे गुणजे स्तवन सज्झाय । जिण हुंति निस्तारो थाय ॥४॥ चितारे नित चऊदे नेम । पाले दया जीवता सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव । द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोशाले गुरुवन्दन जाय । सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजतो आहार । साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ सामिवत्सल करजे घणां । सगपण महोटा साहमीतणां ॥ दुःखिया हीणा दीना देख । करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारे देजे दान । महोटासुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी । धर्म न मूकीश एके घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार । ओछा अधिकानो परिहार ॥ म भरीश केनी कूड़ी साख । कूड़ा जनसुं कथन म भाख ॥ ९ ॥ अनन्तकास कहीये

बत्रीस। अभक्ष्य बावीसे विसवावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजे किमे। काचां कंवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिभोजनना बहु दोष। जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली। मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास। दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार। अणगल पीतां दोष अपार ॥ जीवाणीना करजे यत्न। पातक छंडी करजे पुण्य ॥ छाणा इंधण चूलो जोय। वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परे वावरजे नीर। अणगल नीर म धोईश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सुधूं पालजे। अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान। पापतणी परिहरजे खाण ॥ कशुं म लेजे अनरथदंड। मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हियडे राखजे। बोल विचारीने भाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंभ। पालो शीयल तजो मन दम्भ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दही। ऊघाडा मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त। परउपकार करो शुभचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चौविहार। चारे आहारतणो परिहार ॥ दिवसतणां आलोए पाप। जिम भांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक सांचवे। जिनवर चरण शरण भव भवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय। सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा। तीरथ शत्रुञ्जे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार। भेटीश हुं धन धन अवतार ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी छे एह। एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पड़े पातला। पापतणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहिये अमर विमान। अनुक्रमे पामे शिवपुर धाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह। करणी दुःखहरणी छे एह ॥२२॥ इति ॥

जैनतिथि मन्तव्य ।

पूज्यपाद श्रीमद् हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजकृत तत्त्वतरंगिणी ग्रन्थका तथा श्रीउमास्वातिजी महाराज कृत आचारवल्लभादि ग्रन्थोंका यह फरमान है:—

तिहि पड़णे पुव्वा तिहि । कायव्वा जुत्त धम्म कज्जेव ॥
चाउद्दसी विलोवे । पुण्णमिअं पक्खिपडिक्कमणं ॥ १ ॥

अर्थः—तिथिका क्षय हो तो पूर्व तिथिमें धर्मकार्थ करना युक्त है, चौदसका क्षय हो तो पूर्णिमाको पक्खी प्रतिक्रमण करना चाहिये ।

व्याख्या—तिथि मात्रमेंसे कोई तिथिका क्षय हो तो उस तिथि सम्बन्धी धर्मकृत्य उसकी पूर्वतिथिमें करना योग्य है; परन्तु यदि चतुर्दशीका क्षय हो तो पूर्णिमा या अमावास्यामें पाक्षिक प्रतिक्रमण करना चाहिये, कारण कि समीपमें रही हुई पर्वतिथि (पूर्णिमा-अमावस्या) को छोड़ कर अपर्वतिथिमें पर्वतिथिका आराधन करना युक्त नहीं है ।

आशंका—कदाचित यहांपर कोई महानुभाव यह प्रश्न करे, कि यदि पर्वतिथिका आराधन अपर्वतिथिमें नहीं करना तो अष्टमी आदिके क्षय होनेपर तत्सम्बन्धी धर्मकृत्य सप्तमी आदिको करना कैसे उचित हो सकेगा ?

उत्तरः— प्रिय सज्जनवरों ! हमको पर्वतिथिका कृत्य पर्वतिथिमें ही इष्ट है; परन्तु अनन्तर पर्वतिथिका योग न होनेसे पूर्वमें रही हुई सप्तमी आदिमें ही करना योग्य है; मगर नौमी आदिमें करना उचित नहीं ।

पर्वतिथिका क्षय हो तो समीपमें रही हुई पर्वतिथिमें तत्संबंधी धर्मकृत्य करना इस ही नियमके अनुसार होता है। सांवत्सरिक पर्वकी चौथका क्षय हो तो पंचमीको सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करना मगर तीजको नहीं, यह ब्यान क्षयतिथिसंबंधी हुवा।

तिहि वुड्डीए पुव्वा गहिया। पडिपुन्नभोगसंजुत्ता॥
इयरा वि माणणिज्जा। परं थोवात्ति न तत्तुल्ला॥ १॥

तिथिकी वृद्धि हो तो पूर्वतिथिमें धर्मकृत्य करना उचित है, दूसरी तिथि भी पर्वरूप मानी जाती है; परन्तु अल्परूपमें न तु पूर्व सदृश।

व्याख्या—पन्द्रह तिथियोंमें कोई तिथि वढ़े तो उस सम्बन्धि धर्मकृत्य पूर्व तिथिमें करना; कारण कि समीपकी पर्वतिथिको छोड़कर दूरवर्तिनी पर्वतिथिको ग्रहण करना यह तत्त्वदृष्टिसे अमान्य है।

आशंका—कोई महोदय यहांपर ऐसा आशंका करे, कि सूर्योदय तिथि अपनेको मान्य है, फिर दूसरी माननेमें क्या बाधा है?

उत्तरः—जिज्ञासु महाशयों! आप स्वयं विचार कर सकते हैं, कि सूर्योदय व अस्त दोनों टाइममें रही हुई पूर्ण तिथिको छोड़ कर अल्प समयवर्तिनी द्वितीय तिथिको मानना कहांतक ठीक हो सकता है? पण्डित जन विचारें।

(विशेष विचार)

मास प्रतिबद्ध जितने पर्व हैं वे सब मासकी वृद्धिमें कृष्णपक्ष संबन्धि प्रथम मासमें व शुक्लपक्ष संबन्धि द्वितीय मासमें आराधन करना चाहिये; यह शास्त्रसम्मत व वृद्धपरंपरानुसार मान्य है।

पर्युषणपर्व दिनप्रतिबद्ध होनेसे आषाढ चौमासीसे पचासवें दिन करना ही शास्त्रसम्मत व युक्तियुक्त है। इति॥

सूतक-विचार।

पुत्र जन्महोनेसे दिन १० दस सूतक। पुत्री जन्म होनेसे दिवस ११ ग्यारह सूतक। जिस स्त्रीके पुत्रपुत्री हो उसके एक महिने तक सूतक। गाय, भैंस, घोड़ी सांढ आदि अपने घरमें व्यावें तो दिन एक सूतक। अपने निश्राइमें रहे हुवे दास-दासीके पुत्र पौत्रादिका जन्म व मरण हो तो दिन ३ तीन सूतक। जितने महीनेका गर्भ गिरे उतने दिनका सूतक।

मृत्यु होनेसे दिन १२ वारह सूतक। पुत्र होते ही मृत्यु पावे तो दिन १ एक सूतक। परदेशमें मृत्यु हो तो दिन १ एक सूतक गाय-भैंस-घोडा-उंट विगेरहका मृतक कलेवर जहांतक वाहर नहीं लेजाय तहांतक सूतक।

जिसके जन्म मरणका सूतक हो वे वारह दिन देवपूजा न करें। मृतकके घरका जो मूल खांधिया हो वह १० दस दिन और अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे॥

जो मृतकको छुआ हो सो चौवीस प्रहर पड़िक्कमण न करे। यदि सदाका अखंड नियम हो तो समता भावसे संवरमें रहे; परन्तु मुखसे नवकार मन्त्रका भी उच्चारण नहीं करे। स्थापनाचार्यजीको हाथ न लगावे॥

जो मृतकको नहीं छुआ हो सो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमणा न करे-अगर किसीको न छुआ हो तो स्नान से शुद्ध होकर सव करे।

भैंसके बच्चा हो तब १५ पन्द्रह दिन पीछे दूध पीना कल्पे। गायके बच्चा हो तब १७ सतरा दिन पीछे दूध पीना कल्पे। बकरीके जब बच्चा हो तब ८ आठ दिन पीछे दूध पीना कल्पे।

ऋतुवती स्त्री चार दिन भांडादिको नहीं छुवे, चार दिन प्रतिक्रमण न करे, पांच दिन देवपूजा न करे।

रोगादिके कारण कोई स्त्रीको तीन दिन पीछे रक्त वहता दिखे तो असज्झाय नहीं, विवेकपूर्वक पवित्र होकर चार पांच दिन पीछे स्थापना पुस्तक छुवे, जिन दर्शन करे, अग्रपूजा करे परन्तु अङ्गपूजा न करे, साधुको पड़िलाभे।

ऋतुमती तपस्या करे सो सफल होती है परन्तु जिनपूजा, प्रतिक्रमणादि क्रिया सफल नहीं होती, ऐसा 'चर्चरी' ग्रन्थमें कहा है।

जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक हों वहां १२ वारह दिन साधु आहार पाणी न वहरे—सूतकवालेके घरके जलसे १२ वारह दिन तक देवपूजा न करे—निशीथ सूत्रके सोलमें उद्देशमें सूतकवालेका घर दुर्गमनीय कहा हैं।

गायके मूत्रमें २४ प्रहर पीछे, भैंसके मूत्रमें १७ प्रहर पीछे, गाडर गधेड़ी घोड़ीके मूत्रमें ८ प्रहर और नरनारीके मूत्रमें अन्तर मुहूर्त्त पीछे संमूर्छिम जीव उत्पन्न होते हैं—विशेष ग्रन्थान्तरसे जानना।

असज्झाय-विचार।

१ धूंआरी पड़े तहांतक असज्झाय।

२ सर्व दिशाओमें लाल छाया तथा रजअरण्य सम्वंधी रज उड़े,

निरंतर पड़े तो तीन दिन उपरान्त असज्झाय ।

३ मेह वर्षते बुदबुदकर हो तो तीन दिन उपरान्त असज्झाय।

४ छोटे छांटे निरन्तर सात दिन उपरान्त वर्षते न रहे तो अ०

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलीवृष्टि जहां तक हो वहांतक असज्झाय और जो रुधिर वृष्टि हो तो अहोरात्र अ० ।

६ बुदबुदा रहित निरन्तर वर्णे तो पांच दिन उपरान्त असज्झाय।

७ चैत्र सुदी ५ से पड़िवा तक असज्झाय - तेरस चौदस पूनम तीन दिन संध्याकाले, अचित्त रज उड़ावणत्थं, चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, इसही प्रकार आशोज मासमें जानना ।

८ दश दिग् दाहमें प्रहर १ एक असज्झाय ।

९ अकाले गाजे तो प्रहर २ दो असज्झाय ।

१० अकाले बीज, उल्कापात हो तो प्रहर १ एक असज्झाय ।

११ शुक्लपक्षमें संध्याकाल, पड़िवा, बीज और तीजकी असज्झाय परन्तु दशवैकालिक गिन सकते हैं।

१२ अकाले मेघ वर्षे तो प्रहर १ एक असज्झाय ।

१३ भूकम्प हो प्रहर ८ आठ असज्झाय ।

१४ चन्द्रग्रहणकी जघन्यसे ८ आठ प्रहर और उत्कृष्टसे १२ प्र०अ०।

१५ सूर्यग्रहणकी जघन्यसे १२ प्रहर उत्कृष्टसे १६ प्र० अ० ।

१६ आषाढ चौमासे पडिक्कमण ठानेसे लेकर प्रहर १२ अ० ।

१७ कार्तिक चौमासे प्रतिक्रमण पीछे पड़िवातक प्रहर १२ अ० ।

१८ जहांतक परस्पर मल्लादि युद्ध हो वहांतक असज्झाय ।

१९ कलह युद्ध जहांतक हो वहांतक असज्झाय ।

२० उपाश्रयके पास स्त्री पुरुषका जहांतक कलह हो वहांतक अ० ।
२१ फाल्गुन चौमासे रज पडिवाके दिन जहांतक धूल उड़े वहांतक अ०।
२२ अपराधीको दण्डादिसे जहांतक मार पड़े तहांतक असज्झाय ।
२३ परचक्रादिका भय हो और जहांतक न उपशमें तहांतक अ० ।
२४ नगरमें प्रधान पुरुष विहड़े तो अहोरात्र असज्झाय ।
२५ उपाश्रयसे सात घरतक कोई पुरुष विहड़े (विनाश हो) तो अ०।
२६ उपाश्रयसे सो हाथ पर्यन्त कोई अनाथादि पुरुष मरा हुवा पड़ा हो तो जहांतक मृतक कलेवर न उठावे तहांतक अ० ।
२७-२८ सो हाथ दूरतक मनुष्यका रुधिर पड़नेसे अहोरात्र असज्झाय - इसही प्रकार तिर्यंचका समझना ।
२९ मनुष्यकी अस्थि, दांत, दाढादि पड़ा हुआ हो तो सो हाथ दूरतक सूत्र पढना कल्पे नहीं ।
३० स्त्रीको ऋतुधर्म आवे तो दिन ३ असज्झाय ।
३१ आर्द्रा नक्षत्रसे स्वातिनक्षत्र पर्यन्त गाज, वीज, मेघ वर्षे तो असज्झाय नहीं ।
३२ पुत्र प्रसवे दिन ७ और पुत्री प्रसवे दिन ८ अ० ।
३३ कालग्रहण विना किये पढना गुणना नहीं, प्रहर १२ अ० ।
३४ वैशाख विदि १ श्रवण विदि १ कार्तिक विदि १ मागसर विदि १ ये चार महा पड़वाकी असज्झाय - सूत्रकी असज्झाय तो प्रहर बारा - विशेष ग्रन्थान्तरसे जानना । ॥ समाप्त ॥

वस्तु काल विचार ।

चावल प्रहर ८, राव प्रहर १२, घेस प्रहर २०, छाश प्रहर

२४, दहीं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवड़ा प्रहर २४, घोलवड़ा प्रहर ४, तल्यावड़ा प्रहर ४, पुड़ी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४ तथा ६, बाजरा उष्ण प्रहर १२, जवार उष्ण प्रहर १२, बाजरीकी खीचडी प्रहर ८, जवारकी खीचडी प्रहर ८, चालकी खीचडी प्रहर ४।

सियाले आटा दिन १०, उन्हाले दिन ८, वरषाले दिन ५, सियाले पक्वान दिन ३०, उन्हाले दिन १५, वरषाले दिन ७, उन्हाले फासुलूण दिन ८, सियाले दिन ५, वरषाले दिन ३, उन्हाले फासु घी दिन ५, सियाले दिन ८, वरषाले दिन ३, उन्हाले उष्ण जल प्रहर ५, सियाले प्रहर ४, वरषाले प्रहर ३,।

सर्व अनाजकी घूघरी पानीमें भिजोइ हुई प्रहर ८, पानीका उसेही घूघरी १८ प्रहर, घी तेलकी तली हुई घूघरी २०-२४ प्रहर, वड़ी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४-६, रायता प्रहर ८, घीकी तली (वस्तु) १६ प्रहर।

इस प्रकार कालसे उपरान्त वस्तु चलित रसवाली हो जाती है, अर्थात् अभक्ष हो जाती है॥ ॥ समाप्त ॥

अथ श्रावकके चौदह नियम॥

"सचित्त दव्व दिगइ, वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु।
वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसिण्हाण भत्तेसु॥"

१ सचित्त-जिसमें जीव-सत्ता हो एसे हरा शाक, फल, फुल, कच्चापानी आदि।

२ द्रव्य-जितनी चीज मुंहमें आवे एसी दाल, चावल, रोटी मिठाई आदिक वस्तुएँ।

३ विगय-सब विगय १० हैं, इनमें से मधु १, मांस २, मक्खन ३, और मदिरा ४ इनका तो सर्वथा त्याग करना चाहिये और षड्रस-घी, तेल, दूध, दही, गुड, और खांड (सक्कर) इनका तथा घीसे बनाई हुई मिठाई वगैरह का प्रमाण रखना।

४ उपानह-जूता, मोजा आदि जो चीज पांव में पहनी जाय।

५ तंबोल-पान, सुपारी, इलायची आदि।

६ वस्त्र-जो पहिनने ओढने में आवे ऐसे वस्त्र और आभूषण आदि।

७ कुसुम-जो सुंघने में आवे ऐसी फूल, इतर आदि वस्तुएँ।

८ वाहन-हाथी, घोडा, बैल, गाडी, मोटर, जहाज आदि किसी प्रकारकी सवारी।

९ शयन-शय्या, बिछौना, पलंग, कुरसी आदि।

१० विलेपन-केशर, चन्दन, सुगंध, तेल आदि जो चीजें शरीर पर लगाई जावे।

११ ब्रह्मचर्य-परस्त्रीका सर्वथा त्याग और अपनी स्त्रीसे भी सूई डोरे के न्यास से तथा बाह्य विनोद का प्रमाण करना।

१२ दिशा-दिशा और विदिशामें लम्बा-चौडा, उंचा-नीचा जानेका माप रखना।

१३ स्नान-नहाने और हाथ पैर धोनेका प्रमाण रखना।

१४ भत्त-अन्न पानी आदि चारों आहारोंमेंसे अपने लिये जितना चाहिये उसका तौल रखना।

छह काय।

१ पृथ्वीकाय—मट्टी, नमक आदि जो खाने व उपभोग में आवे उसका प्रमाण रखना।

२—अप्काय—जो पानी नहाने धोने व पीने के काममें आवे उसका वजन रखना।

३—तेउकाय—चूल्हा, भट्ठी चिराग अंगीठी आदि का प्रमाण करना।

४-वाउकाय—अपने हाथ से व हुकुम से जितने पंखे चलाने में आवे उनकी गिनती रखना।

५-वनस्पतिकाय—हरा शाक फल आदिका वजन और इतनी जाति के खाने का प्रमाण करना।

६-त्रसकाय—त्रस जीवों को मन, वचन काया से जानकर कभी नहीं मारना, अजाण का मिच्छा मि दुक्कडं देना।

तीन कर्म।

१-असि—तलवार, बंदूक, चाकू, कैंची आदि शस्त्र रखनेकी संख्या रखनी।

२-मसि—कागज, कमल, दवात आदिका प्रमाण रखना।

३-कृषि—खेती, वगीचा आदिका प्रमाण करना।

इन नियमों को पालन करने से जीव पापों के बोझ से हल्का रहता है। यह बिना किसी तकलीफके पापोंसे बचनेका एक सरल उपाय है। इन नियमोंको प्रतिदिन स्मरण करनेसे आत्मा परम शांति पद प्राप्त करता है।

चौदह नियम चितारनेवाले श्रावक-श्राविकागण प्रातःकालमें सूर्योदयके समय, और सायंकालमें सूर्यास्तके समय, शुद्ध भूमिपर बैठकर प्रथम तीन नवकार गिनके बाद चौदह नियमोंका चिन्तवन करे। इति

निंदावारक सज्झाय।

निंदा म करजो कोईनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे। परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुण सहु भर्यां रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छूटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्री सीताकी सज्झाय।

झलजलती मिलती घणी रे, झाली झाल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैर अंगार रे ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ धीज करे सीता सती रे लाल ॥ शीलतणे परिमाण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जले रे लाल, पावक पासे आय रे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुरांगना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे सु० ॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछ्यो हुवे रे लाल, सुपनेही नहिं कोय

रे ॥ सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कही पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणे द्रह जलशुं भर्यो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम-वरसा करे रे लाल, एह सती शिरदार रे ॥ सु० ॥ सीतां धीजे उतरी रे लाल, साखभरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियात सहुको थयां रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शील सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सतीतणा रे लाल, नित प्रणमीजे पाय रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

अनाथी ऋषीकी सज्झाय ॥

श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखियो मुनी एकंत ॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंवी नगरी वसे, मुझ पिता परिगल धन्न ॥ परवार पूरें परवरयो हुं, छुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुझ वेदना, उपनी ते न खमाय ॥ मात [illegible] रह्या [illegible] पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ [illegible] म [illegible] छोरडी अबला नार ॥ को[illegible] में स[illegible] सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बह[illegible] बावना चंदन चरचीया, [illegible] वेदना जो मुझ उपशमे, [illegible]

गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते भणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागनो धरम वाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे नग मझार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गुण गावतां, कर्मनी तूटे कोडी ॥ गणि समयसुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोडी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

श्री जंबूद्वीप वा पूनमकी सज्झाय ॥

जंबूद्वीप सोहामणोरे ॥ लाख जोजन परिमाणरे ॥ सुगुण नर पूनम शसि सम जाणियेरे लाल ॥ आकार एह पहिचान रे ॥ सु० ॥ १ ॥ वारि जाउं वाणी जिनतणीरे ॥ ला० ॥ हुं जाउं वार हजाररे ॥ सु० ॥ वीर जिणंदे दाखवीरे ॥ ला० ॥ जंपन्नत्ती मझाररे ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ नवखेत्रे करी सोभतोरे ॥ ला० ॥ भरतादिक मनुहाररे ॥ सु० ॥ कुलगिरि परवत अंतरेरे ॥ ला० ॥ रख्या मर्यादा धाररे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ महाविदेहे विच राजतोरे, ॥ ला० ॥ मेरु सुदर्शन जाणरे ॥ सु० ॥ लाख जोजन ऊंचो कह्यो रे ॥ सु० ॥ गजदंता चार पहिचाणरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ पद्मद्रह गिरिवर सहु-भलारे ॥ ला० ॥ दोयसें गुण सत्तर एहरे ॥ सु० ॥ निवेनदी मोटी कही रे ॥ ला० ॥ वीजी परिवारनी तेहरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कर्मा-भूमीमें मुनिवरारे, क्रोड सहस्स नव जाणरे ॥ सु० ॥ नव कोडी केवली नमुंरे ॥ ला० ॥ उत्कृष्टो परिमाणरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ धर्म ध्याननो जाणिये रे, चोथो भेद अभिरामरे ॥ सु० ॥ रूपचंद्र

ध्यातां थकां रे ॥ ला० ॥ पामे अविचल धामरे ॥ सु० वारि० ॥ ७ ॥ इति ॥ जंबूद्वीपनी वा पूनमनी सज्झाय संपूर्ण ॥

श्री समकितकी सज्झाय ।

समकित नवि लह्युंरे एतो रुल्यो चतुर्गतिमांहे ॥ त्रसथावरकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ॥ तीनकाल सामायिक करतां सुध उपयोग न साध्यो ॥ समकित० ॥ १ ॥ झूठ बोलवाको व्रत लीनो चोरीको पण त्यागी ॥ व्यवहारादिक महानिपुण भयो पण अंतरदृष्टि न जागी ॥ समकित० ॥ २ ॥ उरधभुजा करी उंधो लटके भसमी लगाय धूम गटके ॥ जटाजूट सिर मूंढें जुठो विणसरधा भव भटके ॥ समकित० ॥ ३ ॥ निजपरनारी त्यागज करके ब्रह्मचारी व्रत लीधो ॥ स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नवि सिधो ॥ समकित० ॥ ४ ॥ वाह्य क्रिया सव त्याग परिग्रह, द्रव्यलिंग धर लीनो ॥ देवचंद्र कहे या विध तो हमें वहुतवार कर लीनो ॥ समकित० ॥ ५ ॥ श्री समकितनी सज्झाय संपूर्ण ॥

प्रतिक्रमणकी सज्झाय ।

कर पडिक्कमणो भावशुं, दोय घडी शुभ ज्ञाण ॥ लाल रे ॥ परभव जातां जीवने, संवल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पडिक्कमणुं भावशुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिवोध ॥ ला० ॥ लाख खंडी सोना तणी, दीये दिनप्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर ॥ लाख वरस लगते वली, एम दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो, भलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत

संभारो आपणां, ते भव कर्म निंवार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउस्सग्ग शुभ ध्यानथी, पच्चक्खाण सूधुं विचार ॥ लाल रे ॥ दोय संध्यायें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहियें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निधान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति ॥ प्रतिक्रमण सिज्झाय संपूर्ण ॥

श्री ढंढण ऋषीजीकी सज्झाय ।

ढंढण रिषजीने वंदणा हुं वारी ॥ उत्कृष्टो अणगाररे ॥ हुं वारी लाल ॥ अभिग्रह लीधो एहवो ॥ हुं० ॥ लेस्युं सुद्ध आहाररे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मिलै शुद्ध आहाररे ॥ हुं० ॥ मूल नले अणसूझतो ॥ हुं० ॥ पंजर कीधो गातरे ॥ हुं० ॥२॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमिने ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस आडाररे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें ॥ हुं० ॥ मुझने कहो विचाररे ॥ हुं ॥ ढं० ॥३॥ ढंढण अधिको दाखियो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेमि जिणंदरे ॥ हुं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन जादव कुलचंदरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारें मुनिवर मिल्या ॥ हुं० ॥ वांद्या कृष्णनरेसरे ॥ हुं० ॥ किनही मिथ्यात्वी देखने ॥ हुं० ॥ आण्यो भावविसेसरे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधूजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोदक छै सुद्धरे ॥ हुं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुर्या ॥ हुं० ॥ आया प्रभुजीने पासरे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लब्धै मोदक मिल्या ॥ हुं० ॥ कहोने तुमे कृपालरे ॥ हुं० ॥ लब्धि नही वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्धि निहालरे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ ए लेवा जुगतो नहीं ॥ हुं० ॥ चाल्या परठवा काजरे ॥ हुं० ॥ ईटनी नाहैं जाइनें ॥ हुं० ॥ चूरें

करम समाजरे ॥ हुं० ॥ ८ ॥ ढं० ॥ आणी सूधी भावना, पाम्यो केवल नाणरे ॥ हुं० ॥ ढंढणरिषि मुगतें गया ॥ हुं० ॥ कहे जिनहर्ष सुजाणरे ॥ हुं० ॥ ९ ॥ ढं० ॥ इति ॥

अरणकमुनिकी सज्झाय ॥

अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी । तडकै दाझै सीसोजी । पाय उभरांणारे वेलू परजलै । तन सुकुमाल मुनीसो जी ॥ १ ॥ अ० ॥ मुख कमलाणोरे मालती फूलज्युं । उभो गोखने हेठोजी । खरै दुपहुरैरे दीठो एकलो । मोही माननी मीठोजी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीलीरे नयणे विंधियो । ऋषी थंभ्यो तिण वारो जी । दासीने कहै जाय उतावली । ऋषी तेडी घेर आणो जी ॥ ३ ॥ अ० ॥ पावन कीजै रिषि घर आंगणो । वहिरो मोदक सारो जी । नव जीवन रस काया कांइ दहो । सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रवदनीरे चारित्र चूकव्यो । सुख विलसै दिन रातो जी । इक दिन गोखे रमतो सोगटै । तव दीठी निज मातो जी ॥ ५ ॥ अ० ॥ अरणक अरणक करती माय फिरै । गलियै गलियै मझारो जी । कहिं किण दीठोरे माहरो अरणलो । पूछे लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतरी तिहांथीरे जननी पाय नम्यो । मनमें लाज्यो तिवारोजी । धिग् धिग् पापी रे माहरा जीवने । एहमें अकारज कीधो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सीला उपरै । अरणक अणसण कीधो जी । समयसुंदर कहै धन ते मुनिवरू । मनवंछित फल सीधोजी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति ॥

श्री भरतचक्रवर्त्तिकी सज्झाय ॥

भरतजी मनहीमें वैरागी । मनहीमें वैरागी । भरतजी म० ॥ टेक ॥

सहस बत्तीस मुगटबद्ध राजा । सेवा करै वडभागी । चोसट्ठ सहस अंतेवउर जाके । तोही न हुवा अनुरागी । भरतजी मनहीमें वैरागी ॥ भर० ॥ १ ॥ लाख चोरासी तुरंगम जाके । छन्नुं कोड है पागी । लाख चोरासी गजरथ सोहिये । सुरता धरम सुं लागी ॥ भर० ॥ २ ॥ च्यार कोड मण अन्नज उपडे । लुंण दश लाख मण लागे । तीन कोड गोकूल नित दूझे । एक कोडी हलसागे ॥ भर० ॥ ३ ॥ सहस बत्तीस देस वडभागी । भए सरमके त्यागी । छन्नुं कोड गांमके अधिपति । तोही न हुआ अनुरागी ॥ भर० ॥ ४ ॥ नव निधि रतन चउगडा वाजे । मन चिंता सरव लागी । कनक कीरत मुनिवर वंदतहे । दीजो सुमति में मांगी ॥ भर० ॥ ५ ॥ इति ॥

पद (राग मालकोश ।)

पूरव पुण्य उदय करी चेतन, नीका नरभव पायारे ॥ पू०॥ आंकणी ॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि, दुर्लभ अधिक बतायारे ॥ दश दृष्टांतें दोहिला नरभव, उत्तराध्ययने गायरे ॥ पू० ॥ १ ॥ अवसर पाय विषय रस राचत, तेतो मूढ कहायारे ॥ काग उडावण काज विप्र जिम, डार मणि पछतायारे ॥ पू० ॥ २ ॥ नदी घाल पाखान न्याय कर, अर्द्धवाट तो आयारे ॥ अर्द्ध सुगम आगल रही तिनकूं, जिन कछु मोह घटायारे ॥ पू० ॥ ३ ॥ चेतन चार गतिमें निश्चें, मोक्षद्वार ए कायारे ॥ करत कामना सूर पण याकी, जिनकूं अनर्गल मायारे ॥ पू० ॥ ४ ॥ रोहण गिरि जिम रतनखाण तिम, गुण सहु यामें समायारे ॥ मंहिमा मुखथी वरणत जाकी, सुरपति मन शंकायारे ॥ पृ० ॥ ५ ॥ कल्पवृक्ष सम संयम केरी, अति शीतल जिहां छायारे ॥ चरण

करण गुण धरण महामुनि, मधुकर मन लोभायारे ॥ पू० ॥ ६ ॥ या तन विण तिहुं काल कहो किन, साचा सुख निपजायारे ॥ अवसर पायन मत चूक चिदानंद, सद्गुरु यूं दरसायारे ॥ पू० ॥ ७ ॥ इति ॥

आप स्वभावकी सज्झाय।

आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहना ॥ जगतजीव हे कर्माधीना, अचरिज कच्छुअन लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नही केरा, कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ? ॥ तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी, तुं अविनाशी, अब हे इनकुं विलासी ॥ वपुसंग जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूरि करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आशा सदा निराशा, ए हे जगजनपासा ॥ ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहीक काजी, कबहीक पाजी, कबहीक हुवा अपभ्राजी ॥ कबहीक जगमें कीर्त्ती गाजी, सब पुद्गलकी बाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शुध उपयोग ने समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्मकलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ इति सविधि-पंचप्रतिक्रमणं समाप्तम् ॥

तीर्थंकरों के नाम.	माता नाम.	पिता नाम.	नगर नाम.	लाञ्छन	आयुष्य.	देहमान.
१ ऋषभदेव	मरुदेवी	नाभिराजा	विनिता	वृषभ	८४ लाखपूर्व	५०० धनुष
२ अजितनाथ	विजया	जितशत्रु ,,	अयोध्या	हस्ति	७२ लाख ,,	४५० धनुष
३ संभवनाथ	सेनाराणी	जितारि ,,	सावत्थी	अश्व	६० लाख ,,	४०० धनुष
४ अभिनंदन	सिद्धार्था	संवर ,,	अयोध्या	बन्दर	५० लाख ,,	३५० धनुष
५ सुमतिनाथ	सुमंगला	मेघरथ ,,	अयोध्या	क्रौञ्च	४० लाख ,,	३०० धनुष
६ पद्मप्रभ	सुसीमा	श्रीधर ,,	कौशांबी	कमल	३० लाख ,,	२५० धनुष
७ सुपार्श्वनाथ	पृथ्वी	प्रतिष्ठ ,,	बनारसी	स्वस्तिक	२० लाख ,,	२०० धनुष
८ चंद्रप्रभ	लक्ष्मणा	महासेन ,,	चन्द्रपुरी	चन्द्र	१० लाख ,,	११० धनुष
९ सुविधिनाथ	रामा	सुग्रीव ,,	काकन्दी	मगर	२ लाख ,,	१०० धनुष
१० शीतलनाथ	नन्दा	दृढरथ ,,	भद्दिलपुर	श्रीवत्स	१ लाख ,,	९० धनुष
११ श्रेयांसनाथ	विष्णु	विष्णु ,,	सिंहपुर	गेंडा	८४ लाख वर्ष	८० धनुष

१२ वासुपूज्य	जया	वसुपूज्यराजा	चंपा	भैंसा	७२ लाख वर्ष	७० धनुष
१३ विमलनाथ	श्यामा	कृतवर्मा ,,	कंपिलपुर	वराह	६० लाख ,,	६० धनुष
१४ अनंतनाथ	सुयशा	सिंहसेन ,,	अयोध्या	सिचाना	३० लाख ,,	५० धनुष
१५ धर्मनाथ	सुव्रता	भानु ,,	रत्नपुर	वज्र	१० लाख ,,	४५ धनुष
१६ शांतिनाथ	अचिरा	विश्वसेन ,,	गजपुर	मृग	१ लाख ,,	४० धनुष
१७ कुन्थुनाथ	श्रीराणी	सूरसेन ,,	,,	बकरा	९५ हजार ,,	३५ धनुष
१८ अरनाथ	श्रीदेवी	सुदर्शन ,,	,,	नन्द्यावर्त	८४ हजार ,,	३० धनुष
१९ मल्लिनाथ	प्रभावती	कुम्भ ,,	मिथिला	कलश	५५ हजार ,,	२५ धनुष
२० मुनिसुव्रत	पद्मावती	सुमित्र ,,	राजगृह	कच्छप	३० हजार ,,	२० धनुष
२१ नमिनाथ	विप्रा	विजय ,,	मथुरा	नीलकमल	१० हजार ,,	१५ धनुष
२२ नेमिनाथ	शिवादेवी	समुद्रवि. ,,	शौरिपुर	शंख	१ हजार ,,	१० धनुष
२३ पार्श्वनाथ	वामा	अश्वसेन ,,	बनारसी	नाग	१०० वर्ष	९ हाथ
२४ महावीर	त्रिशला	सिद्धार्थ ,,	क्षत्रियकुंड	सिंह	७२ वर्ष	७ हाथ

श्री मंगल चार।

कीजे मंगल चार, आज घरनाथ पधार्या।
पहले मंगल प्रभुजीने पूजुं, घसी केसर घनसार॥आज.॥
बीजे मंगल अगर उखेवुं, कंठ थवुं फूलहार ॥आज.॥
त्रीजे मंगल आरती उतारूं, घंट बजावुं रणकार॥आज.॥
चोथे मंगल प्रभु गुण गाऊं, नाचुं थइ थइकार ॥आज.॥
"रूपचंद" कहे नाथ निरंजन, चरणकमल बलिहार आज.

॥ इति ॥

कुंभस्थापना-स्तवन।

आज आपे चालो सजनि, श्री जिन-मंदीर जइये।
श्री जिन-मंदिर जइये, वेहनी ठावणा कलशनि करीयेरे॥आज॥टेर॥
निर्लंछन घट राते वर्णे, पक्व सुघाटे लीजे।
तेहना ऊपर आठे मंगल, करतां चित्र लिखी जेरे ॥ आज०॥१॥
तेहनी कंठे डाभ समूलो, ऋद्धि वृद्धि संघाते।
गेवा सूत्रे ताणी बांधे विधि कारक विधि साधे रे ॥ आज०॥२॥
मंत्र सहित स्वस्तिक कुंकुमनो, तेहनी मध्ये कीजे।
पंच रतन ने पुँगी रूपक सम चतुरंस टविजे रे ॥ आज०॥३॥
अठोत्तणशत कूपक जल सूं, महोच्छवनूं जल गेलो।
"वर्धमान सुरीसर" भाखे, तीर्थ जल बहु मेलो रे ॥ आज०॥४॥
ते जल लेई सोहव सुतवंती नवपद मंत्र संभारे।
थिर सासं कुँभक करी जलने, पुरे अक्षय धारे रे ॥ आज०॥५॥

पीताम्बर बहु मूलुं ढाकी, फुल माला पहरावो।
तेनी ऊपर श्रीफल थापो, मंगल गीत गवावोरे ॥ आज०॥६॥

सुन्दर सालनो साथियो पूरी, थापो घट शुभ दिवसे।
चार सरावला जुवारा केरां, थापो चहुँ विधिसे रे ॥ आज०॥७॥

जिन पडी माने जमणी पासे, दीपक युत घट धारो।
कुम्भ चक्र नक्षत्र मलेजो, तो सवि अशु अनि वारो रे ॥आज०॥८॥

स्नात्र अठोत्तरी विंब प्रवेशे, विंब प्रतिष्ठा होवे।
एकरणीमां मंगल रूपी, कुम्भ स्थापन धुरी जोवेरे ॥ आज०॥९॥

दीप अखंड ने धूप त्रिकालें, साते स्मरण गणीये।
हिंसक जिवने स्त्री ऋतुवंती, तास दृष्टी अव गणीयेरे ॥आज०॥१०॥

मल्लीवीर नेमिसर राजुल, तास तवन नवी भणीये।
उपसर्गादिक भावना टाली, मंगल गीतने थुणियेरे ॥आज०॥११॥

नर नारी ने उल्लसित भावे, तांबूलादीक दीजे।
ते दीन थी मांडी ने दस दिन, लघु स्नात्र नित कीजेरे ॥ आज ॥१२॥

खुशालशाहे हरखे कीधी, पहले दिन ये करणी।
करीये विधि योगे जिम वरीये, रंगे जिम शिवधरणी रे ॥आज॥१३॥

॥ इति ॥

नोटः—यह कुँभस्थापना स्तवनप्रतिष्ठा वगैरह में कुंभस्थापना के समय गाने का है श्री रंग विजय जी कृत प्रतिष्ठा कल्प-स्तुन ढाल ३ से उद्धृत है।

॥ अथ प्रभुको पोंखणेका स्तवन ॥

(तर्ज-कव्वाली)

प्रभु को पोंखती भावे, सुहागन नारी हरखावे ।
मनोगत भावना सुन्दर अध्यातम भाव दिखलावे ॥ प्रभु०॥ (टेक)

समय श्री आदि जिन स्वामी, लग्न के देवी इन्द्राणी ।
विधि से पोंखती प्रभु को, चला व्यवहार वो आवे ॥प्रभु॥१॥

उखल मूसल मघानी त्राक, झुंसरी पंचमी कहीये ।
शलाका फेंकती चारों, दिशा में भावना भावे ॥ प्र०॥२॥

उखल मुसल के मिलने से, व्रीही से होत है चांवल ।
गया छिलका मिटा अंकुर, न फिर पैदा कभी थावे ॥ प्र०॥३॥

अनादी जीव कर्मोंके, फंसा है गाढ़ बंधन में ।
क्रिया अरु ज्ञान मिलने से, निजातम रूप को पावे ॥ प्र०॥४॥

मघानी घूमती दधि में, प्रकट करती है माखन को ।
भावना शील तप दाने चिदानंद रूप उपजावे ॥ प्र०॥५॥

त्राक से सुत होता है, सुत से अंग है ढकता ।
शुद्ध मन इंद्रि वस करके, चीर गुण ज्ञान निपजावे ॥ प्र०॥६॥

झुंसरी धार धोरी हो, जगत खेती बचा लेता ।
धरम धोरी बनी आतम, स्वपर आनन्द प्रकटावे ॥ प्र०॥७॥

शलाका समगति चारों में, फिरता दुःख पाता है ।
फेंकती क्रोध, माया, मान, लोभ को फिर न जग आवे ॥प्र०॥८॥

आतमाराम जब प्रगटे, आतमाराम है होता ।
आतम लक्ष्मी प्रभु चेतन "वल्लभ" मन हर्ष नहीं मावे ॥प्र०॥९॥

॥ इति ॥

नोटः—यह स्तवन प्रतिष्ठा के समय बोलना चाहिये ।

॥ श्री आदीश्वर भगवान की आरती ॥

अपछरा करती आरती जिन आगे, हां रे जिन आगे रे जि०;
हां रे ए तो अविचल सुखडां मांगे हां रे नाभिनंदन पास अ० ॥१॥
ता थेइ नाटक नाचती पाय ठमके, हां रे दोय चरणो झांझर झमके,
हां रे सोवन घुंघरी घमके, हां रे लेती फुदड़ी वाल ॥ अ० ॥२॥
ताल मृदंग ने वांसली डफ वीणा, हां रे रुडा गाँवँती स्वर झीणा,
हां रे मधुर सुरासुर नयणा, हां रे जोति मुखड़ुं निहाह अ० ॥ ३ ॥
धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया, हां रे तोरी कँचन वरणी काया,
हां रे मैं तो पूरव पून्ये पाया, हां रे देख्यो तोरो देदार ॥ अ० ॥४॥
प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हां रे प्रभु सेवक छुं हुं तारो,
हां रे भवोभवना दुःखडा वरो, हां रे तुम दीनदयाल ॥ अ० ॥५॥
सेवक जाणी आपनो चित्त धरजो, हां रे मोरी आपदा सघली हरजो,
हां रे "मुनिमाणेक" सुखियो करजो, हां रे जानी पोतानो बाल ॥ अ० ६

यदंघ्रिनामक थुई।

यदंघ्रिनमनादेव, देहिनः संति सुस्थिताः। तस्मै नमोऽस्तु वीराय, सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान्, नाभेयजिनादिजिनपतीन्नौमि। यद्वचनपालनपरा, जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः, सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः। गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे, तदंगिनामस्तु मतं नु मुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैः सह देवताभिः, सर्वज्ञशासनसुखाय समुद्यताभिः। श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान्, भव्यान् जनानवतु नित्यममङ्गलेभ्यः ॥४॥ इति ॥

